न म्मा त्याए राविन मगि कृ वस्य व्रह्मा प नियया कु वा भि सद्वान ग ना ा िन म ॥ सपूर्ध्व वर्याय निगुद्ध वृछि कामय इ श्लो व कृ दृष घ जा ॥ गहि स्मृ र्म त्वा हाि मि वा व षु

यर्के विछन्न युक्त मक्कर्कान ॥ सं गगति तु सं गत या क या व पुरुत्त वदा भे न स म न वे व । व्योदि दं गो कृ कोयर्त गहि ग्रिद्ध छि ष्ठाप त र्म न्द्र लो कं ॥ सृ क्की म य षं

न युस मन गद्यविष्णा न्दं ने वा न यनी गवि क ा पन घ्मन डो कृ तिह्न स्ये रा वा भ्य यवि व व छ्या कम गधा वि व न्द्र ॥ अ वा न धु व्या नि द्ध गेन्द्रु य त्वो त्स न्तो ष्ठ या ग मं ह

क नृ गम्यु नत्रा त्र सं कृ ग स्थावि ज न मा ला के सा रू त्रि य र स य यं व ला क ॥ ज्रत्य कृ रा वा कृ रु ना न रि द्र स्या क स्य स ता र य ग ॥ म [illegible] रहा घ्रु । स द्व व

गा ना मश्वि मा न सा नि ष्ठ सा द रा क्वि प्व [illegible] नि वृ क्त ॥ गु ला प पु व । ज्ञि ग म न म्या गु ला कृ मी य न व व छ वि रा ॥ वि ता य व यृं स्व या न्न ग्र सेन्व त न्द्वि य्य गी सि छि मि वो य ज्ञा

म्ब ४ंगी तेंगुवा वैद्दिकयराव नाम्यी त्मव्यप्र माधेप्रविवि कनाम्यी । मस्यादि कब्वे वम नं ४ म माव्धे यपावल्ले सो हनुगा भासागिब्धान ॥ अथक [illegible] वितस महान्ना यानि तिब्धन्द [illegible]

यिब्धय पृस्ल गंल्ना ये गाली धानि स्थाचि गंइ भिन्क त्या [illegible] व तमन्यव गाव के नेस्कुम्यम तत्व पं ताक सं वृ गंस्वे वाया यछा नं स्वे नाजमा गीक गं ष्वि वृ गाति मा [illegible] छ ४ थ

म्मसरस विहा नाथ गं कालतिब्ध भाडि गं ता नृ गम्ब नो या गा नेल ला न पर्व गदनी कु क्षनंत्र विवे वान ॥ अथा त्र ब्याघ्रव नि गं दरुगं गानि गुरुव । प्रम

निकृगदा मणगा गीविस्यन्द मनदगी ॥ यनि रुामकु ण्गगी रुम [illegible] गनादा नीं । आहा न मिवयच्युनीं । वात्सान्व नयान यि ॥ स्तुन्य कआइ प स गा

न्मास्हविम स्कुनिब्धअनु । नत्रायनं वे ६ कुनें उत्तयन्गीं यनानिव ॥ वाथिस्व स्कुगीद कु धाआयिक रुणा वगमा ९ । वकृ ध्ययन ६४ स्थान म हीक प्यादिवा डिनदु मा [illegible]

ग स्म मद्दानी गायम स्मदर्थं गीतरागवता साद्धर्मि [illegible] स्य [illegible] थाऽहन्नहृय गे वाधिस [illegible] कितायौ तम धान्यानिमि ग कालात

व्यामा ला नीरु गीयथि ग पृ [illegible] कर्मा कैडा थि [illegible] बीनाँ नाजा वेदव ॥ सवात्यात्रर [illegible] प्यामन [illegible] वित या [illegible] कौ [illegible] कथ

कृति ४ पु [illegible] सर्वाद नंकवि [illegible] म विपृतण नम ति [illegible] सालु मत्र पुराण वशा कि दवात म्यन्न ४ सा [illegible] वसु जा [illegible] यातय

ति स ॥ गा स्मि [illegible] गुणा गु [illegible] ४ [illegible] या माडिव मंत्रि वि [illegible] ॥ समम [illegible] या विवरस में [illegible] विशाष स [illegible] विपन्न [illegible] ता ४ ॥

वि [illegible] ते वाविन [illegible] में य सामाय दि वा गिकस्य [illegible] त्यात्म नाँ यां [illegible] दिन वते [illegible] वसा ग [illegible] यथार्थ नामा ॥ उ दान [illegible] वा [illegible] क [illegible] म [illegible]

विक्रामिपल्याश्च सनाजवर्यश्च ॥ न म ८ थिनामी प्यिन तिद्धिहा ८ दाक्षिष्टू गाति मखाति यंश्चन ॥ अथ सनाजा दान प्रियवालंमनगानगान समद्धा
पक्वनणमन अन्यं तमळा रान मताश्च कान यिवा खेश्च माहानमा दव पंथ धारिपायसम्या डिगं सायवानं मनाहूनमनः गैकाल
नकालमरा गीदानवकृतायूगमष ८ वव ॥ अन्तमन्ता धिरयश्च गयमासनवसनयान भोजन गन्धमाल्य नजगास्वव द गरूद
धिरयश्च ॥ अथ गजयनाहूश्च प्रदानादायगव दिनिमिगप मद्विगादवयानानादिगाति तक्रिग दगातिवासिनः श्व गत्र पासक दंगम यक्षमू
आपन्नायकूतं मनसान लोकमनद्धलख्यप्रणयावकाश्च ॥ गमभिनः ८ प्राम मखाश्च समीप्य माद दंववयागा क्षायपयेव ॥ अथ सनाजा समनाह

तितिप्रतिज्ञया। विशिष्टं वादनं रूत्यस्य वचसा नास्ति निग्रहस्थानं ॥ यदपि वाक्छलं देवदत्तो नवकंबलोऽयं नवकंबल इति किं नवसंख्याविशेष्यत्वं नवकंबलस्य गौ ॥ नैक ६
कानत्वासा अक्षं कार्यादर्शनं तु तद्व्यं। कान्तभावान साधय
९
॥ स्याद्दोषादि विशिष्य ग ॥ तत्र सत्काननाति सद्भाव्य साध्य विवक्षायुक्त सम
हेतोर्वचनेन च्छलं ॥ शृंगाग्राडवश्च ॥ घन क्ष्मान्तरानि
दोषानुमतं निराकरणे नासाध्य कल्पितमतं समारोपि ॥ पक्ष न दत्त व
समग्रोत्थप्रतन्नयामहे ॥ आलोचन ॥ यदेव साध्य
जगदद्वादश्यानानाप्सितं वाक्यगोचरं। किं पुनः सामान्यमुलेन गो
यदोष्याम्यं ग ॥ प्रायिगमर्थमसम ॥ श्रुयत्स्यनाक्षादृष्टगन्तविशेषस्मृत्यलसम ॥ हेत्वादिगादत्तमक्षितं पत्रोनाहमान्यसुखार्थ नाज्ञात
लानं
पुनरुक्तं

बनत्य गं [illegible] ग्रंथ २

[illegible] वाव ॥ मा गां [illegible] नात्यन नयथ ४ समाप्ति विषि नासी प्राप्य गं कें न [illegible] ग्या मां घ यर रू नि रि मि खग गे ४ कीर्त्ति दिव [illegible] पूया ७ । सीप्रा
[illegible] म तिथ थ्य गी नय [illegible] तां गा काढि वि [illegible] नीं किं द श्रा । नयन न प्रा दि त्त [illegible] वान कार्य कु न स्तु । विधि ४ ॥ तेष्ठा व का गा [illegible] द [illegible] षु
[illegible] की क्यात मे नाद व रा स मा न त ४ न [illegible] कृत्या [illegible] गि नु [illegible] । [illegible] गीषि ४ । कें तिथ मा ता नू [illegible] दा [illegible] कु ४ ॥ [illegible] मा र्य
तान व सामिथ्य वाव ॥ ना र्य यत्त ४ सा धि री म दे मा दू त व । [illegible] गं नाय वें गं न की कि । प्रा उ ता का ति [illegible] बो द नो म या [illegible] की ६
मा न र द स्य मो प्प ४ ॥ श्रय स ना डा नी सा न्य त दं त [illegible] न का नि तयन न मकी वै घयनि द ४ न [illegible] ता गन के न [illegible] म [illegible] प्र यन या घी त्या

मा का २

युद्धयार

कलुं धेनेंनथिरुनन ग्रियातिर्ष्ठे ग्रम्बरावृत्तयुत्त मुमिमि पुडानपुरुथ्यापेन गसमी क्ष ॥ अनकेगी तानाविर्गयारु नानी गुगादपि । अहं नाथि

गाविमयस्व दृष्टं सन्ध्यामिसर्व गा ३ ॥ यत्रानुकंस्यावितनयाि जाना द्वानाम्ब ने १ कौषिड दया विषयाय ४ ॥ ये तानुषक्ष कानर्हि वर्गायुः

७ कृमंयामानुषक्षिं वं वकृ ३ ॥ नकाद्विंदिशाजु वेपर् ४ एं द्वाद ने सौ कोतवा थेनस्त स्व लोकस्य धं । लोकयनस्मिन द्धे घ यक ३ कौ

क्रियुक्षानप्रसुरवादयाम्य ॥ भूतर्गनि ४ भीनतथाश्वसमा नौयद्वीयगलोकहि गानमयोनानि आन नीयौ ॥ निर्दि दीय मानमदी

येमानतिभूतेकनिष्ठं ॥ नदर्वदृष्क नगतमिसदातीगायमसादथनीतरागवगासद्धमिक्षति समद्गृहन्सुजगवध्यगपागकमासासंध

नानका ...

नयष्या

पूर्वं वज्रकत्रूलावबुध्यिवायं ॥ तिर्हं वसूत्यस्रूत्तयुदर्शनं ऽ वैनं मत्कृत्यायविनानियूर्व्यानीहं वपूष्यमारामात्मयुरावमय कीर्तिसनातिह

मताइवं पदर्भोयानि॥ ... ति॥ ... तिजिविज्ञातक ॥ द्वितीयं ॥ २ ॥ ... ॥ विकं पुसांदाजनंया गाजिभायमाकेयादिकं

खंनात्यकं नामदात्त्रमतिं यियाकमरुत्व ॥ गयष्प नूष्क्रयतवाधिप्रवरगकिनार्यरगवानुकौमताधियतिवेरुव ॥ न

...नीतीसकाबिणाम पिनाजयुभनीविरुमतिमा...रख्यू दवसमयकुलभार ॥ युषामास्याद

आत्माइ मुम्प्युरगाकिसम्पत्यय...नीतीसकाबि...मिनदनीलितभिश्याग्योरुद्दकानपिगस्यभजनूनकाबम मगदयाक्षिताद

यिकांत्त ...विसम्यक्षिरक्षकमा ॥ कितलाक्लवबर्डग्रमानदत्मीलि...

द्वितीय २ घटकानत्या पाक १

ॐ नमः श्रीपार्श्वप्रभवे नमः ॥ श्रीमान्निःसद्गुणपत्निग्रहमर्गुंतानि कीर्त्यास्पदान्यनवगीतमनोहराणि । पूर्वप्रजन्ममसूनसुभनिकारकाणि [illegible] विकारकरूराणि
नोंश्रीयथा ॥ प्राप्येन मानिनुद्भिप्रविद्रुतर्नानाद्गुणिनी रुवनियंत्तं गगनमानामन्त्रश्री स्याद्वक्त्रकृमतनसा मप्रविवगुसाधा धर्मपादकथोव्वन मणायगनरू
श्री लाकार्यन्तित्वाधी मसी श्रुकृतिरॉयं य १ स्यायंर्यशक्त्रवि गुणनयद ८ श्रमपृयततश्री लाकाफमत्यवेति गातिगुयरचुदेलोपर्हप्रानिरीगामप्रियरुफ़ तिवत्तराल
स्याप्यप्रगीतचियनायेवनर्पृनीवान्ग गपश्रु कगुणप्रग्रनियर्फि गमवा ॥ तर्व्वकृ०० स्यायिविणधाकृनदीपककीर्ति मृद्धांतमणमसतमसनकृपमसर्थवम ॥ सर्वप्रत्वेपव
नणपनमगवत्सनाम्यणवश्री सद्वेकृतान्मरराग ४ पूर्वजन्मसुधि मर्गावा ॥ विनिवेद्रकृगवनियनरुपसादपकार्य्यगागधाग्रगुयरे ॥ नत्तनयगुरुहि ४ पानीयर

भारि नाधि त गुरु रिंगुलब विवय गुरु रिं नंस्ह दुनु ति ४ पनकी रुमानामि दुरायवण ४ पूर्वे जन्मावदानं वोधिसत्वं किलोर्यरगवान् ॥ रुण ४ प्रतिरूपि गयणं

दृशे दोनप्रियवचनार्थचर्या भरति रि ४ पस्त्वापनियतानितवः धे ४ कात्म्यातिष्यः लोस नृगृकन्तोत ४ माति नयपनरा घोवि वृत्तिच्चंदि वादि ता

मिह तिग्राम्न लकुल जन्मयानि रहित्य कान ॥ सकता तिक्का न का मा जाणकमा दिरि नाति वरुमान पक्का ति मधावि हात्ता नाथ्यवि गाथा पूस्ता तकोउप

उतादकोती आह्व नाविनं णेवा क्ष्वद गाह विधास्कान भुवि कुलज मावि र छा सदयसकता कता खावार्यकं यदम राप ॥ सेतु कवद्ध क विदो वछवना

जवनास्त्वं वह मान या त्रा ता क्रात्त सृस्रा कं वृ यिनाम र्थंच त४ पि गं व ॥ गस्पता पृथुगुणमति गायसमावतिं गाम हान् तारा सन्काय ज्ञाति गय ४ प्राइ वल र

कुजानां कुमा -

सु ; विकान

श्रीपाठ

गमकृष्णमगायवकृमानमिवाजिननिर्वेमासमगगीकुवाल४जमहरिग ॥ अहादयाः स्यबासनाठु नेज नेस्वप्तीखानि ४ मग्य नेहान्ननगभुहाये क

र्थगमिनीक्षितिनि १ सगुनासहाय नेथीमृदिनायक १ छियु ४ ॥ शृयनाकानामयुनसोङ्गहीयुणगुर्यथुमयनेयुदगिग अहान्नमक

नविलामयापुनीयुमसक्नीनासगुणीवनूसकरुतिसगोसी स्यस्यवस्नथनाध नने हौयनेयीब्यसनश्चमथिक । अहादीयागमीगायक

णगीरवैदकं गावकिमसस्यच्दोनया ॥ श्रनेननाश्चनस । नाथगीगगीतजमविगथीस्वतमास्यगीजगण । यनाजयार्वकिवजाणसंयाः

फुवैंक्षितिसांयंप्राः२ घमसमथ ३ ॥ सर्वथानआम्लमिमहागगयि सर्वस्तकानव्यमयानिवियूसकारू व्यमयाप्रभयेसत्वायरत्नावयेवाधिसत्वाय

महासत्वाय इति ॥ अथ सत्व समर्थं स्ववृक्षात्वा निर्यातिं कृत्यामास ॥ तत्क्षणाद्विशिखिगणमुरुषेन य नन्त्या [illegible] गन्धर्वयक्षरुडजगोसिद्ध [illegible] य
[illegible] शात्यास्वन्नालय नगय न्दवृक्षव [illegible] न्नागदक्षिवंभव सूर्यवद्भव ॥ गदर्व सर्वं सर्व स [illegible] कानणयन मंदक्ष तत्सराव ४ मखेर
नामरूतपूर्वजन्म [illegible] सरागवात्रिति वृद्धगगवतियन १ पुत्रसादं ४ काय ४ ॥ जातपुत्र सादं ५ [illegible] गव तिय नायीति नत्यादृष्य
तख्या । नृवमायतनग तन ४ पुत्रसाद [illegible] नावम ध्य नम सत यात्त कृत्यम म्म ४ [illegible] नृवं इत्यकन सुतमुदानी तत्वाकन लाभवपू द
यिवाय भव स्वरावाति ५ यत्प्रतिवादि काधेना न गहस्पव लि ६७३ ४ करणीति ॥ [illegible] ॥ [illegible] व्याघ्रि जातक [illegible] ॥ [illegible] ॥ इत्यकनेम

गि सद्वाप्र माद विघ्नक्राङ्गनमनमैवाय ॥ यन्नात्स्यु य गाश्रिमतोन्न ‹ चन ग मैम गैवाक्ष्णण्यू नयश्मि । शाकीऊमानायू मर्दक मक्कु दडामिव रुडे

ये सय्य रुनी ॥ सर्व विवृ कृनय ग्रीस्यत ल्लारि गास्य ४ सेव यैच्य गा वृजय थारि मर्मजन स्य । स्या क्लि नृसाय्य मृग नं गिवि वाल दी ला ६

तात स्य साय्या मागि वाल्लिगा ग्वि स्मस्य ॥ अथ गास्य नाल्लामा स्या ग्यरुः ५ पुदानवधव साय् म वेथ्य म हिंर मात्र गावृष्ठाद थ्यि गुन सी ६

आ

नाऊानमरुवृ ॥ दग्गा लिहथाद नय म तामी क्षा हिगा दर्य न रसीद देयमा मर्व [illegible] दाउ मरुदि ॥ नृक स्यां प्ये हिऊमा स्य मात मम ६

बीच्य नारु या ॥ अर्थ गाका ग्निनाद मृ सुरव सै वल्लिगा ४ पुजा ॥ मनाति लक्षाय्यागि बा थे ताति गा मान्नि न दानि यस हिति ग्निम ४ त्रेया मृ वि नी

ताण्डवप्र ऋ४ प्रयुक्तमहाङ्जितगी तं गान्तच्छियान्धा ॥ सम्भवनन्वप्रनिखेतानां गन्तस्युयादार्यक्षिकध्रुतिति । प्रसाति सर्वे पुसस्वानि दाहिमा
दा४ स्वरकृणर्दकरस्तु ४॥ विमश्यानामपिचगावलहाना ङ ॥ अन्नोदीयं कर्थं ता मन्व क्षमन्युद्र याक्षणं । अथ देवपुराणे यं खेच
रुशकिमयच्छणं ॥ शपिवदव ॥ वकृषाकिंदनिद्रस्यस नारम्रदयमाक्षिणा । धनमे वयं णां दि दवमा सा ह हंद्र स्य ४॥ अथना
ताणनमाख्यानुसान्नयम धूना ऋन्न मित्यू वाव ॥ अदाने कृतु मैवृ छिदा मा मी व्य रि मध्यये ४ा सतानाया । गपि ग्रेष्ठ मा नाति प्रति
मृच्छति ॥ दास्यामीति प्रतिच्छाय याश्च्या पाक्रू र गमनश्च कार्य व्याति छिवमूगै श क स्यात्यो य गन्त स्नगा ४॥ हि नाच्छ स्यांचि नामाऽमं दास्या

ईस्त्रं याद्दवीकसां ॥ प्रस्कंदनमीं दृष्ट्वा ग्लबुबुद्धिर्मां यत्राजगुह्यांगानदीवरांप्रकृतं ४१ अविद्यामान्वन्द्वन्द्वसाक्षिगं यथाविधि कृत्स्नमेन
रसनात् ॥ समाप्य यत्विमं पे हृत्वा तावन्तादिवौकसः प्रस्र स्यापानागत्य भवतो मनाकृतमगुणं ४२ सभीनत्वे मनमस्त्र मोजमता ६
यहरागा ॥ ददाति कोहय्येयतीगमानसेअरुद्धिरिदृत ११ गत्वा हविर्मये ४३ नृपस्यकाणिगायकेवाद्याया ४ समन्या गे ४४ प्रश्नच्छवि १३
नगिन मुहा ४४ ॥ अहावतो दार्य महाकृत्यातना विगहद्धा पच्यायधास्यच्च ग सं ४५ अहासेमी स्वप्रान्तितृ तत्कामम गीन्ते मार्कि गीयस्य
यथ्य विक्रम ॥ सतापथ्यमीसाधृजगन्दगरसु आपुनविवृद्धकुणर्य कजणिया ॥ अमा पदेपाव नयत्ये यं संचया च्चि नमःप्रम्ते न स्वर्तु जिगाज
९२

गं ॥ अथ गक्रमसाधूसाक्षिय्य नेनारि हिंनाथस्य नरवाव ॥ मानानविदिगानाजजक्ष व छुर्द्धगयाधयश नृवेउप्राविदजे त मंयमनयननय
॥ समनाधाजनमगं नेबेत्रविगिजसकुगंडक्षूमव्याद गागकिरेविश्यश्यनेसाध्यगे ॥ कृष्यक्वागक्रस्य रेवचानादेश ॥ अ
यसवाथिसलोविस्मयपूर्णमनारिश्रीन्दानिममप्रविकपि तनयतेनमायेनतूयांगेषगानेगंमारिविरूमाजांजयाभीधिवनसूप्
नश्सनेगवक्राक्तनेनारिवेन्द्यमानश्पुनपनमक्किगखेज विविश्रयगार्कप्रविजत्यामतारयदयजोरुमहिगमायविडिनिवृषू
४सरोजनार्थमहिगणस्थामासस्यमूरव्यासयवाक्तगदध्वजानपदसोवमासाप्रनायिकेषमध्मदगयामास ॥ कानोमेताकगिथिषुदेनश्स्था

१ शूरजातक १९० १ हंसजातक २०२
१ महाकपिजात १९८ १ व्याघ्रजातक २१५
१ क्षान्तिजातक २१२ १ महिषजातक २२१
१ ब्रह्मजातकपत्र १९७ १ शतपत्रजातक २२१
१ हस्तिजात २१७ ४ ... २३२

महायानसूत्रसर्वसाधितरत्नावदान ॥
जातकं ०
पत्र २३८
मिति ११३

वनाव ना॰ । वानसप्तिप्रमनिरे अ॰ तै२ नं ९४पा

नमान सामा॰ ॥ विमादर्नं मान : मसरोभमनां प्रसादनीश्छगुणप्रियाणाम् । श्रीजोदर्यं श्रीयंपनायलक्ष्मी मात्स्यसारापह गानमतां क्र ॥

गुद्धायके मानप्रकाशी विस्मापतं श्या गर्छ म [illegible] यानीं विअ धर्नं सग मसहाय थम्य श्या भाप्रियाणा मन मकादि न्हणा ॥ कदान्नुभ मे नेपि ४

रा नाम कुर्यां क्रियय नमां जितियछ्मभेदन । मनान थकुम ग्रली [illegible] क्रियाक्षं संबाधि मग्युमांपिवां विस्रन ॥ [illegible] ॥ नेयछ्यानि

वयन्मा रितं लाछिक्षं गुर गांभूमिग सागगा दो स्पष्ट ४ कं पायोगभु यागतीवो। सद्वेयकोर्ने) घ्यानस्य मनीता राद्वेयना अरस्ना त्यानिकंथ्यान म

सरस यथर्थं म मारनान्यगु यनार्थ सिद्धं ४॥ तथामममा नतं मानकालं लाकस्य द ४स्वक्षस्वादयक्ष। [illegible] सदास्य [illegible] मथ्युकाः

म॰

नक्षत्र्यथ्येवराणां मादृक्षुद्रु माद्भूत्सिंहिति सीं गणानां कास्यक्षक्षक थयायागमृयागतोवा। सर्वपुकार्नजगगारिणातिकुर्यामजंसंमुखमतिहिताति ॥ तुर्वीस
तिष्ठिस्यपनापसिद्धि प्राणमयययस्यायंतिकयप्रमादशामतां। तिष्ठीनात्स्यांविदेवहातां विहायायतं स्थानान्तमुत्तसक्तौ ॥ अथपायायाछिन्न
वाधिमत्वस्यगतानैतियागगोदनसमृक्षायितकोद्वहत्तम आविनमप्रखनतुयवेहींसाश्रमाष्ठनानयनकोनयनविविक्रय ॥ दशूवित
वाधिमत्वेगतीनमृजनप्राणीं महसातिमृत्यर्कयेयमेय वक्रम ॥ अर्थेनस्यगिश्वामीतमनासाद्वींछपतिनिवृक्रवक्रुर्वायाधायंक
किविसाकयतं नवाधिमत्वंनीनमृजनप्राणीं नयावाप्यवसारक्रमालंददको ॥ सगक्रमंति ... गेयाविस्मयास्थाणिवृडलोकदृष्टवावं

स — मतां ग्राह

कनउगध ततिवयम विधिमस्य मातपृठास विविधवसनयानित्यूर्णृ गर्त्तासुवस्मृ यदास सम्पू साद लो [illegible] तथु दानि ताद्वि वि धवाहवस्मृ
न्येष्वृ पिछ्वि गापृगमू वि थि गभ्रुयातविजेमिम्रू पचकर्मर्सयागे [illegible] यजत में द्रौदेवातासीजावृ [illegible] कण त्रुपम ति ति मीयं द
अ ताकृ ५ यकृ ६ पच्चयाइ तरव ७ ॥ अथ गमनाकृ ४ कातृप्य द मेधीयत्रि गाविगया आ तप्रसत्ते [illegible] जगकृ त्रृयति व
धकाकृ दूवदहष्का कतापें कृत्यु यति मत्का माणघ्क्षिविया तूवतें त्येयतिसमीयम् पक्षज्याघ्नान [illegible] मर्ते ताजा तमि मृ
वाव ॥ द्वादयत्यहृ विनाश्रे य कहृच कृमाथात्तितिपद्र ध्यानतें कृकठमं ताधिहियंकजादृ गर्भ्य गलीकाविच [illegible] तेकया गूँ ॥ स्थ

२ सोम वाड दू — ७० वंद वमृवे ४२

सक्षापि सत्व... मःरि लखितमनात्र पुष्प सिद्धायन्नैशाक्षा त्तवमनूरदा किंसिदिदं तस्य मेवाक ब्राह्मणानं ... नविकत्या यास्या मात्सयैव
मवक्षानि न मिमिजाना विमर्षी ... यववन गर्भ ... यैपीएप्रिये मतिम ... कयावनक मुवाच ॥ कतान् शिष्य त्सामि ...
पगामीयाविकुं ब्राह्मणमह खमभक्रु ॥ सद्दस्य जंवक्रुनि ... गिपुवादंईरावंताक स्यमायिथ्यगीण ॥ अथ सर्वाह्मणवेश प्रनीभ
क्रोदं वंदक्रुस्य नाक्रु भा यावदिशीवाच ॥ गक्रास्य गा... क्रुप्राणिमानृशिष्यालीं यावित्रुवक्रु निलग मोहमि । सैरावनीनस्यम
मवबाग वक्रुस्वदानातारुस्लीक्रुरस्य ॥ अथर्नाजागरुकीकृतानकुनमस्यब्राह्मणमय रावि श्रीदव नाचरावादं नन विप्रिनावक्रु ॥ सम्यदि

व   कर्यादिमनमम

पसंगी जापदानातस मृ विकल्पादनस्य क्रिया आकार्यप्रमाणिमावष्ट्यै विस्मय जोडीयमनात्र बाव ॥ उसरुनी अर्थनंगाक्रगाकि सह्यमारुद्र
तै । भस्थता वाखिदोनी समस्य नवाति नावके ॥ कळाप्रि पैयाक्रमतोन स्थानि संग्रामीय सोडाधिक तावनाति । मरवानियुध्यापिन
जा याव कोनी यगुनमध्य दे विभीम मेह्द्र [illegible] भाकडवाब ॥ सूतमल मनतगीयबसायनाग्रपूर्वसा हे वेदगान्यनलापूर्वनि । भूपि
वपुक्रामाफावेहदनोगी मासवाछागतप सायावके ४ कथैव नीसैयनि गयुमाततर्स । ये व्रह्मण कावदती विगुद्धि थेव तेज्ञसय
स्यतायगीयथी ॥ नाजावाव ॥ कायमश्मानेविकन्न यिदुमत्र एवं गोदिवं म्ये ४ अपिवदवेदै सूत्र्यमांधी ॥ गादेववे गोहिनयावकोनी

पुरोमठ २

वर्वांत्तियाङ्क्वात्तिय गङ्गिनालि । ञाङ्गी म्मियासीव मसृ प्रियानि रा यथा गध्धा दैत्तुम मंकिमस्त्रि ॥ अयन्ताम्पनाङ्क ४ सत्याधि स्नानवलात्यु स्मय वः

यथिविलाम्रात्र । वृवनतसमल गन्मं वैन्दु नीतगकसा कान्निम॰ स्म्रमिवनी । आत्यतद्रतसदृभा बर्किवं ङ्क ४ प्राद्दनरावं ७ ॥ प्राद्द्दू गैवत

सिमित्तयुनाघ्वर्यप्रभृदि गमनाः ४ सनाजापृतनापिशक्रमु॰ वाव ॥ यथापि मांवक्रुनयाव गवें गसि मदा ॥ नयतं प्रदाय । श्री

स्यत्तवेंकाग्रमतियधाः सहिङ्गीयमय्याङ्क गथम मासू ॥ अथारियाशन समनन्तव मेंव गवमना स्नाविस्त्रमा नामिवगतं तथवं

नछिकीर्यं वङ्क ६ प्राद्दनरावं ७ ॥ गगथ्वकम्यसथना मनाथना वक्ति स्ववं सीसहसान्सागन ४ । युसकंगमहीद्र मनोग्यनि सृता ४ प्रस स्व

स्वयिसह२४सवृक्षकल्पेर्या४कुयात्मकानमृ२नाथेव्यु२४स्वनंकमान्नेयरुद्रद्दं॥ अथसबोधिसत्व४मसत्त्रमोमुदिरायदंसहराबाशिरायर्वाऊकंकर्तृणभवतसमा
हिगाकृरंगि अप्रमूवाव॥ वत्सवत्स।यथ्यसंमाननेतुर्थ्यंभृत्यो [illegible] मासहमृगानाथि।नर्विनश्रिरुमयादाराकुमानिकत्तिरूक्ष्या॥ अहावयात्तिकरूक्ष्यमात्माम
रूपमनीरूणा।यनमाताथिणतयानाहानयितुमिकृति॥ आतामह [illegible] हृमयेगृकृकावक्लयितुमहेति।यनकुयात्युर्दत्यामस्सीदगक्षयिकाममह॥ गाकी
धुमन्विय्यगी [illegible] गावरुकुनाभिकस्यारूरु४स्वसणीकानरुउ [illegible] यीवन्तगनेयानानंनकायहति॥ अरुमयिवेनीउयाणथसाहसादसान्तिवान
यितुं।सगन्थस्यक्षिप्रागिरूस्यसकानमुक्तदोहानान्वषलयनावरूव॥ अथवोधिसत्वसंगिशृंखयदंसमगिवाक्यविनाससायदं॥ संविद्येमानसकेलझानी

नेक्रास्मात्यय स्मांद्भुगयामिंमांर्स । याद्दक्ष्मिकीगस्पद्दिलांसमयकाय्यात्प्रेय१ स्याद्व कृप्पामसार्य ॥ अपिच ॥ त्रिवात्म के रादितिमानरहीनं इ१ खकगघ्र
मगगाभ्गुचोत्र इहहेपत्रेस्माय्ययय्ऋमा नखीतिमानांमी नंविष खंकूणर्थ्सं१॥ स्वमोरश्मगौनेयंपस्प इ१ खमूंय ऋँगगाकिंयानिकूयीडा । नवाम
इ१खसति मौक्ष्मिसोर्थ्यस्मस्यक्रूकौकिमपक्रूकास्या ॥ सस्या ऋगक्तौसमयक्रूयज्ञोस्याज्ञा गगायिन्याप्यिइ१खम्छ । कह्नैवपार्यसमसग
नांविरुद्देस्थगकऊँमरुपाप्रिनंवा। गस्माकत्रिख्याभिगनीन कणकेदपुपाकाजेगजोत्रिनत । सनकलीवपृखवधात्रम्न्प्याम सप्य१ सका
गमह्वर्गोद्दानमञावा ॥ किञ्चरुय१॥ संदक्षनंलाकद्दिगास्सूकानाम् कुरुनं मह्वयपाकमा णौसंदर्षणे स्याग विर्पत्तिद्दाना । शाकचं लं मह्व

[illegible]

गवइ [illegible] पुत्रकात्तितमुह [illegible]

ग१स मायण गातारा गाय मुदिण मतस१पपिकजनेनयपयुक्का दि [illegible] नास्यवनीयकउनय्य॥ विथ्राधि [illegible] थ्यिव [illegible] नाख्रोगि

विहाफि गाऊ१ा यक्षोप्रियांख्यान मिवारवन न्द द्ध लावउस्त्रा थिजनंजिगयं॥ दानाइव्रु [illegible] कीलिमयय [illegible] गस्थ [illegible] थिनावागनितम्रुकी

लूध्र मद रू हानान्यननाषिपानी गस्य द्विय थिवयनाद्वि पानी॥ अथकदाविनेनाजादानगाता [illegible] सुमन्नु विवनं [illegible] ददाप्रिजन

स्यिया विनतियावनकजन्तेसी या [illegible] गमति ममी [illegible] क्कदान क्षमसया [illegible] स्य [illegible] न्नउष्टि [illegible] पजगमम॥ [illegible] वि निन्य१यिजन [illegible] मयन

लोयिन१प्राध्रसक्रानमी रुथा नक्कस्य दानय्यसायमथी याऊु सुमा [illegible] न गगमक [illegible] ऊं [illegible]॥ गय्य वृ द्वि [illegible] एवदतिसिताथ्या [illegible] कीगायिगम

[illegible]

[illegible] ॥२

स्यूदानंगम नं खंप्प । खवृतिद्रूरुसंगी । रविस्नायदाता गयिलंविगके स्यात् । प्रियास्कीव मंत्रीव कायि ॥ अथ मात्रकाउवन्दु १ किति छनंव खनता दांक

स्यि ग विवि मन त्वप्रणे कासिति ह मनोयर्व रुना रुंकि मिद स्तिति समत्याति कृविगके सामपनाद्रू ०॥ मं विग कागि भयं क्षेनणा गलव

तता नि ति रु मदे स्वा वि स्मयावडि गहदयश्चि ना मा पं दं ॥ दाता नि हश्री छ ग मा न ब नंदि ग कि गा कि हि दि मंत्र पूजा । आ वे ६

ध्यु दात थ व सायकश्री ख गगुदान क्षि नातिध्य यत ॥ गनी मागि ध्यु गाव दं ता क्षिति । अथ गस्पनाह्र ६ प दाति मकूस्यामात्र

गलच निवग स्यस मवि कायांढू गायामथिजन स्यक ६ किमिछ्छ गी यां क्षाना व थाम गोयांद्याश्र मानं बृ ञा मा ध्य कामिगं मृमालि कन ६

मु दु

[illegible] क्ष्याँ [illegible] ७ [illegible]

[illegible] यावनकायश्रेयं [illegible] क्षो ८ वं [illegible] गाढं [illegible] शिरसि [illegible] क्षानें व [illegible] स्पर्शे [illegible] सनाजा मय निवृ नक्ष [illegible] स्त्र [illegible]

[illegible] स्त्रोनिमोक्ष गोकं [illegible] वक्रु यावनकमेरी [illegible] वीक्ष सनाजायत मण प्रश्नं ण मभाय ये म ण ह ट्ट याडि भीयमध्य मितयनी

[illegible] गणे सनाजातय [illegible] नयविपमव [illegible] काव [illegible] केउत्सेव क [illegible] यो नेन साक्षान [illegible] सीत्तमयरवक्रु दे ६ [illegible]

[illegible] यमनक्रु जाक्षिपते ४ [illegible] कालु शिवसम [illegible] मीतिषिवें समन्ना ० । भीक्री [illegible] सय नवा पे पुना [illegible] संवा पे न

[illegible] मर्णि हमीक्षु ॥ [illegible] क्रु स्यो विसम्या वज्जि ग ८ ८ यस्ये वदर ८ ७ ॥ [illegible] गिन [illegible] मुहासव [illegible] नोघि गा [illegible] सक्रु मायिक

मेर्दं कुनातीवविवानणा ॥ नेनायमाग्वयसतव्विनमिमयमिक्रुगमेनलवितुमहतियगा ४ प्रयतिष्ठतिवस्तुनस्मायायपुदगनादू

स्वादयितु ॥ श्रीय गस्पनाक्र १ ऊ मातर्सरद्वनयतेत्रसमाव (८) गागयगोमरुगागा ४ पृवंयोन ऊनपुवदगाकस्यप्रविकेकुकामवाइध्य

नयस्कनित्यामुकीनंकुसमदनायननरुविरनायुनमिविग मुदुरत्वविगिविगिनसुरवयवनमधुकेगुगायकु ग्रियवकेनातिवमस्य

जकोदेवक्लयुनफाद्याइननवव ॥ केनमस्मिनाकुय येतयुकोदवुवाउ ॥ धाकारमगिदवन्द्वरतीमीपमयागगम नाजा

वाव ॥ स्वागतमास्लाय्युमाकेनाथंश्रिर्त ॥ सायवानियुन ४ मनेडकाआजानियुनतुवाव ॥ वनेदगाधुनाघयसिक्कुसिगदयगा ॥ श्र

कृगन

श्रीबोधिसत्त्वावदान

39-45,

ॐ चरितिगकनुत्राय कापरिण त्नावयधमाममरयकत्करीनीदिर्यदनिमूकाव २ ३

कमिग्रयांकृन मर्तिनो प्रातिंदानेसुंगणसकर्थीवि वकानंयन्तवगधाकैमर्विदॐथंयहुंगंव्यायतंधतींयुजनूंयदिंगु ष्णींकीव्लितस्मद्दवं

यणे कांशंगप्रकृणमत्तनयथंज्ञाननुंगुणमनांर्ग्रीहोकिग दृक्ष्यायकोत्रिगालोकविध्यसमीयग्नांजवोनादिरयाविमकों

श्रीयाम्प्राविविधांग्यकोरौनसगंदानप्रतिक्यांगुणीभादानी नाममहातिभ्रानमनूगीवोध्रसाभ्रात्रणी,दातमत्तनलारदामनज्ञः

सप्रकानर्णवगसशाहीगौत्रापृयत्रिगृमयनयनैदातिमृखी वाहनं,दानतंकसृखायरागसमृखींसान्निकमोयानिकीविरावस

मृदयम्बादोकमाऊागुणम्बाचिदगापूननिवार्सीवृक्ष्मेरायुगुणींवानयदाहिलमृतिसंध्वैनतमाथानीदोनादिनियविगालिनाथौउकानदा

नानिदश्या ७॥ सा ता दानं दान मां हृ [illegible] नाना मि गव्यप्राणां दान मां हृ नि दानं । दानं ग्राम ता [illegible] नलो ख दानं चांत्यचु [illegible] ४ पीस दानं स्वदानं ॥ अथ पासाय व

रु सा ना [illegible] क्रा दके वव त्तं सव हमान नमरि नन्द्य प्रदानादि [illegible] युतियस्यारि पूर्वीवरत्व ॥ तदेवं विकल्प्य सा [illegible] पात्राणि गायत्रि

पादि गक्ष नात्यकं ताम दान मां हि विपाकमस त्वा दिशि प्रमत्न [illegible] वि कं ता [illegible] यं सं ख दानं [illegible] त्यादृशि

तथा । [illegible] मम माथ्यवं वि [illegible] वि गि [illegible] नाम सं प [illegible] तयाणि ॥ १०४ ॥ [illegible]

[illegible] यम [illegible] दि ति [illegible] सूरवा ४ [illegible] नंदा [illegible] ॥ [illegible] कि ता [illegible] ग वा [illegible]

[illegible]

नम कं

समेव पूर्यत्वजनयत्रिजनं साक्षमानारि दूगम मिनारि वृद्धदा नारि तावंसि नन कम (ध्य नत्वायात॥ पूर्व्यअनूराबादंय गस्य गाम्बिनेत्र्यकडं पंकेज
मूधद्रूव । भूवद्रूपंवा वजहास मानं यं क्रूक्रया केसन दन पक्षा॥ भूयवाम्रिसत्व १ य प्रसीक्रमणसूय स्थानिसारि दोनोरिभाय निजा
आ गे नारि गमापुय्थकवृढंय सादहमापू भूहृदयम ४ विष्णुयातु मसिसायकु॥ मतेषुप्रमादप्रतिवाघतार्थ गस्याथारि रुविमइलपाग। व २२
मनु.कलं.वेस गगुनेजमविघुइ आगययाद तस्मा॥ वेमादिगमतानयस्क्रमोमाङ्गुतिर्यंत्रि माबमवाक्यवैमनेस्यां। गमारि मूरवमूंध
दांऊंतुमं सद सहृवन कलगगम्बिनावरूव॥ गकिंमिदद्रियतीनमं वेमत्यय मंयाविगणाया दितानि मन्यन्नूपाथा॥ कनतामसलक्षिनतदागथीस्यातं

नमहिक्रु नर्क मनेरत श्रुवमकिशूतनस्रुमतानयपार सेन

गाक्लि ॥ कृपयामद्द्या ॥ गृस्यार्थिरितिज्ञियमातमान ग्टद्वरुवायाम्रिकप्रहर्षेष्ठाविवदसप्तग्रूयज्ञानानन्त थेतेकानगाक्लिप्रविनागिरमर्थे

नु ॥ रावन्निलाकस्यात्रिलयसार्थेलालाग्याद्धगतिमोगिसा थीश्रपनाम्रतानत्युदयावसुवार्थेस्कृदीयास्तुवरुर्युथार्थेश्राश्यगस्यध

ऊ महासत्वस्ययथारितज्ञिनेनाक्लिष्ट जिश्लायनानविषयों वियूलेश्वर्थविसंलेमावतनकजतसमनान ४ सनाप्यियगा ४ याहानोदाध २३

र्यगवणविस्मयावज्ञिगमनात ४ गक्रादवन्दु ४ प्रदानक्लि नातिस्वयमामस्पाज्ञिरूपंसमानत ४ प्रयंदप्रतश्चाव्यनलपंतिकृदजागेग

रुदनाच्छायायामास ॥ ऋषिनामार्यविरवयतिऊयागेकँयाविमातायीसप्रुसार्थेगेति ।प्रदानाग्निमकस्यउपनम्भिसाम्लिलस ॥ यथायथा

विरववर्धूविषु॥ वाधिसत्वडवाव॥ ऋतमतिनिर्वधिनांग्रगावग॥ श्रीमाथेॐस्याघंभ्युगनीयानुयनकार्याॐनाचिस्याद्धूयमनोदस्समृद्धिंनेतिश्री

तिगौडिमरूस्याविविरहस्यादानेस्कुष्किलरिजयाप्रामूपरर कें॥ नेतिघर्मनेकेवलयमस्रसमुच्यादोनेनेवरस्यातिमेवाप्रातिवपूर्थां॥ मार

सुयानीवातिरवस्यवयदाधानाहमहंगाद्धानमगठकानरा डंगात्रोउंलोकाव्यस्कुजचामत्र्यपनीगाकेयानमनेदिसतिकान्यवेत्ता २५

नययानास्वादवैक्लिहरवानांपुनद्दखकस्त्यापेंद्रकागस्या स्यादविलक्षा॥ ऋषिवदवन्द्र॥ सत्यक्लिमविवविलानामधुवास्तितिनायर्का

शियावनर्केलप्रातमस्कृद्धिवकुंगा॥ नकानयश्चरूवियाविदप्राति वनीतनायनावडतिषवनमायान्यका केल्याणमातिममित्यवेपूयमागी

नोमस्त्यथप्रतयुतनमगेमनोमिग॥ अर्थश्चविस्तुनमृयेख्यागिवत्युनमिरुर्लामनोसितियभनंस्याचकानां॥ नूवंगनेचिवयथाविरावंप्रदास्येमायेव

दानतियमस्रमदिवस्रगूकु॥ कुच्यकूणक्रदवलुमिमति पहादिकुमनो१माध्रसाध्वयनमदिसनाध्यसवकुमानहिंग्धमवक्कमोलध

उदावाग्यण४सवतेनाचिकम्मरिजनफमसछिमचिकृति नीरदारुलो४सोख्यमभिदनवक्रितोव्ययु४पगायमानस्पयलतवंकसा॥६

अविकपिवाउभतरूयंवयामसीव्युहातिभमवयाणन ...पनार्थसंयादनाःबकसामदत्वमृक्काविगमात्मसच्चद४॥ अहायवोदो

यावलायरालगउप्रमृक्षमात्सर्यगमिथ्याहदश॥ प्रदानमंकावविनूपरगामेर्नैपनव्वनस्छविनयरुत्याडायाना॥ तवांगुंयनइ४स्वइ४वितन४क

त थ य न स्य ना गू प वि की लू न लु ति ४ प्रु स कं म नं क्ल स मं न वा कि न तं ॥ स्र स्र छ द धा न स्पृ ति स्र मी त ल ४ त ग भि ता ना ङ स प स्पृ र्जं न ज धा म दा स व द्व न र क तु ४

क्रि ति स्र मं द्व या मा स कू श्म नु कौ नि व ॥ तं ड् य न स्य प्रु मृ दि ग वि ४ स्मि ग स ना ति दं व ता ति स म का ग ४ पा नि की स्य मा तं ग स्पा वि ग को ह्र नं ग क्रा द

व ठु ४ म मा पू य मा ला वि स्य य की ठ ह न त म न सां ग स्य म हा स त स्य रा व डि ह्रा म या द्वि वी य ६ ह्र ति म ग त ग ल स स्प म हि तं स्य सा नं प्र ठ ग न ३०

कि न ल य ता व स वि ता नि प्रु ह्ल नि त म नी वि ज ल व म ना स्र ता व ना ग य वि स ना व ग्रु लि गा स्र्वं ना ता क न रु मा स्र दि ह्र धं ङ्कि प्य मा त श्र य ख्र ति ४

य ठ वी ना वि ना वा ना दि ग व ता ना र स्र विं ढि अ मा न य ह्रि सं या ग पू य म क्र मां पी गा ता ह स्वं स्य ग म ग क्रा द वा ना स क्षि य ग ति धा ह्म ग नू पा त स्वा मा गं

श्मानेन श्रानातिथु दी २ · सा · ४ दमालय · भनानड स्थानरयाधुर

प्रनष्टं ॰॰ वक्रूरूर्ष घ्नुमविमादंनकलं ४ सखनं प्रवृदंन्नो नितृन गर्भी विवृक्काग॥ नृकंसायांस्यनिद्रष्ठंग्रमनंगहनवनं। क्रुक्कुमक्काकाद हमोग्रागुम हल्लु

साधव ४॥ मागोसागेल्लनननिछवगनं सांदिक्क माहाउ कांपिग। क्रुन्नुमक। कोनानंसिनं घमनिगर्भक्कमार्कि मारो ४ गदे ४ कां वृग्रमांह्लादयं ७॥

कृथनुमहामलाक्लिस्यनैनेकनूलोनाकन्दितनंदनसमाकाथि गहदया १ ससंग्रमाङ्नागनगनायंर्कि दगामेरिजागम्र ४। मागोप्रनष्ठक्षगदीन

दगोनष्ठ नमतिसमी क्लसमरिग ग्धायपवानयुनं ७ सनंसमा ६ भ्मम्पयनर्डुवृ ४॥ कानानंविप्रनष्टारु सिस्यतीसंग्रमलगं। खयस्यति घ्यमणृस्यं र

वसमीयवरूसहिंनं ४॥ गदय्रगावदस्माकंयनिवथ्यायनिगुं ७। विधयानृग्रहसोम्य भ्मगनाम्निसथ्यापिग्लाघ्नृध्यडक्षंस्यरक्लींगावादनृमगसयनि

कगम १ सू · खनिस्थाराव नाकृपू २

पातकं सुमेरुसदृशं पृथ्व्यां पुण्यार्जनादि मुख्यशो य गयश्रिया दा समुद्रयाञ्जलं गोदिनां गाकृ स्मृगिनाजमद्धा । समीनसा कुर्कि ग ता
गर्वी वर्नी विना सर्वो धर्मोत्तम न यत्नयातमय ॥ राजोवाच ॥ किं कृतं देविन पा ॥ सा हर्षि सवयुन नाधुर्येष्ठ यतिशी
र्थ समस्ति लोकेऽति नभावि कुं । लोकरुद्रादिताति दिदात रुद्र तीर्थनिधाम्यहो कि मिति नाम गर्ग निरामय ॥ श्रृणु सत्ताजाद
वौदवी मिति दिघि या कृतं नाम हरिभिः क्रम सर्वं गार्ग याति कुरुक्षेत्रं हृदयं श्रृणु रत्नराजा ॥ वस्तु संस्थेव कान्ताणां सौम्य मध्या वि
राजस्य । कृष्णाद्या श्रीकृष्णं कल्याणि कमाति मधुनादय ॥ देव्युवाच ॥ श्रीकृष्णदेव किंचिद् दर्भमपि पूर्वजन्मकृतं समस्तं सनातनी गि ॥

कथयकथयदानीमितिवसादनैर्नाह्लाययर्यनूयक्लावाक्॥ वात्यस्तनरलूतमिवर्गतसमत्कृतमनामिंदासीसनीददमुद्धगराक्लमकं।
ॐ।भगवास्यमूनयंविनयनदेवांसुकवगगुणमवाययमितहब। बाधं॥ दृगतत्तानामिंकुगर्तलतनदेवयैनक्लुन्नाथगामूयगगामिसुर्म
पृथिव्या॥ॐ।नासदेवभूनकृर्गगनृतामिकिंमिदियूकवानमि। यूगर्वमतिंकृथेत॥ अथमत्राज्ञायथाकृतेयदर्गनात्यम्पमसमर्त्य
िगवद्धमानामरिपुरतमनसीयपर्वदीपिसेथकायमवय। नियतृमीदृर्गकिदिकृतसमनूभासु॥ शृत्यापिगरस्यादिक्लनामि
मिद्दकृष्णविधाकाश्रियधुस्याकानामननद्गानगीतविपित्तापृथ्यक्रियामत्सुनथ नैर्वद्रुष्टमपिकमग्रसकृनष्ठत्यग्राकृविलापिसनूयसकार्यण

ॐ उनन्दवाणि २

ध्यमात्तीयं यमसाध्यंयेत्व॥ अथ वाधि ह्वौ नूतं मध्ये नेदं दानं नूनाम मदान विघ्नापविंव ष्किन्नि स्वर्गम्य स्य सत्वा व रुम्रु श्रीनं विनयमस्यूनात्विकं दनियगामि
स्य वाव दन्ती॥ अथ सिद्धि गाव कुणंद क्लि नात विदामि नीपूर्व व ग — यमागतौ॥ यृ क्वावि लाक्षण व दैव गम्यूय नानि क्म्यानि यूनाख वृक्लि श्रद्धा आन मूर्द्धि
वैमिन नान स्वास्कं ग्रृक्लानि यथ तनगनु रे ग गयुसी सच्छप — नानवृ॥ ये थीश्चाविकिलाखलयाविद्याग॥॥ क्ष्ंदक दान यमतनमं दीयगं क्वे द २
जा वि कित्सां व्रिसयवनीनं। नथ क्वं नांद स्याद्दिनं छि नांगें तमंमन — कुसंकुल गिपदाना॥ दाताद धर्म कुर्यद्दूविवा हुमये क्व धर्मस्य वि काय दुष्ठ॥
नात स्रो नं यमवे निवृद्धि दो ना द ग धर्म प अथ यथा ये॥ ति श्री यत्तान गहरु धर्मे दुखवो मे ॥ अस्य कृत्यावि नूयमानं॥ उधादना क्वि विति मन्य मूर्तिः हृता गत
॰क्ष नादन॰ २ पि

प्रति

स्पासून गीग गावा ॥ यश्चोर्थे दाता नन कंपुयातिं उहीनाउस्नल्ह ताकी । वि वाछि तक्रि नव मलेयायीदानी । मि ४ सं यम षिष्यानाचि ॥ अमनुयथवाक्रु वच्व

स्रु वें दें स्व गीक्ष्म भयाव नकाक्रुजमू । जानं दि म ताकादि नार्थे । मिछ्ठे तदें स्व सोस्थांदयसा भनाया ॥ अथस मान पापीयान युत नाचें बाधि सुर्दं

हि न सीव षान स्क्रु नावाव ॥ हिंकि मं नीत मवायर्हं वास मीक्र । यं तेंक्रु सि तेन गङ्क सूरवान्वि नावाव दुमानयू वें स्म लों मिमीं विष्ठुनीमान नु वां

न वाषिसव्र डवाव ॥ मार्थ मघयउ रवात वा । कौ मंयनामि द । नन्तु क्रु नइ यवाक्षिं जालाव लीर गिषि लावन गूनमू ख्वा । न लथि नीं सुना

यदार्गि के मीहादाती सन्मात कात मंव मान नया हानिथ्य ॥ क्रूस्यका बांमि घले ४ खि राग्यवना वक्रुस्मा ७ जानान थ्वनि न स्येयनीं दान स्यनि न लोकन

श्रीमतायामन हते नेवाच मय

तमम गाक्रविरूय त्याफिद गो ४ कय णागयस्मी ॥ ॐ छ्मनि याङ्कू मनवणंन गन्तुइ ४ खम्यय यस्यत्र तिकान्त मागे ४ । गेना उत्रा नु क ४ कूतं पूत्र मानी नामी
तिगुरुक्षागनिना तिदन्यात ॥ गनम्हित्र ४ ४ किं लिंइ यादिदा गन्न दं ध तंवादिविवा यिना श्री । याअ्र रिगा धंनविवर्ली गानुतित्र सादय त्नाथिमू
खातियन ॥ मासुयेदा भायवयाय्यं य ४ यान्न त्या गथि रूयत्रि दू दूयछा । सत्या गमवादूतिमत्रिध्रय ४ यतित्र हकुमूसाविचा ग ४ ॥ वित्र
तूगानदरुवलसनंत्र सा क्षन णं तंक विचा तेहगो । डार्सतिदा ४ नंयसरखादयानी सातय माय ४ क ॐ वा ग्रयत ॥ गद्गिना । गकुमयिस
नयं हि गारि अ्रनाङनुकणिय गास्मि । त्वस्य स्कद यं नु मन ४ प्रदा नं सद्दूलध्यकन धर्गित रे गा ॥ नवांग मच्यान नुवृक्ति मा गे विद्रंरावानरुगि सीत्रि

ह्मनै मां नारूमंत्येनं वलेन गच्छ॥ गरुड उवाच॥ गृह्य गं पर्याप्त विरावस्यपत्रिपू द्रौ काम कालागीन स्य सम्य कृ सुवृहि
याक्रं सनहिस्विरावेवस्यूचियरु इर्ग्नै मांनारूमत्येनंवलेनगच्छ स्यापि क्मानं मादग्ममरिपुयन्त्स्य॥ यच्य॥ सर्वाह्नि विस्यन्द समाहितेन तवास्यज्ञानं लेद
चिविप्रवियूतकर्मानास्यविरुदायग लोकवणीकृते गर्यपस्यापि स्यारिदुयरानूवरूयाऊनंपसर्गिनं विगत्यसं [illegible] र्तिपुवाध्यं दर्वीतसहत्नवन्यूयं द
कृत्याविगतवा समृद्धि मारुक्ष्य पुरातकर्म नामसपत्नगर्जी या॥ अपप्रदानं प्रविक्ष [illegible] क्रमः सर्वेषु वाते तिऊ तस्य वाच्यगी। ऊऊ नयकऊ
श्वाकतन्मातावधित्वप्रादपिछियायानिपूकु वारिकाम्य [illegible] नानामेकाप्य प्रवता मकारावं नयपदद्या
यंगाधर्ते संज्ञमनेरव गछयाइपा [illegible] गावद [illegible]
कृत्या विघ्नराक्षेवतयाकुरिक्तया॥ [illegible]

पुराणत्स्यापि वाच्यनाशः । मदर्थं वेदस्याहृत सर्वगवांश्च प्रीणा ॥ वांछन्नेमृदु ऋतेनाः ॥ पृथ्व्यां विहीनानां नृणां यस्य तत्र श्रीविष्णवे मातानयेन्नामिमातो ॥ पृथ्व्यामपि

केन सा प्रकृता तस्य मानाय यत्पूर्वम आदिवकाडिय ऊर्नाद् दृश्यब्रह्मा द्वादश्यां नृत्वा द्वादश्यां पृथ्व्यामागमे इयन मध्यगम्या गधातु सा रवादयसाध नेषु पृथ्व्यप्र

सर्गश्च मातिकृत्स्वं ॥ तगर्चयस्थान नीमनी प्रतिष्ठद्वारि वाड पुदक्षिणीकृत्य यत्र नैस्थान स्थानात्पानारिजम ॥ अश्विन गतो भूय ते भूत हाये भूत २६

महानामाप्ति नामांव दृशा ॥ अश्विन्यन रत्सय ग स्यमुमान तयन तेन वा गविभारं लक्षिन श्रीवामेत प्रश्नमाश्रारुमेवतु ॥ अस्मद्वना गृविद्धि त्वा ४ पानेतिको

रहसि कुनाश्च गक्षर तोति ध य दातुं सत्वे प्रस्वि गणानां कीर्ती ॥ तं सामर्थ्यं दीनं नं काल्य ध्य अजीवित तमे । श्रीतन्द्र ४ भक गीया याद्य स्पवमो तिचक्रम ॥ गत

नेमरका ने ३ ×अनन्तस्य पवनव पमिति वियहरद्वाव जीविन नक्षि

कर्मविभ…		विपाकमञ्जरी

…नद्यान्तर		श्रुतिर्थिकल्पत्वात्सर्व्वोमहस्य २४ २३

थं दानानीमिदानामत्रिपिपतित्र्वर्यावैतगुणमानि ॥ सार्धं गतीनकमेलसुहमानंकस्यविहयैयागमयस्याद्दिमि विमषनु मसमहस्तानात्मिर्जिभूतिसर्रा ॥ अर्थ स्वाधिनस्त्रलराम

नान्ते नवहंविध्नते मसंवरूतूर्या श्रुतिपितनश्रितिपूजनमसमयन्त्र्यै सैनीनवनं… कितिमहविंशीदानि ॥ समम्रिगतामिदं मयाभि धर्यहदयविम्रक्ष्य

विषादईन्यं । समपुनगमंतनसुरुनिध्यामस्य दमोगिपिप्रवर्य गत्रीहि नकन ॥ …तिविनिष्वित्रामहासल ॥ यनममिवलाराममरिगम्य पनमश्रीगमनास्मि

नावगहु ॥ विगकातिभयकस्य हृदयह ॥ याविज्ञानिगथ श्रावि भ्यकयप्रसादस्व प्रतावस्वदिवीकसां ॥ गग ॥ उत्तहषादिवसाववनावतो महीवेद

[illegible] निरस्तगलूवांगुका विगतछ्रंसरसनइन्दरविसवताद्दिन ॥ सादारत्नगाध्यकातिन ॥ सुगक्रमन्दसातिनाप्रहासिनंस्फविल्पितद्धध्वंधनार्सेना

x नानु २ … देवानांप्रसादक २२		महाहितानरुपातेनम्राद्यवर्गमिनावस्थ३		म

इकथितं न ग नं नं ॥ ग न्दकं विज्ञा [illegible] सर्वं [illegible] ज्ञानाय धिपूर्व का॥ किं हि गीताम पत्य । [illegible] वक्ष्ननकीर्ष्य [illegible] का ग म स्मा

[illegible] म यापिय [illegible] ॥ अथ स्नाजाड्ठ्याय [illegible] माद्व । श्वास मवी [illegible] इवा सि [illegible] विकाव दनं [illegible] ॥ [illegible] नि

[illegible] या [illegible] ज्ञानं मिमं म मं । न क वलं गर्व वा [illegible] को [illegible] लयवलं मन्न गा॥ किन्तु ॥ समयम [illegible] माप्य [illegible]

ला [illegible] न लाल मा न स। [illegible] सा [illegible] प्र न मत्त गन [illegible] न म यं व म [illegible] ॥ [illegible] अतिस न स्मा

न्नामि स्मयामि [illegible] नगनर [illegible] मार्ही । भा ता न्द्व [illegible] न म। त्र सम [illegible] कम्मा हि ना त्र न स म। [illegible] दा न द [illegible] साद्द [illegible]

निशा ... दिनकृत ... क

यनिरवंद्यामदेन्यगमतां ग्राणामगयात्मय मवाक्लिरयाद्धि विकृमा रिकाघितनघ्यं उत्र [illegible] सुमनोनयमान वृक्ष्याद्रियानरूगणानिवरिक्कतस्मर

॥ जयेषु प्रसादमहेनामने माद्यणम्यकुरमाषमात्र [illegible] मगे यपस्य गहा [illegible] गयाकुंनादयं ॐ वेषयदन्यनाजवृआग्रराध्यनेण

नणभूमतिद्विकाशाग्रुदे गेदरिसहा नमायेवंदविकया गायृध्योनेत्रलरेगकिमदेतींदर्गाणतवाश्रयसादेवीप्रहषं

विमसविभमलाऊी सवमातम्रदोऊमाणानाजानि पूवा वा॥ ऊयपत्रनयपवृध्यनामययमवादि ध्याविद्याकाद्यूदयवि

णमेषत्रयूल्यरूतप्रयाद्धि णघ्यमहानाजमयदयेपृध्याद्वादनशगदषमवयायप्रवक्षि श्राविमख्यउघिवव्रजानां सम्यिक्तनि

वाचिपनिर्सं ...

मिसल्लेःप्रद्युम्नकवृद्धिरिकार्थिनमरिगणमा लाञ्छ्यत्नीमूवाच ॥ रा ॥ हैयमायोसमयोक्तवेशुपार्थंदद्दीति ॥ सातध्यतिशुमितिभ्रूयशुनि
गैरक्ते रोझमादायेश्रुक्तिना । ननकेमालाञ्छत्ननकोष्ठक समीयादृयविस्मादवक्त्राळीसदसान्युवेरेण । किमत्रदितिरात्रे
वयेनकासमायविगंसाक्षसांपीदितकश्चैनलकथाविशुध्मी कथयामासह ॥ कृयवाधिसत्वश्च कयम्रसमायोमक्रूदनवाक्य २०
७ रिऋन्नवपुतिमामूगीति । ससत्रमंनकेह्याश्च कायिनमंनोद स्य हैयमद पुनागरक्षरोझमादायनस्यामहान्मनश्च यिशुद
यात्रैयतियादयितुकामाद्दाननकोष्ठकसेमीमरिगनक्रमातोहोसकर्मसन्नानननकेदर्शा । मसाकाष्ठ्यदिदमिति मुख्यन्नाचिकेसामानश्च पा

वीयानरावनारि कुवि निष्पसंदिश्यमानं दिव्याजुनवपूजनम मिश्रं क्रिया दिनकामसंवनामांब्रवीत् । गृहृयंगे मरुत्तौ श्रवणानामार्यंतो मध्यान्तनक श्रीअ
पियपी सावचनयलु श्लोदिसानो दानव्रासनंतथ स्थितं । भवत्स्य रुमालि वहूतिगंधा मामिनि वासाद् स्वनरपुवासः ॥ श्र्यर्थक्रि वर्गे स्पाचिन्गस्य दे
उसुमिनेहगं कनुहमानं ध म्ये ॥ मध्यमी क्षहेलाथिनिवह ॥ नेकयंतुं नस्मान्न नकं प्रति सू ॥ दानयुं गनवधमाम लेख्य कालया येयदर्क
तियाये । स्त्रोमनुभस्यजनभं नादस्मासा लाय ॥ क्रनवदा नाकोर्य ॥ कस्या ध्रदानादिनिय क्रूर द्वि भर्थं हिसज्ञपकर्तंन गस्या ॥ चिर्यं
मातं ॥ कनूर्ते दहिमोदोरु हिंगं ॥ सम मामे मोति ॥ ध्रुजि गृही गांडजेना स्पूर्वे किति वृकेदोनां यतनय ॥ सूनर्वा । कत्तु गमामार्गे विनशाद्ध नक्षत्राना ६

कान्ते वमर्षमार्थ्याद्विदानीमहाण्यदाघांद्द्धुयमैद्दमानेनंकेनविदनूपयुक्तान्ववविनद्ध्वाद्दगाफलकं४वतेसोद्दयमर्षनीद्विदिर्गपूर्वमि
वमिश्रायिनामवपीताउद्दस्यत्रसेनामम॥ प्रदानस्तकाव सूरवाविर्नाप्निर्विंकम॑र्पत्रिरिगामामकृतकर्पंराविश्वानितूनेममाव २४
ऊ र्पिपत्र४पियासिनाषहुक्तमिवागगाऊर्द॥ अथस्ताप्रिसवि४ स्वत्वेयावक४म्हादत्तास्वादिनंविषादेदेत्यफस्यामय्यवस्तांया
तावनानयाविर्दैपानिविगानायिनत्रमहु॥ नवैद्दक्तर्नयावि उमितिनगस्य२यसीयावतकक्षनूकम्यावरत्व॥ अथसमहानामाया
वतकऊनक्षागगादिक्रियावेऊयास्त्रयमिवकेद्दक्षूऊत्तकदात्रक्षुसिग्रक्र॥उत्पहरिनविक्रियायतप्रायाविरावमात्रयार्थयिऊनप्रणय

सं मानं नावकाय ॥ अथ पंचम्यादि वंड रुक्से मा मा विक्षादि गीयन्त मां पिदानि दुर्गा चिं दानाहि मुख नीं चा वं शृं मा विक्षा यव हुमानं ४ संदृश्य मानं दि व्या हूग
वं पुत्र नानां श्रृंखि लो दाना दिक्कु न्दयं स्कुम्भ हा महत्त्व मूवाय ॥ | गृह्य पं ॥ सहृन्म न [illegible] य कनां म व स्कू मि मा मृ यं नं हू मा नि प्रदानेश ॥ तद सू
हि नैव जलानलासीं नवाजारि ४ संक्रियमाण विरुष ॥ न ल्लों द | हि गा वं लिंग या वृद्धी मिति पकू दान थ्य सनान्न ना गु र [illegible] ग क ४ सू नां पिवन्त द
दय्याया या ४ पुत्र ४ पूर्व सम छिन्ना रा ॥ सं ब्व लकू नाना पिंयद | नियंय नं कालन ४ [illegible] जयमं [illegible] नानी वयं नवं लीक स मकृ या [illegible] न ४
संयम तृ वद नक ४ ॥ अथ वां पि सखे ४ उदानां याम मा ह्ना म्मां विदर्भी यं गा कुमूवाय ॥ अना यं मा यं ण स हम नग स हृ दुकूनं सकू पिंड [illegible] नं मा यं व गहू

ननविनूठ मीठ ... वहूर्वस्तु ८८ ॥ मादमानाकप्रविरुनगिम्म ॥ गियकुखरण वविमखाच्च प्रालिद्यानुवया सौत्पयसमा ...

धिन्यादयजोनूवळ्याय ... नतोविंतयनियमसीनयावर्वे सूया दवगानानयिविसमयनीयावरलवृ ॥ स्वरानूसामगुलवाधितिक्रमगु

२८ गानूकलवमरखावेमापितिं । नगाविधि गावक्नुणपकमर्मि या छिनाउगाकिप्यगतियंगमकर्ति ॥ ... नीयनानूक २९

ण्यापृतियकुरगुरत्न स्वरगावसंघपडुगुणकमानृगयमय दर्षाहूनलाकमयाग ॥ पृथककाविनसमल्तनमा सायारुसमयप्रमधव

समर्थमहिगगीयसवद्धमानसयास्यमातर्षि ॥ सरूयापवनिवृपुगयमगुतमादिच्चविपकमीकनाध्ववर्दायमानगारनूयादय्यणमिवसनविनरिन

मीमत्वाऽक्षपुवफविस्पः। गुरुकृपयकृतदुर्क्षगीवन्दमसमर्द्धितमरिसमीक्ष्य सरुयान्तवाव ॥ अहोवायूर्द्धवशमगेनमगुलनरूरुसन्निवालिबेदयतिसावृत्त
वन्दमा ४ मामंश्यातावः॥ गच्छकर्मस्वसरुयनारवङ्गि ४ यास
धतियममतिसिमर्याद्यार्हि त्यायायत सैनासानविभेष कालायत गमाकोथि द
ऊर्णपुजियूकृयाणसम्यानगमनूर्ध्वस्य ॥ यच्छन्तुरवना ४॥ यतो
पुमागमाविनरुावमानामसमूहकुर्या ४ याग विनयतिया ४॥ विश्वान्नगार र्थन नोतमे
यूर्ह्लनबकायाद्दरमवुमाद ४॥ दानेनगालारनणेनासमात्यथ
निसर्व हस्पिन्दुयगस्र नविवेमानस्य हिजमदूगीलाकस्य पुस्थानिपनामुष्ठा॥ गा
नागेशानामहित्ववसंतक्षोविलाति गतकानिगुणनसोम ४॥ अमितिविद्याक्रमस्य सरुसरज्जिमेयहीयनपृथ्व्यगुणाभ्रक्रय ४ म ४॥ हस्तुसवावा ४ सावि वानृयाप्य पृथ्व द

यू १ ८० यां स ग सौ न्य न ना क्षि य क्ष कायु व सा दा नू द्व क्षा यि नो शी शो ॥ ये सक्ते ठा न व ना म गे ल्पं नाय गा यां ति ठ मा स व ग गा र स्या न ष

ना ग क्ष ण यां जि ह्र मू छि म ना ल क्षी नि य धा १ स नि म ॥ रो त न ना की की खो जा ति म न स स्मा न । म रु नू स्वा न रा स्रु स य प

न स वं ग्या व जा य य कु र गा म न ग्रा क्ष ण कु य ण व ना १८ य के व्या र र स र र ति दा त ज्ञ म दा क्षी त्रु स ज्ञ न म न व न दा स य

ति ग्या क्र य वे ग्वा स ग्रु स मा द दं ॥ श्रू ति ३ क्ष ना ना ॥ ग मा द स्थि मि न ना र रू न पु ष्य व्र र व [illegible] वे ना ला क ग्रा य म्र

नि या कु का म य ग्रो नी ठ द या गा श्र क य मि तिं ति य का यं व ता यें ॥ ता ह ग म त नि र या वि श्र ग ल्ह ल्हि कौ चि ग्रु ग च र स ति र ति य श्रे ते

कु । ग ग्रा सा व र

केवर्त्तप्राक । तदिदमनवगमया ॥ शुष्कतृणात्रणमया ॥ स्तविरावमहर्षिपरध्यंकुतमाषभिज्ञआ ॥ अपकुतगविविदीमकनाकालदुनीरीव

तमकुशानिदमममदितीकेवलाव । वहुश्रीमनत्रकाश्री त्रदानागयदा ॥ स्तलसमदयभरीवगयंकुमाषपिज्ञआ ॥ गम

मोन्या ॥ ज्ञानकलवज्ञा ॥ पीनमूख्याध्यकीउत्तलाप्यूति गमतसाविनपुरुनोसम पुयनुयाकु किमारिमुमीक्षमलनाज्ञा

गम्भोध्यामिदमारिकूणावनरूणि । अथतस्यनाक्षोवा नरूपदर्थरिगगनवुश्रायपुत्रादवासमूनपन्नकोरूरुलासिकथापु

स्मावागगीपषदिपयेपक्रदनः ॥ नियगतिमिनचन्द्रणावसहदयगनीमुदमूर्जिवानिवरावतिममकुरूरुलाकुर्तहृदयमि

काव्यविप्र · नाकानं ... न काव्य ...

नमात स्वी सो कवहमान तिकै गरखुतंडदाशिऊनवान् अभ्रकविर्ष

क्रिंगयमुखमं दुकोन संयदावां धिगगन विवृस्तक्षतसमकृद्विनं विषमयवला नमात ... सुमृयकृ गंसमान छत्रदानकीतलवान्हाकसाक्षनवावि रावकोश्वीव

कला विकल्याभि गम विमसलम् नमकिं गुणमालाल्यादुा ... सौं यान्नगं नामगहद्याथापादि अमदग॥ दचान्नदस्थादिति गद्यना

जा रवश्रीचरित्रं श्रीगहृदये कीर्त्यमानानिश ... त्यास मिन्त्रिसुमृथमृमृद्गुणपाथिवग्मशा नासीहृथमयालसमृखर्प्रेतद्यर्द्ध

सोद्विशालदातावर्तमानसांधी॥ख्यातपुरजातंतद्दिवरखं॥ अथ कदाचिरुममहासखस्य राजतन्त्रकान्तसमागद्द

यालोरपनारावादो। सर्वोपि इ८४वंतगणकृशाहेनाक्षीपिवकुहाम नगो हृदयमये॥

xथमामर२ · १३३२ · थमर२

नूलियक गम गु ध्येकुग तादानमू धायकालि गं। मपद्धि गव ०६ ग [illegible] नत सर्वधि गुथ सम्न दिग ॥ विविध रक्ष लोक्रादि विशेगदूष्य ॥ स क्रा
नादि जृरिवृद्धि का मी स्ल नाग्रि तिर्दम सर्व कुशवन प्रभू ॥ कवृद्धलजह मक्रिदगाम ॥ रिक्राथी। समयस जु मान काछ कयाल
क्रग॥ अगर्कि गाव बस्त धानथी प्यंस वैश्या ना [illegible] ग मपु ॥ मथी॥ मजाव ग स्क प्रमा ॥ नारि जागस्मे या क सैस कं केना ग्रपस्ने [illegible]
यमाव ४ यायी याव धाधि तवस्य गौदान संपद म [illegible] भ्रमो न कोद्धि ह्यापं अगनापनं ॥ द नुमन्त नाव घ नदंख्ली प्रवत कालाक
तांसदनमंतक धीत्र प्रमाति गाक्षिन स्थान ॥ दथं न सद्रागित पनिश्रीपनव कमाहि निर्मन विस्नू नहि वन देउ नगनाविगं॥ [illegible] स्थवा॥

नसल्लुवनाध गाकअं रा याद व्यागर्भिसयिउतिसावमय्यमयं ॥ ...॥ ...नि अष्टीजा...कवउर्थ ॥ ... ॥ नविरुवकमायकयामह्यागयावा
सुदानवेष्ट्रसेमयमानिहत्यूनूसा ॥ गत्रयानू ...यगा वाधिमसवहन ४ कितार्थरगवानू सागगालकृतविनय... नाविस्
सादिगुणसमृदिगार्थदाषयमा नोविरुवर्गष्यदासका ति थिखादनूदन गनातसक्रोताकदिगार्थप्रवृत्तेदायक ...४ ...वरू
व ॥ मातमोदिदाभ्राविष्ठ्राश्विषकृ...तिप्रकासतानना ॥ ...प्राथे संपक्रिविमा ...गताभाक्ष्यीकित्रुवाषस्यविकामस्तउमयथथिनी
दर्गतमासगस्पगथाथिनादगेतमासगस्य ॥ दहीतियाद्वैक्षनियनार्थमृज्ञानस्तीभिनासीगदिउभगाकं...गावकागमादिवरूवाविकृतसाथे
विवानमयारदेस

कान्त्वमर्थेसा अथवाविदानीमहाणपदार्थद्धक्रियमेहमानेनंकेनविदनूयपयूकान्त्ववविनश्रूद्धगास्कक्ष्यवतासोहृयम्तर्थानीविद्विगीयूर्वेम
वमेद्वृचिनामवयोताउहस्यग्रमेनामम ॥ प्रदानस्कान सूरवाविनाग्यिरेविंकामेर्चेत्राहियाम्यामकृस्तकर्यंतावियानीतृनामर्मा्ध २४
र्येनाथ्येयासिगाथप्रक्षमिवागगाऊर्द ॥ अथमवाम्रित्तरेव स्वत्वयावथ्पमादनाह्मादिनंविमार्देदेव्यक्रस्यामव्यवस्थांया
तायनानयाविरुयानिविगानायेनप्रमह ॥ नृवेइक्षवंयावि उमितिवगम्यर[illegible]तीयावतकेश्वनूकम्यावरत्व ॥ स्पमस्मतानायी
वनकजनस्थागगादिक्रियावेजयात्स्वयमवर्णद्रक्षेरुण्ठतकेदाग्रक्षप्रतिगृक्षअस्यहेहृवाविक्रयायत्तृश्रयाविरावमात्रयार्थयेजनप्रणय

प्रकाशयेत्

पावसात्राकादि गौग्निण कृत्वा हिमावदात ९ निरसनीय वायुनान यज्ञदानादनिकयिग्रामया॥ यम ७ संमूर्द्धायधिरुं यत्नौरुया मर्नेण वंदनं तु तिगू

रुवानरत मलिर्छि आगतं गौन गमाथ्य नाव्यमत संमुक्त लाड त यज्ञ मुरुकर्म कार॥ य ग ७ ह दानेन्न रिवर्भयाव कावक्रदात सतामव ह २१

वा हि यूनयन। मनकुर्थीना पायसि मत्वानिग हादि द्वेकमथ। श्वेयिश्च ह्नि ण म्मम॥ ह्रथ्वम तिसं नाश्व ग कालेवास्यविरवसान मप मं हय

ॐ माध्विलोयगत्रे वान्न हेथ॥ गदवं तदि रव रुयाम क्रमाद सप्तकाम यायावा यदाने वैष्ठ यमूययाणि सतुनुया ह्नणि॥ ॐ॥ कानि भगु

ध्याकुशाग कायन्हमन॥ ॐ॥ गौर्यं गजगानामयि सर्गीमहात्म्यनीध कामदरयादानपुव हिदक्षु कतेनाम मनुष्यरतीननदा माया समा७॥ ७ दूपौ

नुछुयगेकामिंध्यिदनथमयगनयुदगमनारूबान्रूठणगरुगरुनानिवाको, यथ्यरुलतिवेदूर्यंतीलगुविमलिनवाहिनमसनिगुविरुखिनपर्यनामदभ ६
घताम्कनणोमुखमिहयगंदगनीयथनतिगाह. गयक्षिजनविव ६ निगंवाषिमरुव४गजमवरुव॥ मसरुयागाध्यपृथसमयगवलपुकमीढियूं ६
ननेवोकामा। स्थुगक्षिगा४कुडमरुगेनगकिंगथवानगक्षिनक गनाजतीलयु॥ खवमोडिनसाविगिदूनरुवृकलगमातिवकुयुकुछुरगुरु
नवियुकुणमकेनेक्ष॥ गेषांमयुयदोगगनमनावाकायेकमगिणा। श्रीमुक्षिगिगदोनाम्या४आयु४गिध्यहयाहिमध॥ गमथुगुणातिगुमुरुगनम
रुणोनथल. विलमघकनेमयवछरूदयाभुय४मलयावरुवरुरुडगगानावानरथ॥ गेयनस्यनसमक्षनिवछमस्रुरुयवावा.भ्यामयपुणयमसंमा ६

कल्लोलनर्तितबलाकतिरंगरूर्मिमालाविलासैनाकुलितगयस्यकीर्तिगतिकलाक्षीरस्मितरागेपुष्पस्तयन्त्रवार्तिकलविकसैनानागरहारिरयक्षारितविमतस्य
तिलागयच्छगिरिकानाहीयमध्यममनारागमयदगियारीया जयामास॥ स्तनन्नमसमागग्रसनऊनयसाम्यन्तःनेवस्थन्दरूवथाम्निका
तिरेलीलगङ्कगमा अगतनिरयगवक्षिपुष्पिस्वरूपानियम कलासवनेयातनवन्तितिनिगतवत्रुछिनकिरिर्गमाविरलीनतिसान्वसम्पूग॥स
यसनलासनाकिरकाऊयारवतिनिवसतकातायस्तनम गिरिशलनयधातलोहितमनरतस्तनस्थविनागविततस्रारिग्य स्वाग
गमानावस्पृहतारिस्तपहिलनयाप्यारिताकिहसेयूअपमिस॥शहिपिलनायपूकगमंलवयागामायप्रतस्वकडुपन्नतेनवञ्चनाहानणवस
[illegible]
कुलमनतसम

रुनैतदेव धनानां पुनस्थित । तत्पुत्रिका मिसमात्कयाय स्थवरः मादसगार्यो येनर्ये गरहकृत्तापि शोभ्यमयमाना अपितु कर्म कूपिकामं मद्व मगदी इदं नं तु मयागितां
त्रिमे मदतिय कत्सवा धना अमवान्त्या अगच्छत्यु । यच्च्यात्र रावान ॥ गच्छतानीत मान ध्मन वे यावद गान्धयान्त्यानि त्रियकदश्च स्थयनं मामातिक
शुगशा मदयं गच्छन्त स्वानां बच्छदूदयकृता धनामृ गमाति ऊँनश्री ॥ यदि धर्मम सूर्येति नाति आलं मध्य मतानि सूयु कुगाम्या धम्म श्रेयुसमेक साहि
धर्मम म्लेम गच्छत्ति किंच्वयना कामकं मत ॥ कूमि धर्ममि विना ध दृष्टि नाधाच्छ स्ववामिक कूं नाम वानुरा ऊँग ॥ यानि त्वयस्त्स्वा भया हि धर्मे तियमा ।
नास्ति मर्त्वा न्यय प्रातिष्ठो ॥ नियगकमेणं इयनाराव सर्वादन् गायामन मद्द्वइ गा गिच्चा । कूमि धम्मावि ना धेनराऊनगा नम्र स्वाध्याय मध्यायन्ध्रयस्त्राः ॥ श्रीयव ॥

मरीणां दत्वा स्वस्ति इष्टा गामा पिठ मधु पिव्याभि ॥ नियमाऊर्जनं कल्पादि दृश्य ध्वं मवन्न अभ्यासं तं करत्संभूत ॥ स्वयाम नयि प्रकना क्रियाणि द्विर दे भाषते । यत्रिमात्

वि द्वै ॥ रुद्र मंत्र कृत्वा केकयं कव्यायानि कल्पडु णयंत बृहद्यामि ॥ विश्वपायांत वं जानाधि भाको दुर्णकं कस्पूयलवक्तस्या गिभातं ३॥ वाकु स्थान नव स्वस्त्यर्धं

मि ॥ स्व पश्च सप्तकृत्वा मदंमति वाद मार्तकृत्ते लाधिवर्त्तनदर्पः २४ रुद्रंन नार्थं व्यासनंत कृत्वा गारिमन्कादा स्याद्धाभावका ॥ ४ प्रकृत्स्नर्वत्व पुरा वका मत्

रुद्राणि ॥ मन्त्रान्मारुद्रजा धामतत्यर्थ्यप्सभाति नामप्रवा विः पत्तेयं । कल्पवाक्रिय जतिम्यर्थ वितर्यं वकृत्वा बद्रश्व विनि स्वयां त्रितर्यं ॥ संतुष्टात्मा

न्यायात्पृथिवि कलरवंवतो । शमीदतिय ध्यवे ॥ क्रिडिवायियथकृत्वा ॥ यवप्रसादा दिहाद्यानिर्व्य भवमवतो नाम कृत्वर्त्तासंवनरा ॥ अश्वमशामिद्रज्ञ त्युरस्यवंनकाम

यत्र वाग्मिसत्वस्तवक॥४ कितार्थरागवान् लोकस्थितार्थ सत्तानाश्वतिवहेमान ध्वनित्रगुण विशुद्धरितस्थि [illegible] तितकरत तमनूतमर्म महत्स्वाङ्कणकु
तंगुणगतमिव [illegible] नन्द मलयनिपूर्णपूर्ण तुलस्पन्द॥ मा ४ तमत्य ... तैवास्यतंत्र कान ॥ मेयप्यमेक्रमंघ [illegible] तास्थति विहितानवाय्यजानम्मादीन सू [illegible]
कृतानतमीप्य सा ज्ञान वेदान कृतिन्नक कल्यवाप्य विदग्धगम सा ... मनुष्या सार्क गुणप्रिय देवोरं तिन या [illegible] यथाति या [illegible] मालविरदला [illegible] पदवाधन
सत्राष्ठिमहिज [illegible] म॥ सवर्क्षमितगोष्ठि नद ततिवगौ [illegible] तमागाना ... यानग्रिपीत गुरु [illegible] ज्ञाक्रदयासाहमययासकृत्याङ्ग [illegible] महासम [illegible] वारिवर्म
तूणा विकृतल्या गहाय यतो ६ प्रकाशैरूरुणागमोत्याकषिकत्थ [illegible] निमकम्य संवर्गाडिग्रहसस [illegible] ग्रामिककाभिविम्ब॥ ३॥ [illegible] यतमल्लात्मा कृत्याय

र्वैर्नवेसमनस्यां पुनस्यस । ग्रग्रणि नार्गसिश्म हत्याम स्थान रू नादय भर्यांपिर स्थं गत्हत्तकं नाविहत्रकुमयमाना प्रविदु धर्मम्हूणिकाम भवम कम गिहकेन्नन्तु में सपारा
तिष्ठ ममग्रणियकृमवाष्मलो जामब्राहत्या ॐग्रगल्या । यद्यद्द ॥ रखवान ॥ महलोनानीहमान स्थानवैवासद गोमहया नवातिरिक्त दष्ठ स्यय नवामातिक
वृत्त आगदर्यागत्लल्तस्थाग्रानबजहृदयकृत्ताधता ग्रगमाणि ऊन ३॥ सदि धर्मम्मृपिगिनाचित्र गाहमयगलाहिम हस्पृष्क गाव्य अम्ब ३॥ सुप्तमिकपाधि १००३
पममानांपंगाग्लानातिच्छिन्नबधनभ्रान्तम ॥ कृणि धर्मवि ३॥ दृच्छ्रिगाखाकृत्वा मर्कृष्वनमवानरऊयत ॥ याव तप्पनरस्वाषणावाति धर्मे तिय मा ६
नास्ति सर्वांदयप्रतिष्ठो ॥ नियगकृयग ४ यनारावस्यादन्नत्या यामनतसन्धवहृगतिस्वा । कृणि धर्मवि नाधिर्नराऊनो नहत्रवायाय मयायद्वयस्वा ३॥ श्रायव ॥
५

हस्वाग्रहस्वासूर्णी [illegible] गमस्मिदमभ्युपित्याणि ॥ तियपार्जुननदगा [illegible] रवंव भुवन्नेक्यमतेदवाक्कटू ॥ न्वयणनदियपवता [illegible] याणिविरावभोयते [illegible] निवाक्कू

[illegible] आस्त्रवमप्र [illegible] पञ्चदायायविकल्प [illegible] र्यन [illegible] यंणि ॥ वियमायानि [illegible] भाकृ [illegible] यनव [illegible] भिमाल ॥ वाकृ [illegible] नवय [illegible]

मि ॥ [illegible] माविकाहस्मानकुल [illegible] विवलनदय्य [illegible] स्वनना [illegible] नन दिन्यां ॥ [illegible] कदा [illegible] जमावका [illegible] वत्ववनावकामह

नृयामि ॥ नदमनिमाल्लद [illegible] नामम्हरवाशि [illegible] नलयी ॥ कृ [illegible] नलयवाहणी [illegible] नितयांतितयं ॥ [illegible] जनग

[illegible] विकढ [illegible] वते ॥ प्रतीद [illegible] किंचिधाणि [illegible] यनपुमादाद्रिक [illegible] भवलानाक [illegible] मामामि [illegible] नमामद

गमनाय नीयवर्षां [illegible] न्तराननुकाल विकीर्य मार्ग [illegible] कनं निकुम मर्गीनभागमर्तानि [illegible] ॥ [illegible] समकामान [illegible] लोकाय [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] मनाः [illegible] ॥ [illegible] ममाना [illegible] मुखाय [illegible] तामन [illegible]
[illegible] महाबाहु [illegible] देय [illegible] रव [illegible] नाति [illegible] ॥ नाना [illegible] मानमा [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] मानतानाद [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विसमयाय [illegible] कममि [illegible] नात्याइ

[illegible]
श्री [illegible]

थकृमवअपृन ॰ सनीरिमान ॰ श्री हलारिवाग्नि ॰ श्रीरियूअ ॰ महासर्ले कमलयता लक्ष्मी सम छार्या रासूना ठुता विरलमर्णलि कं गात्थी या
लिर्थी ह्वयमवद्वैतं यग छत्रिदं भाख्य ॰ सँदर्गा या मास ॥ यथ्यन्त यरावे नाम्नि रुणात्यतिवा नी रुवी ॰ समन माद क्रुध्यकम गिवृस
यनीर्यं कर्मावदान मत्य महासलेय ॥ थ्यकौवर्णानन्तय यानानीर्नं निभूरुम आगिथिवतलनन निर्मात्य मर्थीवि मकम्य माना नालय
नित्यकमसान सत्वा भा जाति ॰ कर्य गद्विनीषि कवदं सालो नार्यन गस ॰ याठवक्र । वित्यर्ष्यर्य पृथ्य मन्दारु नाण प्रस्या दक्षा दवगानी
नृणाक ॥ अहांव गगुणाश्चासवाहितायिर्य यमति श्री अरुसम दरुवाल्लर्लक्रि यीदार्य णरुणिनिगर ॥ अयणक्रफलक्मारिणयाविथ्यमयनार्थं
गुरुश्रीहालेनसार्क ४८५९ मन्दनाथैलाहुं ~ श्रीमन २

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वागागमनत्वरलरवाव ॥ [illegible]

मीयदार्यैरव तंवतंवा । ज्ञामानीसिद्धारवता व्यगा हि कस्मादनण्य प्रमर्गिकनामि ॥ यनप्रसादाजिता रौकव क्लिनगन्यमान रम स्व वज्ञातेन । कवलेरछन्ये ६

मत्तुलामवैस्यस्त्यसंवमत्वेनितगति ४ सकुनास्तिमत्त्यान्समभूतीम्यावींवदनः ॥ मीतानितिविसानलोकिंगांवाग्रासीत्यूतावाह्नतमत्ययगं ॥ ५

अदसस्तुक्वाङ्क्वसंपकमत्यालब्धामर्यैगांदिंदमहदुक्हो ॥ अथमूत्रलाथो नेयस्यथवतत्त्वमत्त्वजाकछ्यमहसत्वप्रवाससमयूनसत्तनमादन

मित्यवाव ॥ नृकोक्तंगोंभ्रंदथितराजनक्कनाचिमेत्यकूपि कोथ्यगक्कन ॥ तनसिद्धिगांवाक्षितमायूंयुकृवनेकुतोस्मिन् रुद्रवासवामत ॥ ३

हृत्कायनमप्रीतमतागदसेतम् यजदान ॥ अथवाने नश्वपनियाकर्मुणाद्वयकृष्णजानमार्द्दवातिमतश्वभिलानुकूलेनीजिगानीवा

निपिङ्ग ॥ थ्यपिनकवन्धनमूलाशिपित्तीगगान्यामुदत्तासु व्याहायमाक्षनिप्रहमनमृवांव ॥ ग्रामालियकान्यदर्कमनोर्द्धकायाध्यसतसंगम

सोऽस्य गागाः ४ं ॐ व्यक्तिमंत्रकृ विदाम्न निष्ठ शुक्ते नदं गुरुं वस्तु वास ४॥ अथ ये गागः समर्पित स्वेन सूर्य वानक्रियानतार्थे सवकू मानसदीरु माण ४ स्वनगतौ लभ
यंति मनुयामास ॥ नमस्तेति सूज्ञान तितात नकुनावृत विवृद्ध स्यगतस्य केवल गतौ नमग लवततारिसं स्कृतं मभायसृ श्रायत पावनं वस ॥ ६
यान्तिय स्थिति गसाधतं धर्नं संगतिसृकै श्यम मातो यानचाति दसदधिक कृ धर्न प्रगीक्ष सर्व सामिर्दयकामम ॥ शक्र उवाच ॥ अन्यथा ६
चिवयक्षावक्रयोद स्मच्छिपे ४ कथं ॥ ॐ निदर्गिनसी रा दृ कथं के करणं वद्धि द्वेष ॥ गणेश उवाच ॥ उपपन्नरूपमिदं मासमोवोक्त काल
प्राप्य प्राकार्हं देवनावकृवानाकाम स्मेदनुयस्ता यया यावत्कु गदिव दात्मानुसूर्यो पायमामासा दयामिति ॥ अथ शक्रो देवानाहूस्य सराव मवस

मर

लेखयकं ॥ सत्यकाम उवाच ॥ वरुण १ गृगीअमरवन्नतमस्मरंति लक्षनन्दाइयमापुत्राकं । अधीतता [illegible] लीप [illegible] सालीयमस [illegible] यन्नयमं ॥ कामदेव उवाच ॥

[illegible] यमलानस [illegible] यम [illegible] क्लारि [illegible] यताश्यमान ॥ [illegible] माना [illegible] नानिल [illegible] विसाधमामाम [illegible] ॥ [illegible] उवाच ॥ वि [illegible]

गे मानावयस्याछ्रियाचेयत्त्व भानीयतनाप्रियस्क्षी । याधिल [illegible] यावद्धिप्रस्थापिविताव्यरुत्री ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible] कीर्ति [illegible]

सास्मगीयसा [illegible] धर्कनाउ । सत्का [illegible] द्राम्‌दम [illegible] विसान्वय [illegible] धर्मं ॥ [illegible] धर्म [illegible] समा

[illegible] ता [illegible] यकृद्धिन दावान नाकि [illegible] यस्य [illegible] ॥ [illegible] विद्युज्जियुद [illegible] तिगयथम [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

गेनगक्र मीराघणीगेनमहेवरत्या दगाद्धर्वं दववनप्रयच्छ ग क्रुद्धवाच ॥ श्रृणियक्ष्यागच्छवखवत्तूपपीषंप्राणि ॥ गहस्थगोगावग । किन्नश्रोनाल्छ ६
वाकार्षीद्व दकोऽप्यपकारणीः ॥ अथान्ननूवयेनात्ति धीव दगलनालमश्च ॥ अथवाशिसत्वश्चसञ्जनमाहात्म्यमस्यप्रदर्श्यन्नूवाच ॥ अस
गौर्यामिमनमधीनदर्शनामवादिलवगमति श्रम्वजाति यथेननवतुनयाणिय नान्यिगेनवशिना ॥ दवनमयितेस्कामकनीजतुयनि
सांतिवायगहिर्ति ॥ अन्नुलोत्वितयन्त्रणमस्वाकामिगित कृपियरसंयोक्ष्यग । स्वनिममपुत्रापक्ष्याविनीतमकिमपि पुत्रायदरात्ति ॥ अथ
येनगक्र ॥ तापूयपनरयाशिनामि चारितस्थसुमाशिद्धकप्रसादश्चपद्वलेनलाप्नुनिमहयातास ॥ कामिस्सनाम्रसामत्वान्तसवदकाभवतमदत्तरुव

कांड ३   कोटय   ५३१

स्तु नमस्तस्मै ॥ येयं पुण्याम प्रसामृनी विस्तृत निबद्ध ॥ अथ वाभिसत्वा किराण ३ उच्यम विस्तृता समृत्व दिनरागाविन सितिय भिनीय ग्रंथ नियाकृता कामायता ।
नमस्तस्मै ज्ञात्वा तीव प्रकाना त्रिम विसदृश्यं न नृत्यत्व व स्थापम । ग्निन पतु व ॥ प्रणत कारता स्पत्कृत नवद्युमिति वस्तु विनय त्वं मनतायी स्वत्व विवी यथा ।
नाय विमुत्तये ॥ यो मनस्यनि स्तानाय क्षेपण न यानमीना गम । यं ननि वदयामास ॥ कृत्वा मन्त्र त्वस्य रागरानन्द नमन नमः स्तोत्रा ... मिनन्यमाना । १०८
कस्मादिनं नवस्थान स्थानृत्वका मत्या विमरागमनादत्य पृष्टः । ह्यवस्तुभवतामृप निरुपमायानीत्यं ॥ न वद्विगीयमानीयं वसुर्धाय वेदि विशता कानस्य
गविमद्रूयं गामृयं निदत्प ॥ वाधिसत्वायिवम स्तामत्व स्वयं वनि । संकारा य प्रत्यता विस्तारवरतूव ॥ मनप्रमत्कारानवयं स्मन्मृताय्य प्रभृत्य य प्रमता । जीविताप्यपिना ।

स्याभिमतस्य श्लाघनं पादवृत्त ॥ अथायनारूढमर्थं अर्थप्रवर्तनार्थं पृष्ठ यस्य कार्यं अथ यथा अभिमतस्य सायं ॥ श्रमतां समति गणादेद गृह्य स्थितं दृष्टा तान् गात्री नयनी कामरूपाल

स्याभिमतस्य श्लाघन पादवृत्त ॥ अथायनारूढमर्थप्रवर्तनार्थं ... मध्य यात्रिकवाल्यैर्य युग नाम तु णमाखितवद्गुप्रिय दर्शानमूर्य श्यायवानयन ६ स्तनं स्तम

नयतं यदि मानवहृन्त्वगारामस्तंवृक्षस्तवनयमाम्यं यथनिष्कीर्ण ६ ... समुत्सर्थयर्थनिरूर्वीति ६ दयामास ॥ अथ यतः गायता ६ यन् स्वनमीदृग्मतां कीनमस

ता ६ किंसिद्धमिति कार्ययनिमित्तमनमय कृत ॥ गम्भावाभिम ... क्रीडीत्वावनताव दना ६ समपिष्टता ॥ गङ्गपुराचाक्षतमाव गङ्गानगति प्रियया ६ कृ

तावयन्तं कृत्वाक्रियायां समनृपकाशमेव गा ६ कार्यं कथमिष्ट ... ६ नामान्नविभुद्धिकृत्वदर्शयन्तु ॥ य अतिनयामि मैव कादं ॥ समर्थक्विकारतनणैस ॥

गन्तोपि प्रतनि ६ यमदर्श्य जगम्य ॥ अथ याभिसत्वैस्यान् ज्ञाप्य पावमा ६ नामान्नवि भुद्धिकृत्वदर्शयन्तु ॥ य अतिनयाभिमैव कादं ॥ समथक्षिविकारतनणैसला ६

इति

[illegible] ॥ [illegible] नैवेद्यं [illegible] देवानां [illegible] नैवेद्यं ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] नैवेद्यं ॥ [illegible]

[illegible] नमयामास ॥ [illegible] नैवेद्यं ॥ [illegible]

[illegible]

काव ?

मवाप्नुवनि स्वर्ग [illegible] यनाहिंदगाद्विय [illegible] वक्रिम्म मद्रनगस्याह ॥ गङ्कत्वा [illegible] देवानामधियतिद्विसप्यवसात्स्या [illegible]

सवकूमानम [illegible] प्रगत्पपुनरेवाव ॥ [illegible] नन्दन कुवंमवन । गङ्गनं [illegible] मंदरा [illegible] ॥ अथवाधिसत्व [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

लो ३ श्रीमत्स्वतंत्र

ष्टुनिविष्ठ्ममृष पक्रूष्यक्रूपर्ण्ठुऽमत्ताहद्ध गाजियं मपनाभ्यनान्य्क्रमनराविकक्रू॥ पक्र मपक्र मादिवसुवामित्रत्वरामीयं धूर्मै शुवत्तार्थमयकऽम्म१॥स्त्वे त्री
भ्यनाय दगाधुद्धकांकामादात्तवदगनीर्मे वज्रातर्यां घाविवं॥ कर्सगार्वबल्लूवहत्ताकहत्तलयत्त कीसीध्राद्धि दाभावगाहनीमूरा समपुसादयदगीय
यद्धांगिताप्याक्रर्मबकात॥ सायं नाधुदासीवद्रमानावनागव पगमैक्षिवयधिवबात॥ सागसात्तन साविसान्पद्धश्यम हत्तल्यामितीयर्द्धकस्पृधुवागरि १००१
एदत्रहमाहुदिप्यस्पवकागमनूकाम्संघटकगडनकालीति॥ वप्राप्नकामामिम्म॥ता गक्रुवाप्रयाता काताध्य हामद्रिधीतीयपाद्धकमकेकौरिगुम्य६
मगाविसराग मकेकयध्याक्रममादायमम्यात्तयायदूऽमतायीविधिवत्यनिरऋध्यनारियूक्रमागिविजरात्त॥ गनर्वेयुवलानूवयनस्पनंददगुनन्यगुधम्म६

प्रभवा कालाग्नि कर्यास्य विधिन्न ततिर्न्द्व अतजास्य कसमुदाराननया विर्य काशिनस्या ग्रामु नुवनतस्त्याद्यस्त वप्रयु कत्यगएमनयच्छ्यगकाद्भ्वाना मीक्ष्रस्य द
नि क्रातिमिर्क व द्याशिछ्य मम ॥ ग के थी थ्रुनातिमृरवर्द्धिकवा यसकुष सं गामनकूल छ्ड्रम मातिगामस्वदकत मवम्ब्र द्विन्नपान प्रनसीवनस्तत्पत्नीरा
तिमिक मवद्विगमतावस्य व ॥ श्रुद्रस्य काददनानाम् वसं मय नामदव घ्रधनायपातिमा भ्रवीशुणसंताववताद्धि ॥ अयक्तियकस्यदगनयान्छ कामता
नि ममृद्ध यस्यकात्मवादिजानिमदलापयुरमृतुविमुयक्रिना यप्रक्कमतदत्तकगनायस्नानालंकृतार्द्धिवनम्यसंमानरामौनुकाद्म सघक्तन नाय
नतिवप्रकारतगयाम्वीनामयदगार्यगाया व्यार्थीधा भिस तयनीकार्यगजादवानामीद्व छुममनविगताग तन्यार्द्धयपामास ॥ उपपनगराहर इव स्पतिन द

यं मं शिवस्थवाक्ये भक्त [illegible] मण्यिगाद्यर्थात्सप्तमे र्के [illegible] यमन [illegible] मद्देवं ॥ ६ ॥ सम [illegible] निद्यय [illegible] ना गतिं पति [illegible] [illegible]

तावयामास ॥ [illegible] [illegible] यियास्तनि [illegible] वक्रोकाल [illegible] ॥ सापि वैते [illegible] नमता [illegible] [illegible]

दानानि [illegible] ज्ञातानामकेया [illegible] स्थपूर्ण [illegible] विस्मयादि [illegible]

[illegible] त्यक्तुंमवगम्यम [illegible] त्यागिंग [illegible] मति [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ तु [illegible] ॥ [illegible] ॥

यमूनर   1   यनीमयातिक्रियायका मनानथ्यमयाद

नानिरूपयरागमन्तुभकाकुलंवन्धुजनकुकलाानदउनाःस्यीनहियानिधीनाः४ सुखायनाधीनिगवावनातिायकायमगत्मथिमन्यसवंकीरहतीनार्हमित
हिनसुराकिन्नामनघ्यवगवगाकनेवंरावनापियिवृद्धि ४॥ वाभिसखावाव॥ कृत्यगांनार्थ्ययहितिमिकार्यममप्रयत्न ४॥ पूनः४ पूनजीमित ४
गीवइ ःखजनाविवयगुव्याधिविरूपगाव मत्नब्धमिव्याकुल ४ गावबृद्धलोकानगम एमतिष्ठिगामि॥ अथगकादवद्धानायममसजगां ४
धिगममतिकामयागुणितमाताहितहृदयसहरात्रिनिम नवारियमा दिवमानिपुकामिथ्यापिदपदसुबवनें वन दानन्तवाभिसर
मयानामस्याधमास॥ कथं गोतापसजनयदिरस्यसहराग्निपदकाभिकाथयवनमकूपाशुयादिकामि॥ अथवाभिसखामवरागमस्वयनामः३ मार्थनामनघ

२।। ॰ तसमदं त्वान्छ्रो धिताम्द्रेवकांथ्यवंवश्रीमिफणि चित्र जतधुनसवंत्तं तं धर्मचना यत्नौर्हतासमं गन्तसमुभ्रवत्ति गर्थ ।। वितस प्रतिलिनिर्वी
स्याथ्रया थपनाध्यै गंशङ्कुनातिम गंश सम्यव्कनिया त्या गन्तोत्रम १।। नर्वाहिक्व श्मान्द्र गता फ्ल क्षि धर्मस्य सार्थस्य सरवातसम्य । सूखाव
गाहू यथनापि तावक कङम कोगन्हमाव सम ।। गायश्र सागगय ३ ड उन्मास कौफलाक्ष्यि या गोमस्कोयधिपामततस १ गाकाढङ्रु मिनकर्व १००१
श्वतमथिनमकु १।। नकुकूगनवानपिकप्रिया गकुप्रमकगत्यद १ णममंत्रू रुमव माथचपितुमय नव उ१ रवाततिया गान्कनणल ।। ज्ञ आयिता वासि हछगक
श्स्यरुगाति नाहनिन नामर्ता स्वि गत्स्थिमां संदन धीनवद्धिमात १ कृ गजानमिवाप रुावी १।। अं आर्कर्म वं त्ति गन्हेनक्तागं ज्ञयधय र्ष वावतनासमीरवौं । ज्ञ स्मात

नृ० द्विन ४१२

नात्मनतयहायुगात्तकाम्मा छतं वी [illegible] मित्तुभक गा ना स्याबत न गागति ॥ मास्मार्कवयमथियखङम शूंति ॥ वाथिसलवडवावं ॥ स्तनयासाछिवं कस्यकामना

गाविवाकितद्युगाभिवमव्यक्त [illegible] गय [illegible] जाना ॥ [illegible] मिमयानिय [illegible] तालिकि तासु [illegible] य युगिजाननाधि गरुवत्ततवासवि तार्थ [illegible]

दगिहविगित्व नामगब्रह्मजामकृष्णं ॥ गतस्याथिजगवाव [illegible] गिव्यकमा ॥ [illegible] विरक्त मानाम [illegible] मिगृहस्थजतवंशवर्ग भक्तिरायगायमा [illegible]

व्रस्यायवडिजा ॥ गा कदूर्वकादिव्य [illegible] वेतान्वलायतकोव सोदत [illegible] वडिजा ॥ १॥ गच्यगमाभिन [illegible] नव्यस्य गानकोतिगाभिवविकासिताक

मतवनमा यथाविंसहिंववद [illegible] कमदवनमतिवृयामश्रुकरणागामा मतनीसतविलंमरुसनश्तत्वि [illegible] युधिविकमनारूस्य [illegible] ममस्य गूढ़ासंसत्विक ॥

स्मृत्वा विद्याजय्यानास ॥ अथ वा प्रियसखि प्रत्याऽगता नालि [illegible] समाहृत्य [illegible] नम [illegible] मानां [illegible] नामस्क [illegible]

प [illegible] विजसान ॥ अविस्मय [illegible] नव गीसम [illegible] नामं मत्तन [illegible] सं [illegible] नस्कानां [illegible] रा विमि ४ यं न ४॥ अथ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

मानभुसहस्त्रो विषयनिवासिनञ्जनान्हिसिठुमिति ॥ [illegible] पालकडवाव ॥ स्वमाहात्म्याधिगतश्वपुरुं वायमस्माकं महानाजस्थपक्ष्मगाम हिज्राम्भ [illegible] मंगुणस्य
वर्लिषकुणगुणवर्लिलावानुमार्गवर्लि नामो वर्लिऊर्घनवारुयन। वंचिमध्यकुणसेनकृति। धर्म्मकेस्थन धौतनामनि निकृत्ति पूजार्थमृषसं गा। मिथ्याक्वद
[illegible]
[illegible]
[illegible]

रावनाङ्गादशकाद्द [illegible] ॥ [illegible]

नरिम [illegible]

धनत [illegible] १२

राम [illegible]

नेकनाउनेग ॥ [illegible]

उगमम ॥ [illegible] ॥ कादिबिलो [illegible] ६

मन्यां कांचनाय क्लिष्टपिप्यमुर्णं नवाहस्रातनयाउवायतम्र स्फ्रि ॥ साक्षी तावननावदनानज्ञाःस्प्रगात्नीडानकेत्रवाव ॥ याद्दलोमयं गातमुणमस्त्रदावा ६
नवानुवउजिगायिस्वराकृ ६ फ्र दानीताइ ६ गळ्फ्रि ॥ अथस [illegible] वास्यामा गा [illegible] नावस्ता [illegible] ति स्मृति वा [illegible] कृविगारुन [illegible] नयया गाद्धवनगति
नायमानीत तद्यगुप्य मन य याभास ॥ गुरुउजिनास कीलनागुरु ६ गुरुउजिनामजामाना [illegible] ति स्वय [illegible] उमाम ॥ स्मास्वनमतित्र दिगास्वाइद्दितन
मनकुभ वनीरश्च्वावगाव गायानिदननतययावरत्व ॥ कोद्द ६ गाकृष्णीतस्पु [illegible] सावानायन च मनन कं [illegible] तमयरूायउवउजिगा ६ क्रिम्वा
गता युवसया ॥ गाइनामवयु याग ६ स्न ६ स्तकमान स्मसर्वाविता न्नतभ्रा [illegible] मिया [illegible] मनायन स्वम वनवा [illegible] मविक्रु [illegible] नत्वाप्य विप्रियं

रांगवांसनरूणाधिरूगनरवंविविक्तनिजंतुसम्यागस्मिन्नेनरूथ्यविचननेकाकाकथनिवितस्यांति ॥ सगान्नातोक्तवीत । कगायांरुगयानितिं ॥ यरूाडुरु १॥ किंवि
स्यानंरूरूपरूक्षांयरूनाकसानांबानिसगंनोडायुक्तनिनिष्ठि ॥ सरूायमरूयाचिस्तिवरूंमानाविआनय४स्वरूयपनेत्रयन४।यस्य४कथकित्वानिमारू
मोतिसंयादव४क्षणरूयायरूाकायत्यानमरूयविरूका सनेयथ४कथंतयगेनिकेननारूसमयसविविकगस्मिनरूयानंकाम्मतायरूानस्य
नानव४॥ ... ... ॥ जनरूरुम यननायंमरूगायनिवोल्मगे ... नयुगरूक्षयांकियन्ययोिकानांरुगतिं १॥ मैनंग
रूरूआनरूथनावाचांपिपुरूयांदेवा । जनानरूरूवकोयानिनिरूयाविनायरूत ॥ सुप्रतीनयरूाकरूरूरूतडांवत्याआपरूनायवरूयरूकरूरू १॥ गरू

शं ॥ अथ भगवान्देवानामीश्वरमाद्यं गद्ववनं च कामित्यादि तन्त्र गानन्दमानन्दीनां मातान्याम्नायादिप्रमादि तमसनां किं च वक्ष्य मयनाथमाविश्वकान ॥ उत्पनसं
स्यनीकार्थविमानिव मा तसना पंजगद्विश्वाम निरिक्ष्यकीकि विशुद्धिमि
शानन्ताथकिं च यत्पनी श्रीपदलस्य न । मत्यावितिक्रियान्यस्मा
मितत्वस्य समूपकजान ॥ अथवाप्रितत्वकदस्यासमदावान माक्षं ह्याति निरं
नवानिश्रमदगातिविमानि शं ॥ इत्युक्ता कानिविमानि वा
नावि विदाव कास्म ॥ कस्मिन्न स्मरयन्तु दवमा उ श्रीमाय पतेवमस्यान्नु यवि ॥ अ
गनवद्वमाद्याश्रादिध्वग ॥ नवान्यवीनवयंसत्यानगानन्दा
इत्युक्तं भगवान्देवी । महसीश्रमायस्मृकुलकिनारावियुद्धमसनवदन्तमवक्रमानमाराप्रवास्यि नंक्रमायया माम ॥ उक्तं प्रजतामिदं वायलं म मानिम्म म ।
यो

धिगाधावांको ञ्छ्वव कृतुम हंसि रात्रवानू ॥ तिमितिगोळवविं नावनीनां ख्यराञ्छनम ह्ववतिर्तति मवि । रुमो खैंग आला लगाय्य वकुम गाय्यदं गंवदतिमा सकामी ।
सकृती निदाद न व विक्रिमवनकामा ॥ प्रतिक्रुता रुचतीं, ता ख्वैदं जापकें रामान या
म रुगो रमामिखो नाकि मत्रेवातु दंक्ष्मा गंदंवींवि व का हरनं ।
निरुधावानन्द रुं आम्रेशा ग नकेदा ॥ रागिन्यात्यलवंरसी कातीकुडां कना रव
कामीं ॥ अर्दृसान दाापृ त्रा मोर्ग त्यायनकार्य्यपी. पृष्ठा ।
वत्ता गममपृ दोगवदानन ॥ कातोदायीव गळाट्र ध्याय गागिरि गिजानकें प्रहा
त्रवि त्रागत्स्यगिदोसायरुः वागागितिमिहृदा ॥ यानि तपाद्रा ।
॥ अरतागुणेत
मसाराकम क्षतविकागिगमं ॥ ःःःःः ॥ मतिविगावि तीमस्यमिवसजागकमादनाअव फ्र कागंग गोवेगंवञ्छ ध्यावकाकरूम ॥ ॰ ॥

दानकन्याः ... अर्पन्
जा. समर्थे.

स्थापिनाऌस्कन्दकलंथैव। कृत ४ पुत्रकृतं दक्षिणामसौं कृकगामक्रूकस्यपनामसगेधा। ननन्दृस्वृताधृतगासन्यत्यगस्यखर्तंकालवद्गुसगमकं। विस्यक्षुदर्पदद गावनास्कृ
नयधृतांस्यदिवादयम्॥ विनियदस्युदृस्यांप्रदक्षिधर्मायना १ धंनवकानकस्य। द्विताःगयवलादयनेपृनाश्वंपत्रीऊकर्थ्यविदु ४ पुजादृ॥ गस्यैवृंयम्म ६
[illegible] पुजायास्य ग ४ सत्य स्था [illegible] कादिरि [illegible] यवनिगाद [illegible] निशामनासृति [illegible] कदाचि [illegible]
[illegible] तामश्रियागिनाहविषयाः [illegible] नाथेयवकस्य [illegible] ४ यवि [illegible]
[illegible] नयाश्रियदामसृगह [illegible] ॥ नथ्यसलाग्रिसत्वनस्रं ६

समा. कृतदु. ६ सुः पुनः

५

जाग

संध्रन कृष्णकाल ॥ नैवासिकः सात्मसत्वाविलनैकवर्तलायानवकामिकथ्य । आत्माकारत्रिविदिवसैः कनाउय कृष्णविडसमाप्ति काविसार्थी ॥ [illegible]वार ।

॥ यद्रि दृष्टैः पाजगपैः मबद्धैः आम्नाउनम्याद्धव नाउन [illegible] नौ । कीष्कार्कु गमकर्मणजार ध्ययमम [illegible] विग्राध्य साधी ॥ आननउवाद ॥

सवृष्यमातीमपृथुष्टक [illegible] याम स्थाष्टक [illegible] सर्यामर्त्य [illegible] नउ । वैद्कसूदद्धस्वदमदकु कम् सीत्याद हा [illegible] मीकवयाविमाति ॥ [illegible]

साहस्रवाननामनयविनीतास्कर्म कामि [illegible] यक्रमका [illegible] मिश्रूदान्व ॥ यानस्थप्रियारु नशाम्यनस्थ [illegible] सकामाता यिमधाकामान [illegible]

स्तुतिगानवमस्युतवल्लयः गकननं [illegible] गम्या ॥ अथगक्रादवद्धसन नगम्यांकामायरागप्राणिकुत्यम्सवकनसय आनिगाय नममस्त्यादिनावस्मयवद्

गं

मानश्चस्ततेवबपूर्णा रिक्तत गागान्स्यीतशिगम्य सांमर्थ्यं वश्वावे ।मागाव स्ता ३॥ सच्चक्रियप्रवृत्तकामानसानामिरवार्थिनीनीतिमानामिति दा ।यान्याय कमिद्ध ।

लिताय १ तुमिल्यवगाकेनकामातितिकुस्सयर्ध ॥ बाधिसत्व उ   दाव ॥ अतनादानवामार्थकामास्स्वयतस्कुस्यगीयदारिसमीन्द्रकामान्तुसं स

तिमृतय ३॥ कामभृवकस्म्यपयागिवनाकक्षलाक ३ गोकश्   कमैत्स्यमनेकविक्रुश्र्वं ।कामाथेमृववमसायगय १यगानिधेम्मायमदनरश

मातनकीयनश ॥यत्तोढव्वातिसरुमाविनसीशवाति यत्री   तिसांख्यमतितिनतय पापुयाति ।कोर्ध्याविवियागमसत्वे १यनतश्चयागीयन्त्राप्नुव १

तिशृनकानणमश्कामा ३॥ कूर्णि रीनविमध्यमाकमानामिरुवामृतुवयद्वअयकामा ४॥ कुयिगानुरुजमनिवासकामाश्नयकातिति गकुनागुय

१४१

॥ २ ॥

आद्यं स्तंभय नमः स्वाहा ॥ ऊर्ध्व कालीमायाक्रमं क्रमर्द्धं वीरसमस्त्या । ॥ ध्रुवकं स्थाणिः ॥ अस्याः कुलवन्यस्तुष्टाविंशेत् ॥ ॥ अथ गायत्री नामक्रम कालिकामंत्र

वाम्बिरक्षमस्त्रियमहिलाकामन्नयाङ्गदानानुगर्धस्वाद्धयामसंपुटको गायत्री नाम ॥ ॥ इमं मन्त्रं कृत्य दानार्थं जोगिनिदक्ष्मनि स्वाहा ॥ ग्रामयेद्यवगती ॥ विज्ञ

नानाहरणाङ्गयात्रकामस्य नगावन्सर्वपदं वृक्षं ॥ ॥ ता का स्वाद्य ॥ सरस्वतिमनस्कोकनश्च स्तवयं तु नानु ॥ अथैन ॥ यदेनिर्गुणाभिमासा ॥ २८

न पंचवरविद्याया ॥ इ दामिस्य यतो हृद्यवनमासिन्स्वाधिष्टा काषिकृत वाम ॥ ॥ व स्व मानानुरूपं सर्वकला कनदं दासित स्त्र्वदिव्या कासिनं ॥ ३

मनुष्यस्याहृतानिद्याविकल्पं वि मे वन दस्थाविरुदनकृष्णा ॥ ॥ अथ गकलासादिवदनमतिथिस्य समानवचान ॥ ॥ सामान्य कृपा ॥ अपद्य स्रष्टाप्रितामास ४ ६ ७

[illegible]

ॐ नायमर्थिकाणि दर्शनं ममरावान्नयून नैष्कर्मिकं न दृष्टुनावबप्रदिष्टा शिगगस्थमसग ४॥ वोमिसत्वडवाव ॥ अलींगममव्यप्रणयन्तुंसमन्नूनैष्याम्यदंमप्रणव

नूंदृवनाउं ॥ नष्कर्मोर्थ दाक्षिण्यनवर्लिनीय्यवकमानविय ष्ठिग ममसमवक्षतकाम्यग्रावारवंरंवर्गीकिन्तु ॥ निनाक्षणेरप्र ममान्नूवाहर्णप्रसत्

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इत्याष्यतुतासौ कमनाक्तिनामीसमयुगामहर्उवप्रसौ र्विमानिंगवाम्लगयांप्रसादौ०॥ अथपुनरुवाच ॥ मातमुरंजवन्दनम्प्रसुकानिविश्राद्धिरकौक्ष्यमत्तारि [illegible]

मसुप्ती। कामवृतीव्रासकवादवप्रसौविमान्यरूर्धछिडमृत्वाय। ॥ अथपुनरुवाच ॥ कृष्णाणुप्यावाक्ष्येत पकुरूमोदुमादमानमकृतयपुजाय॥ ६

[illegible] वृप्यापवस्यतुमनामसक्रुविमानियसरूसरूदप्यादासौ०॥ अ पुनरुवाच ॥ तनाविपर्येप्यादितापवर्द्वैनरयचमानानगासातरू ॐ प्रकाशमनीया १०६

वृमनाविप्यालारादसाधीकवयाविशोति॥ अथपुनरुवाच। ॥ पृनाकिनाप्रमाकनना भियरम्यमहाधिनालस्मयनवनपृकृशसस्कानताधातुणपा

वनाकृतमवाग्रियानामाविमान्यसाधौ०॥ अथपुनरुवाच ॥ अधमयकमम्यगाषाणवंदनयाविमिताववयामरूष्ण। अकृतुणजन्मनादनामसमविमानसमात्

प्रा०

णौ ॥ श्रीवर्गोपिविवक्तृणां हव्यमसमानीतिनन्दाद्यासंशयितांगस्यो [illegible] णनत्यवक्तृरूपेधर्षविकाम्नूयनवदनानिहृ लानाञ्चवायक्षादर्पि [illegible] नावि वाणां [illegible] नतमं ६

कथनामपुत्रियास्यानि । नदिकमत्रप्रकाशै ॥ इष्ट्व [illegible] णैषि [illegible] वृत्तदाकृतनयांक [illegible] उवनंस्यैमरूडाकनयं । कुत्रापिकास्याति नयाययागादयातनमं ६

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सात्रमाम। ...पृतर्ह्यमिङ्क.तिदवामिति ॥ ...नरच्छ्व युविषयप्च्छ्यवाननाजमाय ...मम। ... ॥

[illegible] ॥ मायाति [illegible] ष्टिशिष्ट्व [illegible] नवनंप्रयाति [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] प्रयातिमि [illegible] मानमि [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ पीता [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नामात्य [illegible]
[illegible]

मच्चीमहङ्गति ॥ ग छुत्वा सत्राजा समरिणिमध्येनानब्रवीत् । अथकोहत्तेशजनंयुष्मार्कउपनीवतं । यावक्रोहर्गेमाभिष्यामिति ॥ यज्ञाह्वन्तं ॥ अयत्वमंश्मार
निर्मीमानिनवनार्णंत्राधिनानिवा । ऽऽव्यवयानंपत्राऊयज्ञागता मदूगवन्न ॥ ऽऽव्युवाउंक्ष्ककेनातवदनानि दीयक्षिर्गतुकर्णकेकेननीडेतयना ६
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

नमनावाबोधकृत्यां विनिर्मुक्तो । कथमकथयत् धर्मं विनाधि... ...समन्वितवान् ॥ चिंतयारा... ...प्रियधर्म... ...कथमर्थ...

नमोक्षं कृतं निष्कृत्वा लक्षायन्तो ॥ ...सवाद्धिमियम... स्वजनं दानं ... मानयन् ... ...

॥ क्रयनामविवर्जितो ... ...वाभितासदधर्मवाचितमो... तिधर्मपदन ... मनक्ष्म ...किमिमिप्रमाप... ...

जनोमुक्तमप्रानाननरुत्तो पद्मभिगानसंयोद्धिनाधर्मस्तवाधि । सिद्धति ॥ क्रयवाचित... ...

नयानि वद्धकृतातत्समन्यच्छन्तस्तु स्वरातां छायिनकृदयातमनगुमाविषादविकृवमस्वा(स्कृ)करनस्वारानयातसप्याराविमूक्तकथमउसावमवन्यज्ञ ध्वगुजिशोमपं ६

स्थवीतनागश्च स्यात्सन्द्या पद्मावीतमा। स्मिन्त्संग व्यान्क पश्च पुराव माहात्म्य मिति निश्चिन्त्यासनाडास्त्र नपप्र साध्व डिहास यावा। थिरत्वं हि नीचिवइ वाच॥ लायु
कुडित पुयुन वृद्धे साराख्म कयुन्त्रर्ष स्मिन्नाथानयूक मण ग्र वतातिनाक्रीन्द्र षूवन ष्व वं प्रणीन्नू पयानया सहु यस्स्वा। निरुपा स्तरुच चिन्तु। श्रम्यादित तकाथि
दूयना व्यमानानियम स्मान युपाक्रा न राडनी कृ ग्र्याता॥ यथ्य॥ नवं विविक पूनय पश्च क्रुगत्वा। व ग्मि स साद्धिप त्रिनयक श्रित। क्रुम धिसद्धायरु नं ६ १२०
छत्रैन्द्रा ते।गमकात्यनं किम्वत नत्रकृ स्यो ८ यावग्रसं शौ हिमन्त ६ पुमाख्व स्त्रोपमदोश्च गास घुरु न्ता॥ वस त्विर्यं तत्र डना न्तेनवक्रीसन्ति ह्विकदर्थे
श्रवकियतीनां॥ वाधिमन्तडवाच॥ यूकुमारु महाना डाचि कुशूयर्ता॥ यदवंगत ६ स्थापु॥ ग्र्यर्थ॥ स्यादत्र मय ८॥ प्रतिकूलवक्री दयाद्भव॥

दपुनिसंख्ययावा। यार्कीनमस्थ्य तं मउीविगोम क्षनाघनस्यन्व यानस्मन्नु रुः ४॥ अथसतनानगीतोपोपशायमस्यान्कपर पुत्नावहीनद्भ्रयावक्षायगोसदास, वेकरया

यमि नागवगगरश्चीसंदर्शनाधिकृतान् पूनुषान्तमादि [illegible]॥ गद्भोतेनपिवुउामसन्कपून पुवेगयत॥ गरुयधु व्यसायुदुडि गावाठसगभारिदुतोवदनस्मगा

रुयविषादविकृवम खीवाध्यापनध्यमाननयनागभ्रूयमानकश्रीगरुदाक्रिव मधिंलत्लाप॥ लोकस्यनामाहिं पना उिनस्य पनायरांद मिपतिः विं

वस्यवयस्यन्वनयावहस्यादाक्रन्दतं कस्यनगतनकार्य्यं॥ यश्चांविकानां वनलोकमात्मानसन्किवा मग्यूवगगीतावामरुमाऽौति तिमयुयत्वाथसंमाप्रिमनाथकृति

मात्रमेव॥ किमास्तेनेमीरागवान्यऽवंम हागंभिगत्वयेद्धतमौनजवपना यिमावान्न नूनश्रुनीमः ४ पापात्मनि विप्रतिकृष्यामाः ५॥ नियपतिभयापगन्तिनाविरु स्वर

कथ्यारिस्मृगतगारिथामत्र । डकृथ्य थामीकनगान्तिकाशौशाम ॥ छपूर्थकयथ्य । हूनाथाकथम्मोप्रिजागाविनयानयुंभ्वकावम्यमकवंतर्दसपैजो ॥ युत्नायकालोनयद्द

मन्स्नौ१साकीक्रिस्कृयादिक्रुविनयोमाना । छद्धयनामिस्यगम न्नृयानींदस१स्दृयद्वारहतवद्ववयानि ॥ तनवस्मयनतृकुद्धानामान्यतमावायाबद्द

स्यानाजावरूव । सगाहुसाथियत४ससनायतयुआगिगया । ६ ठ्यीकथींद्रयायिबकामास्याछिजवच्छ१ सदसिसेस्कृयमानामसतकूइवक्ष्यनयादगत्नी १२३

थ्यरिगाठवृछकोपूरुसानेकगाक्ताथागानियुनम गीन्सविवानु । वाव ॥ यनिमग्यर्गोगावद्दा४ड्सृतनियुतमगय४कच्छिड्यायायनत्तसीदसवयोदगीत

यथमयिनावइयगछनामिति ॥ अथ कमाया१ स्वे६स्वेनियराविनन्दस्यनीतियर्थनाजानमूद्भुआ स्वखाग ॥ ढेन्नरूगानिविकर्मगितनरुगा१ स्वखरुठयुणाकर्वभ्रातद्द

स्वावानयद्भगत॥ न ग्राह्यकासनसि गाव क्लिन गन्त्र्यावनच्छयगान हस्तक्षगतनयुनो कामुमिदृसनः क स्मिंश्चिदन्तर्ध्यद्भदत्ता कानयितुमर्हसि दव स्तुयकृक सर्वयन्निणमनाय
श्रुत्वानश्चाष्यणमम यिनामकोद्दृहलोत्या क्रिया स्त्रयहृतुगुणभातिकाय घृत्या नाद्विताकृष्ययानोयच्यतु दनः यायेणायचि विनद्वीसृखं दवनतमत्यकै यत्नाकृताउ
हत्वा कृष्णतिनश्चीसृखंमनः॥ अथमनाजा श्रुत्वा तगदिश्चनन काः ततनाति सन्तिकृः न गायावनस्यमानसनसः॥ तिस्यछि गुणा विरुवैय भात्यतकृमद्दयू
स्तुनीकसो गन्धिककामनसक ज्ञानस मुख्यमूर्त विमनु सालि समानि मनोरुनं मदृत्सनःकानयामास॥ द्रुमैकृत्समसद्भुत्वैघ्यनन्तिसनथाकतेः॥ गत्रेकाथ
मिवात्यवेशकृतनीवयाविग्रहं॥ विदृसद्वि विवा स्त्रीउस्कनर्गीत्कम्यकम्यिदिः॥ विसात्यमानाकत्तिनद्य मछमनसीकृत्वा॥ आसासर्वदृहनानि दै विवितक्रमदेकाविशा न
रुमिगः
वनुकिननवदनेष॥ रुमरणकामहस्र जुनि ङा

मन्त्रिष्यते कृत्स्नार्थं साधनमन्त्रादि दद ॥ समव्यत्तिष्ठ गिरि व्यतयार्हं सयाप्यभवनविसानपदंग सम्यग्युयलक्ष्गत्त गतं दद्दान्ति गुरानां ॥ भाव्यपष्ठ तु ॥ अथ तमीर्हं सनाह
विश्वसङ्कपायतिनाशकानाय मा दाद्धक मत सीविवन का सह र्हं साधियाति ४ यालानयवनणेन्मवक्ष्यु तु ॥ विस्म गायययसं कानासूक्ष्मविश्वसत्नकेभ ४६
विकनार्थ वविसकु ४ यमा दायनयाकन ४ ॥ अथ वाधिसत्वामा रहन्यस्यायिकस्यविक तेवीविक्षेययसतायतियातक्ष्गि रवावि गा ४ नसयाग्निएय ६ १२८
गीसनस ४ पकासयामास ॥ अथ गर्हं साधियातिवन्क्ष्ततूव्याथिर गहदयाराय व्यविनसव्याकुमाविनावा ४ नस्यनतिनपक्षारुगंपुर्वीनाक्कवसेनिकादिर
व ४ सम्यथेत ४ ॥ समुखमुर्हं ससनाधियागिर्हं साधियातिसमीयान्नेवविववात ॥ सिंहावववक्षातिहिमानसान्तिय नेमस्थयर्यंतविचिकयाकि ॥ ग्रा ॥ आर्ययादृष्टस्वगनेयद ६

यो स्मत्कृतेनस्यव्यसनात्किदैन्यं ॥ अथ बोधिसत्त्व उवाच ॥ गच्छ गच्छेति सुमुख क्रमन्नहविलंबितुं साहाय्य स्यादिकाः भस्तिकस्य वर्त्म गतमपि ॥ सुमुख उवाच ॥ नैकाद
किकामत्यनिहस्तिगस्यनगच्छ त्वं स्यादिजयामनदीं । सुमुखमृत्यौ सम्यगास्थानित्यमाय ऊर्ण मातदकेतऊर्म ॥ सुप्रानगत्कुमात्रार्थं यऊजन्हारबांधिय । किं
मिर्वदद्यस्थावनर्णकनमनम्हविच्युति । नेच धर्म्मामरत्नानाऊत्यऊद पंतांयवायदि । यागतिस्मत्वंसांभर्त्तीनावगतिवित्तमविर्य ॥ बोधिसत्त्व उवाच ॥ कानुयात
नवद्धस्य गतिना व्यामरुानमार्ग । साकथं त्वम्भविकस्यामकस्याद त्रिमणगव ॥ यग्यस्यवैकथेम्यावम्मममान्नदत्रवा । स्त्रीनाम्वाव न्यायाप्यमरयाऊर्जवि
त्वऊय । तस्मात्वनयत्रार्थतुमेमीवसमासमे । नादिनगर्सत्वजनत्वानामूकमर्थआनयत्कृवान् ॥ सुमुख उवाच ॥ कथं नूयनतदित्वास्थधर्मेर्थनसमीक्षसा धर्ममेकृद

स

याउयत्तायमप्पदिणयादपा०नाजाध्धसनयाग्यंकार्ट्र नमासंतंदसवैंजायेंमाद्दिदृगा॥ अमाव्यमूर्व्याधमसनशाग्यंकृवगासनंसमूर्वा॥ अथवाधिसत्व
४कातरूंदानीपुतिसम्मादिठ्ठमिति। नूपनानावमधूनाल्स्व णनाजानमावकाधथ्यतिकाकितिक गनगनंक लीगकूणलारुकं वदास्मिन्। अ६
जाय यिधम्मगनानमठुणकवियूसेनठ्ठसणीववाक्कानं४॥ अ६ पिवनलिपाहीरुन४ पुजातीसमयानुगरुतिय्युवकृष्णा॥ अरिवठ्ठयसस्वकीर्लि६ १३
णमरामनूनागंऊगनीहिंभादयक्कं॥ अयिगुठ्ठकयापंधीस्व६ गकिनंतूनकोन्नियूनक्रियेनमाय्येश्यसमवक्ष्यसंहिनंपुजाती नवनजासियंनारु६
वृद्धिनव॥ नविक्रमसंद्दनपुगायेवाणिमामनकनूये४पयाव्यमानचउयया सिदरासिदयानुवृकिणमरानिवविश्वमसमयीपुमाकनिडी॥ अयिधम्मसूरवार्थ६

सरा१भ२३क्ष९कुप्य२

विस्मय ... मास ... वीर ... व

तिष्ठिनो ऽथ स्कन्दवच्छानन वीन ... नष्टो विगता ... वदि ... कीर्ति सिद्धा विपूर्ति ... सिमेन सं... यन्के ॥ पृथ्वेतं स ... ति ४ ... माद रि ... मानाद्विय ... साद १

भूयूवाव ॥ अथ मकृण लीर्दस, सर्व ... वरा विष्णाति । ... ता का वर मी ... तधि न ... पाय दर्य सन्म माग म ४ ॥ ... यि या गव सै ... फ ... योद्ध न वा पर ४ ॥ को ... ६

न्नायम कामी ... दण्डु नारि ... ऊ ... ॥ न व ... मी ... ऽ न्मा द ... नोपनी ... व्यसनादय । प्र ... वाकु लि गा वृद्धि नाय न ... व का ... वा यि स ... ड वाय ॥

... म मा सीत म ... ना ... ऊ स या ... मय्य व ... यं द्दि । न वायं कि ... दस्मास्म ग ... वत्त्व यय ... ग ॥ ... व ... व ... व दयं त ... न्सम ... खं ... त । ... ना य ... सा ६

... व सको ... रूत विस्मय ४ ॥ ... त न ... वव न ... न थ ... वाडि ... मा न म ४ ॥ मामर्य ... मू ... त्या ... भा ... न्निन या दनु मानयत् ॥ ... मुख न दर्द ... न स्यास समा ... न ॥ ... रा गमन ६

[illegible]

... थमय ... न म ... न म ... २

नमति नस्यां वरत्व ॥ सततयानुगम्यमानः स्वक्रवाक सून्व वक्रवाक्क ग्रामनगरनिगमानन्त्रविरवन्नुकयाविक्कृ गरक कृक्यायक्म्मिंद्वि त्युविविक ग्रीमतिताना
नव गरु नायत्महिता घ्रनवक्कीयस्कृताव क्मन सून्व वक्क वित्क्रु ६ विद्दिनक्नक्कि संवन्द्र केनानाक्रुघ्रमनऊंवकी सूयनलिक न गु वीव नाइ नाथ्मनावि ६
घिमनक्षुष्यमाया क्रमयध्यकृयसमाध्य स्योसकृतानिसीव्य ६ जिक्षु ॥ मायियुरुडिताव थ्यव नातिद्रू नंदृक्ष्म नमूय त्मारमानाद्दवत वसंनवयूय ६ ६
युक्तसंतविनाजमानातड्यद्विष्टुनमनत्क्कोनविधिनाध्यायगिम्म । शृथवत्रथ्वानाजवमनाकोलजनिगाश्यधिक्रकिसलयजारगानि ग्रमक्रुमनमधुक ६
नागत्मेयकूडितानि ऊमकुकाकि लक्कुलकिलविः तानि घ्रसप्तिगकम सक्कवलयार्तक्रतानि । लमलायजनासयातिविविधक्कसमसीमादरान्माप्रिवासिनसरव

सुवनान्यूनेसायवनानिसमनु विवनं स्कंदनमपयम्भूम॥ विविवयुष्यस्तिवकाकात्तानि कृतस्कंनीववसन्मतश्मा। वाम्वात्तद्देष्काकित्तवहिमनिसनानूहार्दीत्कंडत्ताय्य।
नि॥सिमुरुवन्कामत्तगमद्वत्तानिवनानिमकूत्रमनानूतानि शुकीठततामनिमनारवस्माद धूंरुवर्धवमनयुरुकेशा॥ श्वयस्तनाडासोविनयमतिगम्यावाविसर्वं कृतयुति
संमादनकथस्त्रुकान्यंक्न्याबीदकू॥ सर्गायवुडितामनिमनास्न दर्शनामतिवाङ्घ गम्यानूपलीनतयाममादियद्धदयानूनेमस्यर्यं सदुवमेवानताय्य
वंयत्तात्तस्वरावत्याकुईपरुनत्सयाय्यविसमगं॥कृतपुरावर्हसत्तपाधनानां॥मपाविसठडाधङ्गतामनस्य।सींश्यकुवेस्था।पिमनारवेननाशिन्नवस्तू१
नरुमावररुव॥ गम्यवृद्धिनरुवकुपठपुरावमस्यसान्वामसकमत्रतधुकं पुवकिर्तुनमनयथा।यदीयमस्यसेना।गावक्यामातिवेकृपसित्रनफपठसरावा।

उक्तम्

नः॥ तर्वक्षरयोर्निर्थवनस्य काथन्तु खव मादिपूरुमात्वसंसख्यातसंय के मूसूत्रम् बार्थ्यं ॥ काक्ष दोनवक अयीपथमगगमहात्म्यवति ॥ २५ ॥ छ्मगरछ ध

वाक्रिजातकामकाविघातनर्मं ॥ २५ ॥ विनियातगतानां ध शयिसगोवकेनालमनुगन्तुमसत्पुरुषाष्वगेवहृगाजिकानां ॥ गद्यर्थवक्षयत ॥ वोधि

सखकिलमानसमहासनसिनेकगनसरूअवियुतसंरथस्य मरुगासंभयूयस्याधियनिर्व्रानाष्ठानामनाजर्हिशारवति ॥ गस्यनयानयय निक्रान्त ध

नियुनमातिविषहस्लूपभवनस्मातिपुरावध्वस्मधतीयकुलाति लकरुतष्वाजदाक्षित्थवितयरुयतमहिनपुवीगालदकस्यानिगघूनषस्यदसारुक्त ध २३

जार्ग नयुमादीसमनविविधविज्ञान दः स्मृत्यनागसूमरवः सुमरवातामसनायाभिर्वरुव ॥ श्रायात्मन्दथवान र्कनसमयन. नोयनस्यनगुभछ्यायाङ्कालिकनमूणय ध

वाच्यंवाचयाणिश्यमृत्याविदयनिर्णोयर्थेशिश्यगणायप्रोक्तंकृपुत्राविवेकदाष्टकर्मयूकगणीगर्छेनयूयमरायत्ताकदिगादयश्वयेषुसम्प्राप्तिवभायमानोकब्युक्यारुणाद्व
नागयरुविज्ञाधनकयाश्रिनीयनंविस्तस्यमृपजक्रुश्चावावाध सकुट्छ्याणतमयतस्यच्ययेछपावीचांघदत्तकीकार्यो। नतोगतमयंबाविदर्गमस्ययकोपनाथ
नाघरुनेककार्यानावकार्यान्कदनष्टकमातरुगयूर्यजगोदि देवमाथाविरुमात्मीयनाबृद्धिमवाय॥ गतनवतत्तनठयनीकमरीवरानतक्रालतनूपूतना
दनरुसयूयतगनकूनपूष्णुनीकवननवनजसत्क्षात्रिणासनथ ॥ काविद्याविरुगर्हेसं४ काचिद्विसमसंरुलेखाच्छियगुदाविजयस्यजरुननतरसं४ छियें॥
यनस्पर्शमाणियनः सर्वसवाशनदुष्कृतिसमूरवस्यसमूरवस्यवसनायगर्तुणाक्रियनयछ्राताविस्मि कमननसं४ सोद्धाविवज्ञाश्वयदेश्रगणुनासकृयार्थकीर्त्तीस्यारि॥

गर्थनिमानुषहृदयानि। यथर्थ्रुक्षास्वामी॥ वाति कार्थहृदयात् उपाय णमृगयत्रिणभासवक्याः पुनर्नेकार्यास्फुत्रियर्य्यनेयुदा॥ उद्यागेतामम पूर्नेस्खनूवार्थिनि
नस्यर्य॥ वनिजायिरिक्र्षेत्तिलारसिद्धा। गयावर्या॥ यता नेगावनादवदिसुम्क्रुरूमगक्वविद्रू। कार्य्येःर्थामायिनक्ष्यस्सत्ययायनेम्यक्रम॥ य
डिवेवथ्यमवकत्रुगकर्थगद्धानूरूयवतस्वसनसाप्तुर्नाविरू ॥ गिनसननस्फुत्रविनेविवानित्रुरूगनिवासायवाविठुनामयिठुमिकियस्पामि॥ अथ
वाथिसुख्वःप्राकायांविमर्तनूनरुत्रकिरूपणायांनिञर्यागव ॥ दिः गनस्सस्पुथनवानाणसीसवःसंदर्गोनपुप्यारश्वकोरूरुसननदाशिगमनार्थ
पुनःपनस्विरूयमानक्र्यार्हसानामर्त्यःशाससस्वथमूखनमरूनार्हसमतानयानिवृग स्वरूमारूवागनदनरूनग्राहिरुगमम॥ दृष्टेवतश्रीसनसस्फुगस्यम

॰ न्यथमन्स्थावर

वीप्रकृर्षीकृतविस्मयानां। विकृष्टकौनारवसतिवशात्स्फुर्त्तिं प्रयत्नगुणाकरदृष्टायत्मानसा द्वयादिकं [illegible] गैस्फैनवस्थातिशये [illegible] अथ [illegible]
णमानसानां मिमानस्मानसमास्य कर्षी ॥ कृतगोमराय घो [illegible] भवतीमयतस्य स्वछन्दगात्स्य याक्तिगणस्य गस्यवसनसि विरुख्यासमूर्दि [illegible] यास्क [illegible]
आनया त्रामित्रानरुवत्क [illegible] यत्नीपीतिसंपदमूपजगम् ॥ अथ तस्मिन्नन्तर्यामिकाको [illegible] मूर्त्यास्फ्रू र्सानी [illegible] गमत्तनोस्फू [illegible] यका। यादृ [illegible]
गयुणत्रूपी द्ववतो [illegible] सवर्या वर्ण्याय [illegible] वव [illegible] स [illegible] योक नकाववाणरूचिनपत्रागयनोयाः [illegible] लननप्रदनवनन [illegible] भरावयिकण [illegible] युमा [illegible] नीस [illegible]
सास्तिण दस्त्रोतेक दूसणतुसहृ उपाविवारी द्ववद्यसन [illegible] भराय [illegible] मिवान्प्रायाविति ॥ अथ स राजा [illegible] कनिक कर्म्मानियासा [illegible] युकाभनेयुनं भक्नृनिकसानीस [illegible]

॰ ११विया अधि [illegible] नि नर

धनानि १

नाथुवक्क

माहिसगणाभिषेकः । स्वस्कंदवद्ध्यावभिनाथ्य कावमकः ॥ पूर्वकर्णेयदुभिर्याय ॥ असीगर्ग्यप्रीतमना ॥ सनाजा हंसाधिपं शानुव्रव समीक्ष्य । दास्यत्यसंशयं विनिविस्तरं ॥ ती

र्थयात्राविवर्द्धनानि ॥ अथनेयादकस्य नेवद्भायप्रगुणावद स्य हंतामिदं हंसयूथं सनाजानिकत्वा गोदं समुत्थो कावनादायस्व स्कन्दवद्धोनाकृद्गर्गया

जात मास ॥ उपायनाथ्ययामिदं दृष्ट्वमहं सिमानदः । ससनायाम नानीतं ॥ सार्ध्यं हंसयूथिमम्पया ॥ अथसनाजायदर्भयूर्ध्नमनिदं दृष्ट्वा गोदं सयुधा तोका

कृतयूथभ्रलिवाद्रियाश्लिष्टतमनोदनन्नूपो गन्नेयादमूवाय ॥ स्वस्कंदवद्ध्यावमकोविदं ... मिवाविलाश ॥ नवरस्कमनूद्यायो कथं कथयाविस्तरं ॥ १ १३

स्पृष्ट्वा केसनेयादः ॥ प्रणम्यनाजानमुवाच ॥ निहिनावस्वतः ॥ यागमयादानूणदारणा ॥ विरुग्मक्रीतदंगामृयन्दवलभसनस्मृत ॥ अथविघमन्ति ॥ नीकादंस

स.त्वर्प.नेत्त विस्वासनिरको

तुय्य[illegible]नन्तयी[illegible]यनि[illegible]नया[illegible]नतने[illegible]समवध्यत॥ अव[illegible]मृयासीनामामयसंमयाव[illegible] आत्मातंति[illegible]कात्वा[illegible]सनाऊस्यऊो विनं॥ विम[illegible]मानृयी[illegible]वि

[illegible]मध्याक्नी[illegible]विनयाविस्माग[illegible]मय्यूजिनकमी[illegible] ॥ नेनाख्यवा[illegible]नंसृयं गतनंखा[illegible]वीनणववाछितन। नथ्थयुसन्ना[illegible]यथ्थसमरा[illegible]मयाद

समंक्षनगयेप्रसृक॥ अथविद्रु[illegible]यनिनयी[illegible]मास्नान्म्दि[illegible] नमनिर्व[illegible]प्रवदछियालि। [illegible]गम[illegible]नि न्मयीऊयमों विरूत्त[illegible]कित सामम[illegible]मा

रूपु॥ गदवमाति[illegible]किृ[illegible]गवे नाढानि[illegible]काथ्यसीममायिद[illegible] हदिमादवेजातिनवान्[illegible]नेवयथ[illegible]यमाधियानि मारू[illegible]गमन्[illegible]स[illegible]मत्ववेत[illegible]साधि

यति मागन[illegible]खयमयक्ष्[illegible]नक्रपूनी॥ गइ्यच्[illegible]सनाछा सृयमादविस्मयनमतसाविविधनत्वयरा[illegible]नरविनकादयनाछा[illegible]नाद[illegible]नाम[illegible]मतसृखा

ना

कागतामावरव ॥ कोकिंछिकेकंदश्मवविदिस्मीउविक्ष्मृण । ननक्ष्मीधिवनत्वानांभूनानानीसमय श्विव ॥ अथसर्वमेकत्माउक्रक्र्गायविवयत्वो ७ पूर्वजन्ममुस्य
स्यमुप्रमममिद्धत्वो स्युरूवदातमगिंवोद्वनगाहन्नपिमूयतरं ॥ सकामन्विगुरुचिवादमदवेमम्यउाद्रर्यीकाउवीनी दकदूरुतविधियुदायादसाके१
नणतोदनकाउतकावादनंकदामायणनवाद्वविवमिवान्नमान्म कामश्यानिव्यफ्सहनाकद्ग [illegible] मगुत्भारा१कामाय्याविवर्धवासा१यनिर्व्यकगृरुवेय ११८
विरामु१ पवुक्षृविनयन्तियमगियमगिगियय ७ । गदननागावण । गमूमउुयत्वोकमानेवगार्योत्पार्यविरप्य ७ मकृननिवायानगनीना । खूरूयगुण १
नसरामिरुमिता । कामायवम्हर्ममीणनन्नरूपवभाउ ॥ अथवाश्रिमवम्हथावनान्नगमनञ्चवसायमभूयाविदितोगयावना४मनायाग्यगाकस्त्रसीकमाय १

स्या वा व कृत्वा । रुद्धं दर्शितगृहस्थायां यमस्मदन्नं नागस्य त्वानस्कंदं लमस्मदस्मद्द्रमभन्न च व साय नं त । स त्वे व दर्श्या ॥ प्रव्रजिता ॥ युक्तिं व मतिं न त्र त व स्यार्थैर्विरस्वसाढ्य युक्तिरूपं
वस्तुस्यां ॥ स्वा रिर्षं रु वान्तिप्रत्न ॥ अयत नाति । यु च्या ॥ भ गृ हन्तु गु व्या लयपर्दीत प्रव नेत्र रव्या तम गध्वृत्तपृ ॥ । निर्वा त हीताय त या व सन्ति । य त्वे व वा ॥ त्वा विन
स्यर्यति ॥ अ त्रा त्यमाद कर्त वा ॥ र्वातिर्मन्ती दर्शना दर्शाय वर्ण कृत्वा वा भ त्रि व क्रिउ व त न म ति क द्रष्टु का थ क वा न न य नि ग म्प ॥ सा ति य ग म न न म नृ ग म न क ग ६
निः स्वया । वा ध्यायु र अप्रमान्न म य नाकि किं दीक्षा ॥ उत्पवाव ॥ य डि म ग्र म वृ द्धि ॥ स्या ऋ वा नृ ग म नो त्स वं । कि मि थ्य वं प्र प्रं यि ह ष्टं गा व व विङ्गिये ॥ य त्रु ६
नं व स म र्प्सा सि व कि उं य क्षि ता त्वया । ॥ स्या त्स्नु का म मि मं त्वं म म त्कन्तु म र्हसि ॥ ॥ गि सा द्धि सिं न यथ प्रमानाय दा न व च्छ गो स्म त्ति व कि ठु । न ना वा भि सत्वं उ प क्वा न्ति र ट ६

नकुमनकुथा काश्चाघथापि ४ पानिमथ्यमानाइ दं तिन छीवयनार वाय ।मिथ्याविकल्पे ४ समुदीर्यमान कथान नव्यस्तव क्षय नाथ ॥१॥ द् इंतामि वविक्रमक मालनो द्रेनम

यतियाहृदयज्ञानेनर्ष्व ।नचूनयामि निदीयमं २ स्य कीर्ति ४ कुम दक्षारवीवनानिपुरा प राति ॥ यन ज्ञानइ यि ना न्यो विक चिह्वा नि पूभि वयच्चा नियकृत्वाषम ४ १२२

वविकसतितियमननस्य कीर्ति ४ नाहितन्वारितु वक्षमण्डल ४ ता ॥ ३ ॥ कृत्यमयपुरीव नाथ स्यमरु ज्ञाय ना ॥ नरायल कालखुन्नान्वितायिका ध्यानिनामहि नव

३५न लुग्नार ४ ॥ सनाथ नस्य हृत्पद्मय ४ २ ४ खं मस्त दृष्टायीकगतायि ताना ॥ विस्मय स्व वात्मजम सिद्धिपर्क नावान्य या थैवक इ यस्थन ॥ नितीयन यन्त य क्षय सिद्धा ४

नीमिस्यपक्ष इव निवान मलक्ष्म ॥ नाथनाग क्षय तयय या नीति वार्यमा भायि हृदम्बज नत न्यायन वैन स्पृज तत्वम ति हि नाहि ताय क्षनमन्दवृद्धि ४ ॥ काधाव सानी कृतया ४

तयो. तानिश्चपायवृक्षमकाति. ग्रतपर्न. त्रिवर्गकिंकचित्क्ष्वि. कुश. गहुरसीन्यति. हरिविदितं काथं. वर्द्धनावकनायुव

यत्कर्म्माछेमवत्त्याप्रमुसमागतानि ॥ २॥ ४ यनोकिंचिद्वधस्य कृत्यसौभ्रायकानाद्धनमन्यथापि॥ अन्तकस्य यत्तं ४ कापायं तद्दर्वविदितामम॥ तस्यावधै तपप्रसन्नेक

४ यमान्नमथुथि व्याति॥ अमृतानमूकस्य कायामावि स्हनन्तयिवद | दत्तिन्नरूल्यंतथा करनी फ्रं काश्यपाद्धि मर्दनि॥ अथ सनाऽऽजा. तेन तस्याद्गतत्त. प्रगमद्

जानहृदयम्भे हृकनवदवसांतिय सादि तमारिद्रवावयास्त्रद | स्यपश्चणमस्यात्यनवार्यवचनक्रमभयुक्तना त्रिकिमृ कैनवक्षि गावेद हाणिन॥ वृ्स्यारि

प्रमस्थैवमतिस्थैवास्यपाक्यान्वीयकणु णदस्यदकतात्रास्कवद | कै॥ गीवप्रबुद्धिर्णी कृमायिद्वायस्रर्जयहनिजानककक्ष्मानवाधिसत्वस्यात्तिर्याकयाद

मासमानदर्वकाम्भविनयाद्धरूद्धयजामयाणि॥ अ वर्द्धसयथव द्वन्यथमरूणिक्रामवचितस्यैयत्तं ७ कार्यश॥ एवमेवैनगानवेनानि॥ प्रगमस्याक्रिसंयमतथ्यवेर्नतवाय

स्वसूथानम्मृतिश्चधाडग्नोद्रद्र। अहावनहंसयूथमिहागच्छदिति॥ छायनस्खल्लाकस्य भाय्यसाभ्रवनीसदृशे स्फातिमेलावमानसं. पूर्वमतिसहकृतेना
अर्थहंसमिथुनेयथाकार्मीविहगयुपवलेज तदसमयविश्राचि सद्भनगरमहविरुयथूनातिद्धनविच्छिनाक्षकानन्नयथुसमाहितवलमानेच देख्यानी
काध्विवाजसघनवन्देश्रयानिपूर्णवहकानापाय गाहरुभुप्रस करकेकानिनाद्वाक्रोशकेलघनविजयामिवसवायत्सनन्यपुवलेयवद्दिगालयुवाया
नगामयगगश्रुस्काकगकृतिश्रुविरुद्धत्सकदम्बसरूजारुतनके गकाक्षिवासिगश्रुस्खगिगिनश्रुकाननविनिघ्नसिंगक्षिर्वातिलयमघदर्शनयेकिं
जात क्षिवातरुमानन्नयासवलाकायवतिश्रुगमनात्सक्रमदनिकुंजिनश्रुयाणाथाकलेयहंसयूथश्रुगच्छसामिषूर्नमानसंभवसन्नश्चप्रयाउगमम॥ समत्वयवरं
गद्यगद्य मनाहन्र स्वासयूकषूर
१२७

साधियन्ति समीर्यं प्रस्तुताम्। दिग्ध्वजकभस्म। ततः स्यसनसायुनाथि। गार्थं समुल्लंघयामास॥ अथ शिवं ववन्दिरे तत्र हिमवतो वा तात्र सर्गो ब्रह्मदुःखाना मननाभियाति स्कन्ता
अह्वणत्रप मत्स्यरामानिवर्ण्ण्युग सोदर्श्य मृकुत्सनश्च युक्तिस्य ३ स्वक्रूरसखायरागो ऽद्रकृ मरय यक्षप्रत्यस्य भवप्रख्याग॥ नमस्केवा त्र्यक्षिण४ सख महत्स्नव ६
पञ्चीनरायुग्का सृदर्दस्तनि ईवाथनी नास्वं ओरस्मनकुमिनि॥ नद्भुखासर्व्व त्रवगे हंसास्कर्त्तीदर्शीनसमत्तसकावरत्व४॥ अथ वाभिसत्त्व४ सुमख सना
यानियात्रि ग्रुष्ट्रवाक्रो कार्नपुगर्गदद्गी। कथयपष्यमी नित्वावा वग्नः समूखवपलम्यनेनमद्योव॥ नयार्थ नेत्रदेवस्यगामनामिनियपश्यानिकूलने४॥ अस्मृ
निनावन्हारनी यानि मनानकृनाग्न्यामि घरदूगानि तृयानिनवतनध्वक विद्विकयस्तीयत्। कनमभूनायवायववनत्रुकुन्नतीकृष्णोनात्स्यानितेत्रा। प्राय्य नयंत्तवयूनानि ६

यन्नेनरूणार्थी॥ अथमेखञ्जप्रार्दवि॥ स्मयावर्जितमानसः। नैषादमवदत्प्रतनूवाच॥ अस्यसमाकमियंराज्ञसंशायस्यात्ससंवादय। अस्यसौन्दिसर्जन्नप्रधर्मार्थीकोऽिमवाद
मया॥४॥ नैषादोवाच॥ नैवनैऽहंखमिच्छामि नवचच्छारवा मया। सर्वगच्छयमकामिपरयवर्णूश्वतन्दय॥ समुसावाच ॥७७७७७७७७६
७ल नायदिऽसिमहंभवे गच्छेत्त्वमममार्थिनी। तर्कनयदिउस्यासिनद लऽजेनेः। रोनमी॥ उत्यानारुय। तीक्षेसमानोदयंसाचनो। विद्धितिस्त्रयजुत्यसयनगेद १३०
लाराहानय॥ नदगसमवरूस्वरीछिरेवउऽमयि। मावश्चाउ रवान्यूवे पश्चान्नमऽच्छिजामियं॥ गावानवचलारस्मऽ कनास्यान्नममेदार्थना। देसयू
यस्यवधीतिमेत्रीनगनदर्थवच। यश्चरुनावकुवनाविमुक्ती। दसाधियंदसगणा॥ प्रगीता॥ वितायमामंगराप्तियसन्नदे॥ सन्ज्ञेनिर्मुक्तामिवाश्रूवाऽ॥ सूसने

प ...कसायाव देवर्यामनधान्थाकूर

मादकं नकतना त्यासकथितहृदयार्थं तेन तस्य जी विनिर्गतौ णस्थान्यनन्नागपुष्पचिनाकगन्धनागुल्मोजविताघेयपार्श्वयोलीकनवबसासमावजितहृदयाविस्मय

यमेनवबवगतसमानीताऽश्लिष्टसमुखमवाच ॥ साधुसाधुम [illegible] कारुमा ॥ मानधार्थश्रयंधर्मशाभ्यर्थादवगंमवा । स्वामन्यर्थे त्वाजाताजानाभ्यर्थ यत्र प्रद

णितः ॥ तदेषगेविमुक्षामि नाजानमयमानयन् । कान्यिाद [illegible] नाप्रियं यत्र कवरिमिविप्रियकनम् ॥ [illegible] सतेयादकस्यनयतेः संदगमनादक्यस्सि

नाऽसमनमानयनदयास्मृखयागात्ममात्र ॥ अथसमुख [illegible] मनायाति हिमनाजविमाकान्यनमातन्वितहृदयः प्रीत्यातिक्षिप्रमुखदीरमाल्मनेमाद

मुवाच ॥ यथासहृदन्नन्दतनान्वितः स्मितयाप्रहसाप्रियतो विमाकान् । तदेवसकल्पनिगतिनरादुगनत्सकसालिवदहतिनिन्द ॥ कन्माकवार्गीविरुलः प्रमारुदाताय

श्रावनरू कस्यानधङ ॥

स्याद्यस्य लोल ४ स्मनगीयम क्रि ॥ ७ रुक्रा गता या पित स्यमोनैं वा थापिडी वासित्वमनके लागम ॥ यायाकृ पाया पुरु तनानिचो हमवक्षि क्षम पद मेख पगा श्याले मुकान्य

श्री मर्यापुवृद्धि स्वपद्मनार्ना फि सर्यन्तमार्ग ॥ ॥ र्के त्वाद्या पितदर्वा विक्रु निव क्रो मास्मिन्तयन्त्रि वृक्षो त्वावुप्रियमं घिमय्यास्निकं यदान्त प्रिम्हा तादि दंक धम ॥ लं तिता प्रिवु डि

वकिनृ ण विलापाक्व न्दितनु दितमा प्र पना यस्वभैने नजासमा दिस्सा ॥ पून्नान्तमानाप्यपण्यगस्क स्वमहासत्वस्यान्क ॥ पूनाय निन्मृ ॥ वाधिन्वा पिपुक्ति संस्थानवत्तातपुति १२

नृदुक्राध वर्लितत्थेतवर्पासपुलानितिदु संक्षार ॥ पुगमनके वराः ॥ सीवाति स्म ॥ त्थेनस्तना जावाव ॥ मम षे नाथा क्लिषी प्रिरुने नरुखके गडि तम डिर्तत्वया । दुगात्वउपन्य

नंपिगीविनानननाछा किडानयुगमाः स्यात्रक्किन ॥ ॥ ताद्धगयस्वंकुउ पोनृ मम्चा तडक पनसिग्र यसंतर्लावा । श्यात्मघमामा यररूमनतिद्धाया थेप तिद्ध प्रविर्कननादि ॥ ८

॥ वाविसत्त्व डवाव ॥ ॥ वाथ्रेपुति ह्वामवमीविद्धि महानाड ॥ आरन्ममर्पाउ पुत्रि कृत वकोविमयन्क

मानायि समतत्र्यूकश्च। प्रसन्नानी तश्च्युसर्म्मभयात्र गस्सद्यथार्थ्येवममयतिष्ठ॥ अथ सनाजा मनवाश्चिसत्वस्य। धैर्य्यादिभि यथ्य ऊर्कतय समनसमत्याद्विता गयस्मि गुनसंसादवनवि

कामायद्ध॥ अन्यदेवानन्तब्राह्मणनारिसं भयराधिनं तदयनिष्ठ यास्मात्रिंश्चयलकर्मभि धैभिर्त्तिजा गश्च्यवर्म्मधी वाश्चिसत्वमुवाच॥ कान्यस्कवात्सद्धाकेकुलव

लीयाविरुद्ध नन्तं वर्ग विमुक्तश्चान्तेरूसमुद्यन्नवगायदनंकुक्षयतीनां श्च प्रसमर्थ्यत्वयातु॥ वाश्चिसत्वोवाच॥ गतस्मसत्वनाडु। जागत दृश्यसत्वस्मिन्नड्गगसार्द्धदृश्य

नाश्रूद्धमसनमुक्तश्चकाम्प्रश्च स्वाध्ययवाधंन श्च॥ यन्तजागतनन्दानि नवानामहि गोघ्निन श्च। सारूमनविमुक्तश्चकाश्च सागवनानन्दन श्च॥ उत्पत्तमानायस्मिंन्वस

दर्थनप्रयच्छत। तमश्रीकतनंनाजन्तरूकाधमणीगामं॥ यन्ताविद्धत श्चकूणलीजरूलानियापकादधिराग्यगतन्नवर्वार्थ्यंग। गैश्चायमगुणात्सवैककारांसत्वनकमवातयम

प्रकाश... नस्तव२ गी गा१

नृत्यायापाशिद्धिन्नेश्यच्छिकःगकल्सेनेवना ॥ वन्दर्गीपुलिसंश्लिपे ४ कमलात्यनस्यरिश अश्यतेऊगणीनाकस्ते तूयेनि वक्व विग ॥ विजयआत्मतद्वेतेकप्रगुप्तसकगनेश्वा

गिर्यंप्रवि कनीविग्रइयसानमयीमिवं ॥ यसन्त्रक्रिमिगास्कूलाघ काविप्र वयूगुणेश्च यास्नीवयनि अवद्धिर्मीनयन्देनलंकणं ॥ विश्चिनसकासारे ४ कान्दिद्धि

नदंशाकनेश उयलास्तननास्कीर्णूमृम्मि नृणेभि वाछदग ॥ वि आक्षनवधूस्तानेम्भदसके ष्वदाकिनीनजारि ४ कुसुमार्नकसवासमि वकूपविग ॥ का १२२

याणाक्त्स्तु गानार्षां सामाव्यमि वदयाणं नमृदिगाद्विजसंकीर्णं कदगप्रतितादिगं ॥ गदवे सन ४ कानयिवा सर्वेयाडिगणस्य वानाकगस्खायरांम्य

जाग मगदवापुरयदेसवयस्तीर्णाविन्नसेयामियरुयदानयायवर्णाकानयामास ॥ उयययआत्यतदलक्कन्नगायामिदेसंन ४ ॥ कदानिनाउयाक्रिया ४ प्रायासेराययक

हरि३

दार मी गर

निमध

ञिणी ॥ अथ कदाचित्संकन मयार्थकानयबनिकास्त्तनछु ।पहनम्भ गस्वालाकन ऊमा सदिऊ । ययूळक मत्लवन घार क्षयसन्वालि तमनासनङ्मसनझ । यर्नि
कनियीवनमृयगाय्यबयकिन नछ नवछमसिविवि प्रसस्या सम्याछिरलघना प्रनायी । यवळेरेस सनवर्नसयाने मान सात्तसनस ४ नस्वसन्वा । नादि
गनकनाथ्यनृविवन दनूपूर्वे नान्य न मेरसामिथ्त नस्मादेव रेसयूथमरुत्यनाळाविमयमूपळगमम ॥ नरवयाऊिगनकासाहनान्नाद नमनि
रल मघकनगणनंगमालाविवनण ऊणेथ्यापानि ४ सरवमि नेम्म इरिरनानिलेध्वसमनकनाविळियमान कामलकलकवनयनछगन्धु छलदिव
विक से ४ कम सेहसवि वस दे ४ कुमदे स्तनादद भो ॥ नस्यमानसमन ४ समृयविनस्यापि रसमि कूनस्य गामाकिमनाहनासन्स ४ छियमरि वीळयनाविसमस

जाग

यावत्समस्यगमवरूयर्थमुग्द्मी ॥ सा हृक्षम्मस्वक्ष्यकयन् क्षम्मा ह्यर्थमस्तिरगं । गवामानं दरक्कस्वनारिकाऊ्गामिजीविते ॥ द्वाभिमरक्षेवाञ्च ॥ श्रुतोऽक्षम्मसगामव यत्तद्

स्वामिकुमार्यादि । नत्यञ्जूजीविकस्याथि हृतक्षम्ममनुस्मनन्नु [illegible] ॥ स्तुत्यस्योयेव ॥ गदक्षितस्तत्स्मम्मीरात्किमेयिवदर्शिता । या अस्मर्त्यीक्ष्रक्षमोगं

द्रमानुमतामया ॥ अयिवेवंगतंकार्थयद्वत्तं सुहृद्धामया । प [illegible] त्वंमांमा तैर्संम्यन्नत्रकृत्यनमस्तरगं ॥ यत्तस्यनद्मगुणाकुमैयगास्याय ॥ यस्य कृत्यक

नैवीदं ॥ सा ऊान्म्यनिवायगनू ॥ अथकोदसयथोकंनिर्यादं [illegible] मायतत्कमालाक्षरक्षूवरत्वउ ॥ सयकद्धुसयूथंविदृक्तमौलाक्ष नृनमूर्कुष्विहृङ्कर्ग १२५

निश्चितमति ॥ यांशस्थानान्यत्रविवर्नक्रोदं सवयोददर्गा । सततसस्राभरयाविस्मिगमनावक्षाविनिमव्यमात्र कृत्तमातन्वीयाजीवंखदयामास ॥ अस्थेर्नत्वंद्व्हमवद्दे सं द

कतन नम स्तनीयास्य मातमवद्म विम्भिगणनहृदयः सम्मुखमूयत्वावाव ॥ अर्थमागनमरुणाद्विजः सहनविध्रमेः ॥ यामुना स्मात्वयाधनंग्या व्यान्किकमागत ॥ अवद्ध
यूतः स्वष्टः सह्ययत्रनेत्थावली । कस्मान्वापुः विमय्युर्व वुगानरुज समनरुः ॥ कइयः असमरवः उद्माहनपदविन्यासन स्वरगवर्णनार्थीयगुलोजास्विनाः
स्वनगमानुक्षीवावमूवाव ॥ नकिस्वः सन्नगद्धामि, यदिदं गतुका नली । अर्थयागयानिकूर्म, विहगवीयकवानिति ॥ अर्थयूगनमरुका, संयकगुवलगावया
।गुलेनस्यरुवद्वोरमगाद्वदनुनेद्धादि ॥ अथसनेभादः पनमा ६ विम्भिनमानिः सहयिगणनुनरुः समर्थयनरवाव ॥ यद्भितमरुत्यादयदिकाहसाः ६
समाभ्रिगाः ॥ त्वंयूनन्नेसुजर्सनेका न्वयंरुवमाद्विजः समूवावाव ॥ नाजाममद्यार्नममसरवाव, सुयस्व दाकाविममाद्भिगणपर नेदात्सहयनविहोउमनेस्वजाविगसा
स्य

श्रीबोधिसत्त्वावदान

३९–45,46,47,

जाग

रुया॥ अथ चिंतितम्स्या ४ स्वयं तानूनम्जमारवकिंसत्कानविजमस्तरागिनं ४॥ अथ स माहात्म्याला कानुग्रहस्थेमनूविवनन्त्रमत गवंतिगमजनयदनाश्रुनाजम्भ ६

नीनच्यनमस्तनाज्ञाविस्मयानकनमूयजगृहमाग्रतगुणाविस्तृ नयरावकुसुसनाजातस्या गमनंदनगत्वायलरथ्वीतमनानमत्ता सस्वामिनूआनेवनयह ६

दत्नागस्यावसर्थं कानुयामास ॥ पुत्रं जमनादि सत्कानयूत ४ सर्वैसेनैप्रवेश्यस्वावियुक्तिश्च स्वावार्यैर्यनिवनणयर्यूयासनविधिनासन्मान्यामास ॥

विरहितयतस्यन्नमूयकंयं णयाक्रुस्तगुणप्रियस्यगुणवा नृत्सुजातिगयाहतिथि ४॥ वाधिसवौरिवेनजरुहृदयक्रादितीरिह मन्यारि ४ कथारिह

(ग)यामागमनवनियादसमानत्थ्व(से)समकरुआह ॥ श्रुद्दष्ठराकिश्चापि धर्मेवत्सलादितिचित्रकृकियनानकथ्यित ४ कवैवादत्तगुविशोऽजनायमहिनाथि ६

वाचयामास

नित्यं सगुणं संस्कृतं जनेन॥ अथ तस्य नाम्ना श्रमण्या तत्प्रविष्टः सं लावनां लब्धसम्मानां श्रवणं दृष्ट्वा श्रेष्ठ्य समरिवर्द्ध मानेन संज्ञानां बोधिसत्वस्य गुणसमृद्धिं सर्थ्यायद्र गुवृद्ध
वान्तं साद्धिं॥ स्यगुणाकिं नयाद्धिने यलभारिजिगदावर्जनेन्दु स्तु शक्तियोग ४॥ यैवं नागुणमात्रसत्वे न भूकालयं सवयं वश्च सर्वविद्धिं॥ प्रसन्न सर्वनिम
स्तु कथ सर्व रिरावितु मगकाधर्म स्वगुणं मस्य सामान्यं नाम्न नानेनक्रमेन तनाजानां बोधिसत्वं प्रातिवित्तारुयामासुः ५॥ नारुणिदया बोधि यात्राज द
कोविस्मासमयगन्तुं। ब्राकमयं दत्त स्वगुणाञ्चियं मां धर्म्मा रिमूः स्यकानां यल स्य वसन्तयु कारणभूकुलं समधूनव वनः। खवाकिसंवः नलाहु कुरुणा शक द
स्माप्येव स्थितानाम्नानियूनां ६ प्रतिपिद्ययागश्चात्यादिं धर्म्मात्मकानामत्रुलादेवं से काकनकारुण्यप्रवृत्तो जीदेव्यवसमनुगाम्कि। अथैकामायना बोधिसत्त्ववृत्तः द

स्थापितार्जुनं ममीयमिति समनुज्ञाणमास ॥ कायाङ्गमाश्रित्य वनस्य कृतास्थायध्रु गावल्लृगात्वप्रितिः स्वयंभूपनी प्रभु । नात्यभिक्रियावेष्टयरागानयन्त प्रीकृ सुखु ६
कुं वनीयम क्रान्तियान्ध्रा ॥ कृतिमेद्र माधुर्ये नाजानीकृतनेन । दृष्टिकृतान्मात्म्येन लानसुखीषु ॥ अथवाक्षिसुखयाय जनेसीयकैर्वृगाः अयप्रयुयुयुवृद्धि
लोक्षदृष्टिकृतयुपाकाशिमूर्धमवेकृत्वा जानन्तमदनकाम्यास ६ मावार्जितहृदयस्य विवलनोपायं विमम ॥ गुणारम्या सनसाधु नाकृतीति विकृति वेगसिद्ध ८०
। राज्यमयकृत नस्माज्ञीयप्रमदलादिव ॥ अथवाक्षिसव ६ कुंदमत्याप कालमिति विनिश्चित्य स्वाभिनाग्रमयदमदार्कवानन निर्माय मृद्धिय
गावाकस्यवमायतीय ज्ञायमकञ्चायाया मास ॥ समानिति मदध्यानन वर्मविज्ञकस्य तयगैर्ह्वनद्धास्याद्वरह ॥ तिवादिना स्नागमनस्थदीवाभिकेयथा ६

कामायुधीयगुरुकयथ्यकामामात्यछिलयाधदूतपोयमूख्यारिकीर्णविनीतमीनवाकाकवधजतीसासियाछिरिधवृजितरनैनाधिछिगयुछानीसिंहासनावछिगनमा

धिपामनाकुसीनाजयधदमवजमद्दनायुयुजमनादिविध धितावागेथिजनायवारेनपुगियुक्रमनत४ कजुगिसैमादनकथसकानासनागि

निर्दानवग्धगेनवाह्लकोपूद्दलानूवख्यावातनयेमेयेगिलेर्गे पुयनयुक४ कनदमाख्योयवानवेवमापनयगामरुगोनुगुरुतामासैयाजिक६६

गिना वाधिसलजुवार ना मयेवदमहानाजस्वयमाधिगगैता थ्यनेकतविद्द्यदूगेकृगागुनमाजाक्कीर्णयाछियेचियोस्वरावकाचिनायीनिमवर्लेन

स्वयकावापुनयमानगनीरणनसरखंधर्म्मविधिरनूस्थीयगे ना जयकमयाणमयदमहान्वातयादक्कक्रस्यमवृछिनरावड्ययन्तेवेकमेधर्म्मसाधनामिदमस्वय।

सूर्वंनसमाप्नोतिवलोकमार्कियाः॥ हूं॰ कितिमिष्व॰ सवादविक्रम ॥४॥ यदंमार्यंनतृवालिंगमाथम ॥४॥ यदयिवरवान्तारः॥ दाम्रोनेवे विपवल्लू गुणोक लीतः कर्मा
न्मकानिनसवन्किरावतिवेवः नष्टानिनेवबययथयूनरक्ष वक्लिलोकस्कथयमितिकारवेतामहः गुः॥४॥ उक्कं दवास्त्वयिस्यादेवमयिगयदि८ ८७
न विगर्हलायेश्चकिंदन्कावाननस्यनतनस्यवा॥ हूं॰ किसमरुाह सवसम ऊंदवादिनाविस्यस्क॰ मारानालेन कमेणालक्ष्मीरावयनासनीकूनीकूणावि
ष्ठाविदक्षममास्यमेवाच॥ रावानयस्मानकस्मादितिवि कूकयतो॰ यदिन्याय्यमर्थं भाक्रुयविदक्षोविधिंमन्यसे॥ सूनृक्षयं स्मिगगक्षमर्थाद
र्थसाधुसाधुवाः अथाह्॰ त्वकिंलात्मानमल्थेकमकेत्रियुतः॥ अगस्त्याख्वीमि मययाजुनंवाय्यनवंदवस्त्रं॰ स्विकं॰ सुवन्द्येषयिसाधुदर्लै॰ रूगेमयायम्मानि

वानन स्मिका ० अमृदृष्टचिनयाविगर्हा ॥ इयाविद्यामुदयगारेणार्यकर्म्मे दृगीदृ४ खरुलक्ष्दृष्ठं । यु ग्रायुन[illegible]णामि दनन कौ ० युयअसकनस्खनगरुं ॥ ६०

यामिरत कि द्धनैस्थ्ययगुणगाणनय४की दृष्टाविरुम१ स्याः ॥ अ[illegible]रुण्प्रगरु४ यन्त्रिरुयलोकमूत्रियगगा स्कं थैवधर्म्म ॥ अुदृष्टमवोयणवे ० नयि

स्थं गा[illegible]युमि द्धनननयन गाद्धन्नगरुणीयास्मिकयवेधन ॥ दृ कि समा[illegible]ाितम्यथेकाद्रु यविविनयुगगरुणापिवगानभसक्षपिरुयस

समावाऊि तहृदयाविवनाऊि कीयथ्रुदमवच्यणै घीवानवव ॥ घट्टलेखविनयार्थ न्राऊानमावराथ ॥ नैववखलवेदृमहानाऊ्याकिनवा ० ६

[illegible]वानानि म्मालाविाषेनयीनिमि न स्यारिवा नन स्येद्धवम्म मयागरुहीगम स्थवकथा क्रमसायुस्कावार्थ गद लेमा ० न्यथप्रा[illegible]गिहारुमित्यक्षा गमद्धारिसी

क्षादिग्धागर्सीमूढमतिश्च यतिरुम्र्मेस्कन्दगामूपऊगमम॥ सकुस्येयासाद्यमेघ्रमयतिस्पृशननतू डोर्म्मतस्यवह्निनावाक ४ प्रदीप्यमानाविश्रादाह
ति रानादिवान्यनमस्मिन्नयकमूलविषक्षुदद्दर्शो ६ । यातियाकवष्टाक्षिप्यमानियात्रायिऊर्नाविकाति वि ऊन्दकीरलानि॥ स ६
ऊन तान्याक्षाऊत्यानिकामनयायनमखादूनिमन्यमा नस्कन्धुरग्वान्चअर्णप्रस्यारि वृक्षाम्नारु ४ समकणानुविलोकयतद्ददर्श।प्र १५८
याग गदाककवितूर्ईयनियकरुलाननिमिनायिऊर्नाद त्ययोरवींकिन्दकीदर्जुसकरुलनरुक्षूयाकथ्यमानस्कन्दिनिवेदमाविनूकूनस्य
किन्दकीवरुस्यरुस्तिनिंगारवीप्रयागारितनामध्यमनूम्नादु॥ रुद्रलोरोनवास्या ४ याकमूपऊगमम॥ भगखाथसाकेस्यमसीरुरुस्यरानाकि ६

यागन्नमिगाकमलोगापनच्चुंधनेवानिकुलम्लासगादरगीसस्सायपात ॥ सगयासाद्धिमद्दृतिगिनिइर्गसमनकग ४ लेलारालियात्रीक्रो ६

फकूयकूवन्यपगकु ॥ यर्ल्लसक्येयगुणाल्लस्यगमस्त्री यांच्चसलिलस्पुतकिक्रिदर्गीमराछूग ॥ सग स्माइलीर्म्यसलिलासूमनकग

४ पनिसम्थेनकृकाज्विस्तुदूक्रनगमाग्नेददर्गी ॥ स ६ निष्युलीकानम्मेरुव्यामिरुमयातव्रिसाद्दिनिविलस्यसानजाविगा न ४ । ६ ॥

काष्ठ्रयप्रिषिकृदीनवदनस्कीवृंदाद्रीम्मनस्यभास्थ नयुरुउस्रमानन ४ कागनहृयस्कुलढिललाय ॥ कान्कानगितिद्रुर्ग्मोस्मिन

ऊनसैपानवहितनियकिर्गीमीयत्लाद्दापिपानिमगायन्मस्थानन्य ४ कूवयच्य ॥ वन्धूजनेमिकुवर्जिगर्भकनियानीकर्गमशकसै

समरि नन्दात कस्य व वृत्तिमयथेक्ष १ सुम्मातप्रियवयतप्रयागपून ६ सतं गो रु समरथो वि ससरू ॥ अथवाभिसत्व ४ सत्य याविमलयशाशितोत्विगतव्यु ६
सत्न ॥ रंगगगत व संप्रति विश्ववानृगम्यमान ४ समूरव ६ तरु ससंतायातिना समृत्य यरु सयूथंसि दर्गो नाद्वयरेणयरु मेन संयोऽज्यामास ६
ज्ञान ॥ कालत यात्यखन्दर्यसरु स ४ यवानृकयाव्यसनी सरु स ४ ।ऊगम दु धर्म क्रिति प्रेत तब्युष्यु धर्म मा नो वितयात केन ॥ तदवीवितियात गकानामस ६ १३२
यिसर्वं ६ कै नात्तमनृगन्कुमसत्यनृवा मध्यागव सृगतिस्का ६ नामिति ॥ उर्वकल्याणीवायुरयरि ताव स्तावगीतिकल्याण व वंवसीयामस्याय नं ६
यं. केल्यानमिति वृलौपि वायम बं कल्यामित्रवर्गोकृकुव्यथासिद्धा कीति। स्कविन आयावन्द पूर्वसरागवद ग्रवंक अवमर्यस्कविन ४ सरुवानगवनृत्वा वाधि

सर्वेन विनकाताय्यरूपमवद्रुमानारव तीति ॥ रूसयोजाणकिकाविंशोविनम ४॥ ॥ श्रसकगामयिसतुन्नमाश्चं पूर्वीयकविस्वतकमयोन भिंपितीराव
ति। कृतस्त्वाकमासान्याद्व। कअथनूकयरवाखिसलरु नश्किताय्रीरागवाखाविनामयाविवाडकावरव॥ सगरूसंतावउवयपिविक्षिकु
मणायामात्ताकाविमतनीविग्रास्कपनातीकनल्लातकोपरु लश्विग्रास्वककतासव्वयुवरूणाण्यान्साकहिगा श्रोगमस्व विंगुरूवकनेमसंमगभसुद्धंक्षिणः
मातिसीखावाय्यकेयदमवाय॥ सकृनयूण्थवाह्यनमाहाती कल्पनयाग्रेणियकिगुणसीनू वाचमगुगळ्ळतिस्मगाऊकजेवविद्वंविद्गपियाणमकनाह्नी
नाउमाणानिं वास्त्रणाप्रहयतीनामन्यतीथनाकयवजिनानिंश्रारिगममतीयाहावनीयस्ववरव॥ गुणाश्चियन्थमण्यालवद्रायकयागगा १ प्रियमहेत्रागियाक्लिणाः

स्यथि कत्वा ० सा कसन्निवेशस्यापि। नशक्कुम नदवध्मनलीयाय गिल्लउमामा मिथ्यामी निसतिवागमनं कावनसा कल्पे श्रुयिता मयूनरैवनकं यज्ञयम ० ... नुनी यसम

सामार्गना जानं कृतारव्य नृह्मा संकान म्ल ननाम्ला गछिमयाच्युव ६ काम॥ सतनगृहीजनसम्भवताकूलि तहदयाव्या मदने ... यतनमयद्धि ख्यध्मना शि

थुकमति स्कउ विदन नाथि नद्रीववबोतिध्मनानियस्क्षा रिह्माय्र ६ निलरं॥ तस्य समास्वादिनप्रगमयूरवन सस्य स्फाति ननूकम्यानूसाविशाकं या जानीप्राति ६ ३१०

प्राइन द्रू नृ। कानूखलतस्य नाश्लावस्यूति॥ अथैतदद गीतनमा स्येयथारि नि धि द्वानि दाष्ठ गतानियतिदा गायमाण कश्चिदनं श्रुमो ख्याइविराव्य हनुरि १

निदर्शितनहरु उवादप्रगियुवकथै॥ कथ्यमनाद्दत्त कगवकाल्यै कानीसीख्यानवल्लै नवनामृइ नादि हरुथ प ... विणयापि का इ यपनकिवभम्वा स्वारा विकौरुगा

दिदंतियर्ता गच्छेवा। अथ तत्र कृष्णनर्तकानामस्मीस्ववृद्धिश्चविकसूयवज्ञ्यामास ॥ नाकस्मिकं करवि उमहतिसत्त्वमन स्य तस सर्वमधिकश्चिदंतरु उकशास्त्रविताय ध
त्रियमाप्र कृष्णभीविविधलोकैककर्नातिवयूनष्यसमीकर्नाति ॥ सह त्त्वमिदं पूर्वेकर्मकर्तसुखासुखासुखाश्रयत्तसामर्थ्यमास्त्रीयवमन्य नवीविश्रदयामा
त ॥ तर्केकेनिश्चितिकर्थनसमानकालेरितिज्ञायावदृष्टविध नमितांध्वरावान्। सर्वेकुयवृत्तकर्मानिमित्तमतसौख्ययुत्तनितिपूर्व्या। यिविदृष्टव
मति ॥ अथ तडकेकंदवादकथारितिनैनकामरागयुसीग जवयुदे तायामास ॥ दाप्रादिनैकविविधवज्ञगुणाक्षीनिकर्मात्मकोतिनरवाकिरवनिर्वेवः
न नष्टानिनैवव्ययथापुनरदृष्टवत्किलाकस्थयमिति सौख्यपनाशनष्टस्या ॥ अथ तत्र तरृतविज्ञायायात्रिदृष्टश्रुतानि कोटिल्ययगर्भी श्रेष्ठव्यमालिनयधर्मविशाखि

दितं युक्तायुक्तस्य ॥ यदि कारणमीश्वरः तद्विचित्रं जगत् । निर्विशेषस्य कारणत्वं । ननु नास्ति मिथ्या यथाविधि नाय यिसु विदितं विरहता केयि नाकयिवाऽज
वर्धयन्ति ॥ एवं निगमरूपतामीश्वरः काकोनलिकिं सूक्ष्मे कुशिके भक्तानामिवायनीय नियुक्तम् तकनाधिनतमा मकणा सोऽह्यं नाशिसृष्टौ क
त्यावाचन ॥ रावनिया स्मान्न भारतं विक्रूस्यमातमसद्वदितं पूर्वक स्मकता मियरिमान स्कतवद्धत्रवो मित्र ॥ स्याम्ब्रुवमवयादियत्र के स्मिक गद
पुरावाबाह्मयाम्ल ग १ स्व कृतवमयेय गतस्मा ॥ दुःखदियूर्व कत कस्मादवाम्नितास्मिन यापिकिम गमम येनविगदं श्रीमी ॥ श्रुष्य सिपार्थ ममस
वानवविन्न्यूरुक कृतंमयाणादिनयू वकम्मज्जनन यदाख्यतंके स्मवक स्मातनुकंतकाश्वद्दर्व सतिमाकुमयात्रि [illegible] त्वं च सोर्थीय यदि १ ४ रवन्मुषस्तिनास्य १४

९२

रवैसरवसाधनैर्भुवा॥ अर्गानुमीयं॥ सुखासुखैः पूर्वैयुवक॥ गैपूर्वसंबंकेक दूर्के॥ नदृष्टमूर्तंवयुग॥४ सुखासुखैनर्ष्टे शुक्रमैकस्म तोस्य कारनो॥ रावेदरावछनव

स्यकर्म्मणकृद्धैसिद्धोवपूनातनक॥४॥ यूर्वैकर्मक्रगेसह वमर्थवमायमन्यसन वानस्यवधे॥४ कस्मान्मकृत॥ यत्रिकल्प्यते॥ कृकिसमस्त

त्मातिननुयाश्रेद्दुरिकस्यमीतवतामिवायाद्विष्यगमर्भ दवादितेस्मिनयूर्वकमवाव॥ आयुष्मत॥४ कायमसोदयामाद्विगहोयीयदि

नद्वमूद्धदवादमम्बयस॥ लोके॥४ यनायादिनकर्षनकिवि वर्ष्यायैशुरीप्रतिवकिवद्वमानभारु॥ स्वद्धन्दवमवविनाताद्वितरू॥४ स्याद्वी

गतसहगावववानरायैं॥ ऊनवादरायादथशुरयनिवर्णकुरमार्जसंघया॥ स्ववव॥४ पतिलामवोष्ठिगेऊनवोनयिनास्यायायैं॥ स्वकृगानकयथअगर्ग

दा

नारिस्यसत्वविनयनंकणवानिनिविद्धवर्लभयिवाश्रमवंमिथ्यादृष्टिननंनूधागरूत्मानूधाण्ययत्वादसत्वावत्तिमिथ्यादृष्टिविगरहायामव्यूषतेद

यीं।वियर्थ्यर्थनसम्यग्दृष्टिपुसंसायामिनि॥ ॥दूष तिमहावाश्रिजानकंतुयाविंगतितम४॥ ॥ महावाश्रिविगलितद

४ पुनिवर्लयंग।स्थितिश्च ज्कल्प्रमकगनद्धववर्ल्भनीं सयकद्धर्य॥ ॥ नाम२१४२वतनथसनकसव्यक्तयथापकाविलकिगल १४०

जाव यक्तहाव्या॥ नअथनृक्ष्यगबाधिसत्वुरुकिलगामद तिस्त्रिमवत्यो।र्ववितिविषश्रतुन्नविनस्थितागंना।गतीतकौ।गायसावानकणाद

रूवासीगर्ण्ववतगारुनतन्क्षाउयलनविनेनिवानकवर्लसूरूनविकल्पोविषम्यरुक्तोविशेविरुत्थिगनटानकंदें।गायाविस्कनेकपघवलाऊतेद

स्यारं

गम्भीरकन्दनाकनखयानर्संकूलपदूतनुमध्यकवतिनादंमतोक्ष्मातृतांयवीक्षमातंविविक्रयपुष्प्यरुलंयादयविमाधनाक्रीडरूनमस्ताका
यः कंचित्कवनोवरलव ॥ नेदवेस्क्षमयिवैतमेयावि ६ … लूफधर्म्मसंक्षकनक्षमकूडस्वरार्वेधस्यामरुस्यासमन्विनमनूनायाव
सादिवकनूम्भतैतमूभाव ॥ सकोननतासाडिवनास ६ … सागनागनाविनार्गीगागाभ्यवेसून्यनान्युगमककालेगालिलानलानिलेध
नेवाधिसत्वस्यमहाकृयात्त्णा ॥ अथसमरानमागायद ६ … सकूवंवननतृयन्मीरुलमाग्रदाक्षिनन्तकम्यमातस्कुनमनविविक्षिनाम्मव
त्रयतितान्तूष्यालिनः नमनस्थउदंगामध्यावसालिस्म ॥ अथन्यनामः पून्नवागंमछहाक्ष्मनवेंधिरुंकनाधागः समंकतानूविवनन्मागमख्खवा ६

अत्र तस्य मस्तु मर्दयिष्यामि मोहं प्राप्तिः

अन्तयथातनंनष्ठा॥ कथं तम्मयि विश्रुतं मज्ज्यां आयेसगृता ग्रन्थ वाधिसर्वेस्त्रस्यो भाङ्क १ यनीप्याति कामकामं वयसक्ष षृष्टा॥ सम्र रवनाक्ष संनाथ नवावकृती॥ यद्
यकृस्थयत्नमाम्प्र कृतमस्मासृन्व्हया॥ सत्रूव्यविनवय्यूद् क्षि व्हौमासा त्म्यानूवक्तिनः॥ कस्यतामम्मकृता॥ तावत्तम्वप्रवप्रमि॥ सम्मानविक्षिता नत्
आ॰ न यस्थ यास्मासृदर्जित भाप्रयाऊन न्तामकि यक्ति मवबाद्रा ग्रयमानदर्यख मीऊस॥ प्रियाति थिर्वगुदावद्मतस्युपे पुवृकमस्थामगुनमादितो धृवं
॥ नावित्रभत व्हियिवाऊगात्मातिप्रज्ञाहिगाथक्षृणयाथिवद् व्रत॥ ताय १ समाध्यनयरमूताविन स्वरावर्वृथ्यैःहिगुन्मस्वथिस्थ्णोश॥ स्तुतियुगसाद् १३
सृएगा १ सखीगुदम् सदाक्षकृर्ग्मक्षवसक्तिरूपयश कृमाद्विर्दिखाएुनाक्षामक्षमर्मांगीसवेकृत १ का १ स्वाहि गोस्थ थेस्ऊप॥ नद गोमाष्यातियनाक्रमनाग नकाग्
सर्वेऊनाश्रिया

श्री येशानन्दी कि सम्यक्ता। प्रमयासो कृत्या गोबो नेत्री पुनारु आनन्दं धाम्नि गच्छ कि॥ सनो प्रिय पुन यिबी रु भैपु लोगपु न्यादिका तत्र मने नि सर्वो नि ४ायुउरा
ल एकपुराल किर्की क्षेत्र [illegible] मारहत्यामि कि [illegible] यु लक्ष नु॥ अभसेन म्योबठ कके गान्भुपि। प्रकूदबेना हिनमतलनाध्यायि। प्रभासद यन्थवह
मना सोबेहि मो। गागिपुका गाभेमिक काक्येयायुनग॥ रुसर्वा मनानि यियाल यालयं महष्ठिपुकोषोनकं दृष्फयाधिवी। अभनन्द लोकोचिनयादिपुदत
लोपुनानु नागे जेगनाग्रेवाक्षुम्प। पुना रिगंकि प्राणमे भरु पगो रुदस्मय का स्रुरयपत्ररूणयं। रावु भूपडाआन्तिप्रमवेत्स तेषयसाद हैस्त्रिज
नावृबले गे ना प्रसापिव म्मलवसूर्य नाथपुगा४ कयाहुन जोनिद गामिष्ठवता खदाके कास जिंगे रावनादायि सयष्ठ्यो रुइदिउविकमपीव मोः॥ अथ सनाओ ६

जी न

दानीं ब्रह्मस्वां रचिगेष्ठ कनाति ॥ ब्रह्म४ जूर्नं किञ्चिदनंतं तूर्नं मदत्कनरा किंवियकिंचूलं । अशान्तवृक्षधूम्रमिथ्यनं नलक्ष्मीकिह्यानन्नूजीविवृक्षं ॥ अथसनाथ
जागत्तु त्या दगाद्धीता वनाभिनवदनस्कनुवास्थमाकिनं पूल्य न्नुसमा वजिकमाकिंजीन संवेभूमनुदातीभमथ्यनूवृकिकाल्लं किंवाचिसल्लमरिखुना थ
म्यावावे ॥ बदाज्ञ्या कापिदरत्कस्थेभा समुस्कुतातं४ सदा सिपुयत्ल४ ॥ डयकिंगाकायवथभमयाव जिकृम्यु गीकिंष्ठवसाधुमागच्छा ॥ वीक्षिसल्लड १३८
वाच ॥ नैवखल्लहमरुनाज्ञ अृसक्कानपुक्तनेबादरूमयावा यणघमीनागरूमिनवयमहादजीवस्थानंकालं किंनातिक्षामियक्यहुरवान् ॥ वि
मध्यरयावादायसीन ।छीर यायीनेसक्कानाविशिभिस्वयंयत् । संगमदगत्याजभगावताहाननवद्वियन्दारिनयालनथस्यात् ॥ यायकजमायावेचित्रजनेनयास्याभिनाष्ठी ।

त्यरितिगक्रविक ४। जकावमानारिरुगात्तिसत्व पूर्वीयका। नांनसमीरावकिं। अग्नि गखराबरस्तंतपर्यूर्याप्सयंस्काप्याथिनां ग्रुक्र २० वाङ्यान ४। पूयत्तसाथ्यूयिं ना यंसिद्धिय ६
स्माद्धवदाकलखाद्वड्यव ॥ उसव जवखरिगम्यनूय ४ ग्नन ६ छिगुद्धाम्रमहाद्वदारा ४। स्सखाथिनय क्रगयनाभ्यवसा तीकप्रसिद्ध ४ सुद ८ नमुमाग्न ४
॥ राक्र मखाद्यपिपूनाद्यख ४ स्यात्यनाछरवना क्रिमुखबदी ६ नष। पूर्वीपिकानस्मृत भलमावानवाकिति च्छिन्यविनिच्यय ४ स ४॥ अूसवनाघाद्यपसव
नाघ सामुग्रियाभिप्यदरुनिमितीं नरूयन १ छीग्यवलास ६ मगाछिदासर्वाद्यादहियामिगावज॥ नाजावाव ॥ यच्चवच्च्यमवगा कथामितिछिनाग्न
रवनामगिरुत्यनवयीदानीमिहागमतनांस्मानव्र्ग्रसीरुमर्द्दिभिरवानभवनाद्ययिद्दियीतिवनूवन्तितधीव ॥ वाधिसत्वडवाव ॥ वकर्कनायामहानाउवदयडववं ६

स

न॥ श्रुत्वापि हृदयं न यो नतम्व गतिस्तया कवलयाम्य किं सुवन॥ एकवाक्य विदन्तव क्षय गदहु नेव पूर्व दासि सर्वे स्व राजवीन अथ कृतं तनु यदेवं स्मदहुसार्य
न इद्धिपाराव निवित्रां प्रकृष्टवाक्य॥ ततः कृतयदि कृत विद्व काव लीकथं तं गद्गदं मसदेव राम स॥ नदृष्यते सदा यदि कान्तानां केना हि नाथ्य यावि
मलमिवार्के मनुली॥ नतुव रो॥ सुखार्थमिच्छानां विषया न प्रयस्य निषावि सुनेन्द्र सिम नदिरा प्रिन॥ नयस्य स वाक्य कथं नोति गतः तानं न कदु १७२
नसीति वनाम रामस॥ तदेवमपि यज्ञावान्तनु यन्यस्य कुकान्॥ कृष्णावीन न वक्ष्य सिद्धार्कि मुनी विग्रहः स॥ कथं हि सुमस रामा नाम सहदु वा
दिनं विषदेह दुनि निद्युति स्कूदाग मी स्वत्वकानं निकमामन्त्याबाव॥ आयुष्मानयस्मान्नादेश्वी विमस्ति दु मुग्धं॥ सर्व स्यादि कारणामरिमन॥ पद्य॥

कृत्तं यदि सर्वमीश्वरानानुगं नैव स्तं ॥ सर्वानन्य ॥ गं व के यम मेलं विक्षेगायन दोषाभायि यानि त्रिक्षेत्रि ॥ कृष्णं मान्य वीनवेगासन कगीतनदयानु नाभिना ॥ व
त्वदिव्यवधूस्थगकर्थं जगत ॥ कारणमीश्वरं स्वया ॥ अपिव ॥ राजसर्वमीश्वरकगमिति युध्यत ॥ कृष्ण स्वयं सादासाकाल किंयुज्यमाद्दे ॥ सूक्ष्म
स्य्यं स्वस्यं यत्के नाद्गिण कर्म ॥ स्वल्लगायं यदीश्वानन्दसोकृद ॥ कल्ले ॥ आन्मनाविरुद्ध्याय ॥ कनाति सकले ॥ कृष्णयनकुरु नैव बाग कान्यरवितानि
। गत्तु राकिं तिं वं गां ॥ कैगुलीनमीश्र ॥ गंय्य धर्मसंरयाद्वाय घं ॥ यं नैकवाति । भतवकं सर्वमीश्वरस्य ॥ तस्य वेश्वर नास्माद्धमैग ॥ यन नावा ॥ ध
र्मनायदितत्प्रानीश्वर ॥ स्तंनारूढ ॥ दासनै वं व सा स्था ॥ क्रियमयनन ॥ स्यादथापि न स्तात ॥ कस्मान्नेश्वर नास्या ॥ न ममापि त्रु गतौ रुकिं रात्मदविग ॥
२३३

मा२

नमस्तीर्थ्रत्स्यभ्यस्त्लानिगानिव। श्यालयनु जातयदान्वलिछुदान्त्यादिसर्वौविभिर्त्तिरिविन्र्ध्यजे॥ विविज्ञयपृथ्कां विक्रयाग्रयैवलिरूनंपीन
ऊनं नःश्वनेयभ्रानयात्रिय भुरकयश्वयकाविलंविनाधां यातिसकाग्रसम्यदा॥ अदृष्टदार्थेयृषिदृष्टवेऊर्मनधूवलेंयक्ष्रभिगास्रु
कोणली। विमानुयद्भूपतिनधायरूयाऊर्वीविनूढष्ट्स त्रलाजयणियाना नेच्चेवगालभ्रुनयागसाधृभूयकाग्रमाहात्मपदुलाभूसाधे
ज्ञान भुावनत्वेंह्लामालिनेंव म्मताननोभियस्वगस्रवविनूध्या जे॥ ड्रमाद्य पार्मृखविनागियश्रूलीसरूकि वोऊँ तनसक्ष विन्दति। अ४ मम
मेदैवलिमूढननन्नुयैश्वकिनानिदगतिवनेनेतन्दाग॥ यथाउसंपूश्रू गुल्मम स्तीन्रुहष्ट्रूलादयैयाश्वक वशमोश्रुयक्रुति। नेच्चेवदंगा४किकिया

वे२

रित्नक्रियायुतके धर्म्मार्थसुखैर्न्ननाथियः ॥ इत्येतानमाख्यातिपूत्ता थेदर्शिनः ॥ श्रुत्वेति मिक्रान्तिजंतस्य भवच ॥ वधानवकत स्सूणादिष्ट्यागिता धनं

ष्वर्समातनमाययादितं ४॥ तस्माद्धर्म्मार्थी पूनस्सत्यति सौ
नानेकलाकानं ॥ कृतिसमस्तान्मार्गेनाजातं दर्शि केशक
उत्तितागनजेतनसवस्मानयुणानिनयुत्य व मानस

...यष्या धीयुक्तच ताः ५ पुजानीं नाग हमात्मूकयादगुनीस्थान केनाकानाम
यथाहितव्यसमवमायचसन्मार्गेसय अर्ककनजवगगतकलसमूत्सरयुपा ६
दवानन्ध्रयकतत्पणिजगमम ॥ तदवमसल्कानामपिसत्वर्क्षाभं यूर्वाय ६
कानिष्ठन्कम्यानगिथिलीरा वाकि कनद्धला ॥ कमासात्याद्ध कितासत्कानमाग्नकलयूर्वेहकविस्मलेवं नर्वसेरागवाननतरिसंवेक्षापियनवादा ६

मस्मात्कस्मादस्यापि मुखोदय ॥ तयन्ति त्रयाव ॥ अथाद्रितास्यागमर्थाः स्वाग्रैतवतापिदः । अतीवृद्धा तेष्वपि मियुक्षत्सन्दशीनात्सवाकम ॥ भूयंक्षमरुणा ६
थेननैमाशाश्वसमेव्याति । इरायीप्रियंकृत्वामरुदहरुयु ६ प्रियं ॥ १० थक्रोसनाजार्णेनैव्याद्वमरुणाधेनविकृतेउदानेनसम्मानुपूतरुंसनाज ६
मवाव ॥ ११ मैत्रमावासम्भयागतोयुवीविसृभुणोकृमायि ६ यक्रुणाकर्ण + ऽथाजनयनयंथा गरुयतो, रुवस्तु स्रायो ~~[illegible]~~ याहिवि ६ १२३
रतयाममम ॥ अ गाकिंनोकेश्वपनयोक्तेनेश्वरहकुनीति । ६ उष्ठिविशेवक्षितस्थयातेनकक्षिप्यांतरयगसर्णाधृतेम्मरुपकाय ४ प्रणय ४ सरुकृत्स्वकाश्वो ६
अथ सताजा समुद्रवसंतामणकुप्तलहृदयः सविस्मयमतिवीक्ष्य सम्मुखमवाच ॥ अतुह्यगाधनवसंतकेऽन्तयातिक्रामियणयप्रगरुणों । ववल्कदाक्षि

ष्यस्समाहिताकृत्वा नगतञ्च त्यक्त्वा प्रयवान्मारुतम्॥ सीताप्रलोनायिय ग॥ कोटुमहतिनाल्लवान॥ सोप्यत्यप्रणयाभया॥ ध्यानोधापन्यीं हदि॥ इत्युक्त॥ समुत्थाय ससेना
यतिर्विनयाद सिप्रोलम्पेन मुवाच॥ महत्कल्यनसहवया॥ सीताप्रकृत्यवध॥ इत्युक्ता मिताहर्द्वं तत्कथ्यनाति मनोहरनथ॥ सेनाप्रमाणाकुलनाधि
पत्व सोद्धान मर्यादिरुणाधिपत्व॥ गती कथमम ध्यमप्यम्प्य॥ ध्योनथ्येह मध्य॥ च्युतनस्यावकुश्यन भमसोगेनाविनयारिजात कुबेरजानको ममथ्यय
या॥ उष्णुमहानागरा ज्यय॥ स्थितासं नन्मेषनायीं यादिमयेनी॥ यं॥ इत्युक्तसनाजाय रुद्रविस्मयवदन॥ सीताप्रयन्नमुखमिथ्युक्त्व॥ स्नानरावेद
भूलकपानयाक्रिताकं स्नानयिसंसयतितागामि॥ सखिव॥ तवीविधारुविनयीं नयसोक्तवक्र नेवाकुगात्महृदयानि समहरन्ति॥ तादियेषु सुतापोतित्रिविध

धर्म्मेव। स्त्रसर्वा सम्नायनमपूधर्म्मदानेष्वदयानव्यौवनाम गेकृ स्वयंकृमाध्वसनाविधिनायगृहीगे। प्रियसम्भूवंश्यान्ममनाऊदूगोनोवायमविदिगदर्क्षानाः
ऽगत्स्त्राभमनाश सा गकानयत्रनाकृदेयानीति॥ अथम समनाकृ श्यूनश्यूनर्धायसहलीदितोमिवक्रसिदूययमोनस्यवाक्षिसर्वेयुपियानृ गं ६
कागकाविकस्वेदृष्ट्योनवपसूनमन्याद्दगीविकमरवपू॥ ६ येगुव्यकृजासानिसेदियाकेरीमस्वनेवासतिसाद्धियाके। विसर्जूवीमानुषमाप्रयुयो
४स्यान्निर्विकानायादिनोसैकोमिरू॥ अथसनाजाविमक्रावि नरहानमन्दीरमे४मवकृमानस्क्रपिन्नमहासत्वेनेय्यथापूर्वसत्कानयपायागेमूसुरवानि ६
रत्वना वाधिसत्वा यिगुहस्थरावरखो७वकृकाय्यव्यासर्गेनाजानकृतिनकन्मनसिवकान॥ गत्समीयवाकेनाकुवितयायवानकोथिन्यसन्दगोनायिनेककृद

मर

यममध्यत्राजानीसम। दायतिदत्तुक्रुत्तिकाश्रीयन्निभ्राजकराणिकोभक्रमनसव्याख्यात४ समरावण॥ गइयभ्रंश्यसनाजासवकोमस्त्ररूगयादारिन्ध्याविनया
नृष्रुस्याविनमारिगध्यवुदर्गिनसकृमाविनिवर्लोयित्तुकामदृ वगमूवाव॥ अस्मात्कस्मादृयुरुभ्राकस्माज्जन्कया उवयदागमुपिरू। यत्तीकर्णि६
काऊनेककृत्रकिक्षितदृष्टयुमादूस्वेतिकवयाने॥ अध्यन६ वाधिसत्वउवाव॥ नाकस्मिकार्यगमन्ताघ्रमामे नासक्रियामात्राकेश्लिकवाग। ६
श्रृराजनर्वे उगकासिनौ धमद्रभेस्यगता हमितावजामि६ ॥ अथर्व्यसत्वरासराक्षिकमतिविदृगवदनमरिडवर्लवत्तरीभ्याने नवामकमशिव
दशयनृपनत्रुवाव॥ अयंक्षात्मरायाजाऊस्मानुप४ साद्रिति दुर्भदृष्यकौ॥ अयादियूर्वेयदृवाद्रकर्मारुत्वामायेधक्षरावतावदृलो शाकानत्रुष्मारूनयाधि६

ऽग्रगतमन्तनिपद्ध्यानं लयगतावायुतत्वाक्यात्कन्नभस्मीत्पूर्णा यथा नाप्रमेय न स्थापिनिवरुप्यासि अस्तु धर्मो विधिननुष्ठातुमिति । मयाग स्यादेवमेभग्र स्त्रीर्गमवयुनाभिह

गच्छति ॥ गच्छ ब्रास नाजादाकान्थविनयानुवक्षानिवाधिस विकि किंचित्सूप्यवाद ॥ सर्वोत्ताहृदयस्तु किंचिद्वाद्यावरत्व ॥ अथ मैत्रमाया ४६

पूर्वमपि तस्मिन्महासत्त्वे सामर्थ्यहृदयात्सुवचनावकाश त्वा ॰ यदि कस्मिन्स्मि गवदनाना जानमूर्धाऽऽबोधिसत्त्व मया दर्शयस्कृद्धबु ॥ अस्ति ७८

रुगवग्रोधस्मान्नालोकसमाभिरस्तात्क्षियौ सीदवसायसा मर्थो श्रमयदमारगण उव. मस्लन्नामवानन्तकाकिनानय ४ कामगनात्रेपाद

प्रसमितगं त्याश्चर्यं सर्वथा नयासिद्धिरस्तु ॥ श्रुत्वेनानन्तसलक्ष्मवदाधिसत्त्व ४ पव्यूबाव ॥ नोरुक्तात्तवकः ४ यथावदशेषमानिनयरुमित्य तास्मात्तगाद्दितुं

वनीयिक्रमवि सस्वार्थेतनावानरक्षमसितेन याधुक्त [illegible]

नब्धर्यं कि भाविद्ध अ गा १ समृद्भावु यिऊ यद्यत्कु न्न त्व क्रकश्च स्ववाद धर्मत्व व साय ४ पुनर्वाद्विरुद्यु म्मणौ । सत्व त्वात्मे [illegible] नैवयत्र स्यांकार्किमिद्धति ॥ इत्युक्तिसमल

मा गुन म स्यान्मा मान्यं नो प तस्यद्यु [illegible] क से ४ धूत व यात्तद्धु का मरुम हेतु वादिनम मोत्यमुवाच ॥ स्वारा द्विके ऊ गादि [illegible] पुविकन्नु सर्वं गत्वेव गच्छ

द्विविकृत्स सस । किम स्मान् । इम स्वामि [illegible] तिपन्त मायाि ते स्व त्वात्यायिकृ नाममय त ४ सृद्दु नाम [illegible] य ॥ अथ पायमाक्तिमम गस्य [illegible] नन हेतु

गस्क दीकि सिद्ध मिदं दं हेतु वाद मिदमृत्कृ ऊ वावद वा ग्रयो कवनम्क मिदं ॥ यदिययतात्तव वत्तादियक्रद हेतु केनवृस द्धेवरा वे ७ । सानि

त्वादि वी ऊ कृते मे वतु गतु साति कर्त्र सम्हवति न क्षाि ॥ अयि वायु स्यान्म्मा गुयधक्तनयकावण ॥ न हेतु न स्ति [illegible] नि वदते संहेतु केतन्तृ पाि निःश्री स्वयमे व हतायं

स्काणि सिं द्व्य पनयावमा गयाणरिउसादिमात्त [illegible] पयअक्कमव थावाइ ॥ सं यथ्यनदूउ ॥ सिद्धि स्मात ध्यनमाकाविर । साधुण्णि सक्ष ण ॥
या विति कादृ तिष्याणि ॥ यथ्यमहानाज ॥ अदूउ आजी [illegible] गुकदूादृनत्ता क्कि क ॥ दूणनयानुरमवा । क्यान्तयनामय । भ ला थगन्व्यायवादी ।
ठाण कयमस्यु ययाणि ॥ दृष्टिवनं [illegible] राषु रावासस्ता [illegible] मपाणियाक्किदनु ॥ दष्टोल्लयिद्विपाविक त्यणक्रघाक्ति ॥ छियाणि यविदमयानि ॥ १७८
संदृष्टियस्माद्वानिधविगव्या स्याक्ष त्वसदृष्टिननयदवि [illegible] त्यं ध्यसतं छायि णाकमीयमसउना दृ नवनेणारदला ॥ असय गा ॥ संयग [illegible] वंघा ।
छाविण ध्यनक्कि कामेराविरिदूनाक्रसा ॥ विनिदद्दल्क ॥ [illegible] दिसेंऊनंकूदृष्टिरि दृष्टि विया रूवानमा ॥ सा [illegible] अदृयुना दादिवि रूवाणि र्न ध्यमलव ।
गी

कृत्रविरोधर्ष्टरूणं । अनान्तानं ह्रति ताविरुं [illegible] थ्यय कदा येनुयत्वा ऊर्मसति ॥ लोकविनूत्यगमापि ऊनेव कार्याकार्याथमथ्यसद्धनजनन
मूर्त्ती । ह्रमनक्र इकिनसमागमदृष्टिमादि सोर [illegible] ह्रा । निमूयया तिनि गमकनाप्ये ॥ गर्छऊं नाभ्युनाविवऊयि कुऊनसारी सवनाम्बयुना
सवनयात्रिनस्य । स्वीं कीर्त्तिमूक्तलयस्रंजनंनृ [illegible] जानांि दायानुनागविनर्यगुण सोह्नदक ॥ स्वयिवववाति धर्म्मं ह्रयसायेन लोकसस्मृ
स्वनस्मान्ह्र म्मामा गऊ तिव्द्धा ऊगादि केमनूपात्य वेव । मरणूधमस्क चिंतयनृविवमाग्नें धर्म्ममसमारूऊसवा भीरविलम्म धयसमाऊय थ
दाहकीर्त्तिम्म गम्मनत्र कूनूऊनस्वजनंनृ । धर्म्मेणयालंमसीथ्विनमसमादादवंसमथ्यासिसूरवतिदिवंयगभ्य ॥ कांक्षि ऊक्षा नात्य घुपात्तता धकां

स्वमतिर्थ्यात् ३४ स्वमते विकल्पितत्वान् स्यान्मतिरिति तन्न यतो ऽनेकान्ते कष्टेन गतम् कम्मत्वात् सम्यग्ज्ञानसंवेगकारणत्व ४ यतो निःप्रत्यक्ष क्रोधसंयमस्य दा
ष ४ सर्वाण्यनन्यमनन्तरूपत्वम् वे क्रम समन्वे।भावनुवाद्
स्कन्धकानिभ ॥ यन्नालोकादिवानीभो मत्स्याद्वेकान्त ध
क्षमस्थानमतिदानं पीय यत्वानयानि ३४ स्वभावस्वभावी
व ॥ मानुष्यलसकारडवयद्दे कलमोदशी। कथं नामयथ्यवासिनीनां मारि ३६
नादिवु।पप्रापाता ३६ छत्री च्यस्माद्वन्य तपनि गीतो क्रोसि ॥ विगलाकर ३४
कपर्दिजगत ॥ यानि गाड़ ३६ गाववात्माक्षिक ४८ स्वभ कान लोमयि। तिमी
तिनाय ८४ भल क्ष्मी गुलमे क्रोविवाप्ति ता ॥ गतोप्रिमादल रूवि हनाविश्वसनीय गा कानूरव ल्यथति ष्याक्षिनव भोकी क्षि गादवया ॥ इनाद
पालनकथमतवा ॥ गडक्षिप्राह संतार्थ वनामाप्तिर्वन विनिवृत भ। गौ जैन। वा। माया क्रमाइ हि उत्कन के गता नोषी वाद्वनामा तानि मे सल्लुयथा विश्वागाइ ६८
ज्ञान १२४

निमांते वत्तथा त्रिर्यं तुजायस्थेन द्ववात्रमन ४॥ क्लि लेभ मलिभ । गतास्मि याधनवयं त्रिमिळगीतत्राद्भमन्ते नदया हि तुपुरु ४॥ संदृश्यमानवव ६
नवरुयार्थ्व नामीं नसाक्षनू वरुजदर्द क्तिस्ति भीकनीय ६ ४॥ याव छत्स्युनिरयाण गरुनादिन हीं आमात्कपद्ध निमनू प्रनि याद्या ६
मि ॥ वकाकिंत्ती क्वामशनीनकीलौं मायामतराढूं हिव नऊमनक ४। कश्चित्तुमासाधयत्नाकर्नोनि लयीतनाद्य अपानिम मीं ॥ ॐ
निसम हात्मानं प्रवृषमत्त् गावनूजनात्क मानी यप्र निया धवेनी गत्माग पूनत्रुवाव ॥ प्राफाजनाकम सिंकवनाकवनका ६
नइगीरयेमृत्तळ गक्कसाधु । पार्यं वकम्भयनिवजायिहुया ॥ ४॥ ६४ ख्वादिनस्यानियमंन विपाककाल ४॥ ॐ निसमहाकायिसी पूनृषुमनूकम्य ६
४कार

संभूयपणीयन्तूर्यघनपुष्कार्यवृक्रमूसमक्ति। न [illegible] लदलतीलविमलजलालिलमवस्तास्यपार्य्यवासनः नवैवं व्यादमृ भानुविद्विनामनल्यव

नभेवगमटेत्त यत्र क्वचिद्यहहक्रगुनगवनी [illegible] मेमहगयावानक्षीयमे नवात्रकिंकिरहणगादणामयिकाद्विवंयक्रनितीनः

ग्रा स्याक्रघ्यकमयक्षुत्रनियमितेनगतनार्द्दर [illegible] कितत ४ समस्तान्मातिक्ष्वयमूपाय्यव षकायितेहिमिन्यनीकनूणभमूयज्ञमः १८१

मे॥ कुभैवाचित्रध्वजदमलीतविराज्जमानाव [illegible] यूप्येन। तथापंथयक्षिद्विनदाकूलेनवादित्रविचित्रध्वनिनाबूलेत ॥ क्वा

नूयात्रानूविनागयत्रय्यरिस्तम्बामनस्तास [illegible] द्वप्रस्तुनाऊलिरिजेतीधेनसेविभीनाघ्र स्रखान्यवाय्य ॥ कुभैवमध्नमस्ति

युवागनियातवेगादलिन्नगुणसत्रशमूर्छाविकृ॥ नाकयनाय्यलभवाकर्षवनक्रोशमयीयुयेन्न॥ क्रिमर्किमातीनमनांसिद्ध॥ खेन्तस्ती

नवर्जस्याप्राप्यर्के। अदक्षदृ॥ खान्यतिस्तीकमा याग्र्थाकृमानीव्यसनागमश्च॥ नसायमम॥ शाक्षाति स्वयमूर्कृ उपम

विसावरोमस्युर्दारुन्नायमूयक्रिदृयकृमिमिवि कर्कयन्नमम्लक्ष्माकरूणयासमाकृष्यमानहृदयकर्मपुयागनदानकमूकरू

मम॥ ददर्शवनेनगृत्वासंसर्गमस्म्रद्रिगुणानवा नाभर्तृव्याकुलिताश्च अवसनसन्नासवयानयकनानिर्घोषसंजनिता

वेदनारिनावाक्षमानहृदयमोयगितवेगान्वींविवक्षमाने॥ दक्षायनगत्रविवक्षमानेननानाभियैवाक्ष्यनागनंत्रश्च क्रयावेगमहिम

नीगाढिनसद्दकेनात्मह्रष्टरी ॥ तत्र श्चानगुह्यत, आघिसद्यश्किलसालवकुलप्रियालनक्तिकालतमालनकामालविड्गतिवकुलकूयवरुले, तिंदुया
तिनिषशमी, पल्लाशशभककाशकुर्वशगंनवशगहनो कदम्बसर्जार्जुन, खदिरकरंजनिचित, विविधवल्लीप्रतानावगुण्ठितद
वकृतनानाविहगगणनिकूजितसमवनमन, गजगवयमहि षीमहिषचर्यवराहद्वीपिगण्डव्याघ्रवृकसिंहकोकदिमृगाविचरित ए
।मनुष्यसंपातविरहित, मरुत्स्वनव्यवत्सदनीय ककुत्तीरजलवकु, सूक्ष्मानीमा, नानाविधपद्मनालनीलकमलकुवैडू १३०
र्यनानाविधवर्णविन्हविभ्राजितविचित्रगभस्तिस्निग्धहरितनीलविमलविपुलनयनाभिनिमयेनिवायनूपपुरोविमालाकुलनयुदगेशयनमदर्शनीयत्र ए

पानत्वाकनख्वयाद्वानी. नृनृमणभावरत्व ॥ सज्जानान ४ स्वस्यवनृश्रा ५ तिलाराजीयती. तनृकानृण्यकीवजनस्य. निर्जनसम्यकमृवनगहनेषु ६
हिनमे ॥ यदूविज्ञानतोद्वगत्र गत्रयाधेजनविवनिका । तियलकूट वागुनाया ॥ वयगलेपकाष्ठविवाय रोजनानिसम्यकयत्रिरु ६
नत्वनूगभमितत्वमृगसार्थमव वाक्षेयत्वावार्यं ०ः दपि । गेवत्वमगेभनामामायियण्यक्षकान ॥ नृपविज्ञानसम्यक्ति ४ क्रियासौष्ठवसं ६
स्तूगा । स्वदितान्वेभिलिजनं कृत्रनामनूपूरूणं ॥ अथ । सकदाचिन्मस्तान्माग स्मिन्वनगहनं वा साय गगेसु समीपवाहिन्यानवा ६
मयूर्णूया. मसावगयानआदिज्ञयमानस्यपनृस्याकनिगणवद्गुप्राव ॥ क्रियमानमनायमयूर्वसविनादं । ल्पूजलीघवगया । अति प्राव

॥ मधिगतदिव्यनुधनसमृद्धिना. रुजनामित्रातिथिप्रणयिजनसंमाननयनलसूखान्यनुरूपं नायनापि लोकः४ सीयादि पेतुमिति ध
निश्चित मतिर्विस्मयेनैनुनमगरीयायकारीसम् ध यथ्यराजानमुवाच ॥ अहंमगवन्नमभिवासंकस्य जानामि। तदाज्ञा ध
जात प्रयकस्मिपुदगोयोमेनामितिः॥ तेकुलासराजा खमूदितमनामममवेनरुद्रप्रदगायस्य क्वामेगयोऽस्माभ नूनुर्पवष १८७
मास्त्रायेमरुनावनकायनयनिव तेश्यूनेवना ध न्विग्नेमप. ततयूनुषदाहं दृश्यमाननमांग्नेस्कं नदीतीनमूपजगाम॥ ध
यनिक्रियाव तेकृनगोरुनैसमत्यनवनकायत. धन्वीरुस्कावायीच्चवसितायकेपूनुषयनिवृतश्चसराजा तेनेवयूनुषैनाहंदृश्यमा
विहाब

नमार्ग्गेनस्फद्धनगद्धनमनूप्रवेश ॥ अथसपूत्रषर्ष्टीररस्मगंग्नि प्वरूस्थितमा लोकप्रदर्शयामासनाङ्ग। अथमयदेवसमागवनश्यप्य
वृतंदेव४प्रणियतनस्करवाविति। तस्यान्तमेयताश वाहेमृगसन्दर्शनादना। प्रकाश्यान्वयपनन्यालिविनिकरूरूवासिता॥
श्रासाद्यवस्कुनिद्रितोद्दृष्ट्वानिष्क्रियाविलोषेनारिसं स्कृतानि। तेषुप्रयाम्रालिवियरूमन्द्याकम्मालिसयश्रून्तगीत्रुजन्कि।
अथसवाजात्युदणिमिनमाणं रूरसंदगतकु ररूवनयनेविरूयमानेश्यनास्मिन्नवमेघनीलेजलरूनेनत्वतिध्यान
तस्म्रो। गुल्हीवूवूनंसवूवूदुदर्शमागूजर्दवाङ्गिमिवारकुङ्ग॥ गडूपन्हासराद्यगमानसाध्यतुरद्वमियस्कुश्रुरूष्यानि रूराणकेवा

*स्थार

सर्वज्ञमवतानिजावसंमूयगनविकामशिवामायद्ध ॥ मूलेछ्यवतानिलयाभिमभ्योवन्त्रीयेयद्धाधिगनेष्ठलेद्धो । खर्वयत्रीजीवानत्ताद

४ कथंस्याद्यात्ताचिगावत्क्रगत्ववपूष्ठि ४ ॥ ॐ ऋक्काद ज्ञानमस्तुअगार्नकृपूं गतिष्याभिवलेनद्धीन४। येप्रकनूयंछिदमस्यमीसंद

जाग कौकानदृष्ठोमक्रत्वणायमस्या ॥ कृगायकानाचिवराद क्ष्मनवानिसगया।ग४सादिगाद्धआस्य। र्ययब्रसिछ्व्वकिलेमष्ठेमो ६या २८

यथगामिस्तूपनेयन्नभ४॥ यावद्धविष्णस्सुरवष्ठसुफ स्मावन्मयागक्ष्मयीनिरुद्धे। ॐ मंच्छियद्धाशिमरवंसमस्य। सिद्वायिसंताद

ययमाजयस्या ॥ गन्नार्यविलेविरुमकालङ्कृविनिभ्यियसद्दनालोनारुदाभव्यामादिगमगिनकृगलाविपन्नाषमोसीरू४पुनाछ्का द

ग्र्यसौम्यस्वरूपं च पुनर्देवतायाः कार्य्यं किनाम न्मह गौरि लाम्बप्रश्नं कस्यम स्यमहाकयपं सिनस्मि मं भाव॥ शिलायसार्द्धं वताविकलतन
कार्य्यां किनाम भवतो निगत्तत न। श्रुत्यकुनिडायगमा। समकानिडाप्रवासायकथं वरुव॥ सद्यान्मन्तांसान्तसमासमादसु
ज्ञानमस्मीन्न विनिष्ठियपथ। कार्थं कदन्नानरुकंन्तु ऊन्की शिलानलसाभोनिवत्युयान॥ शिलारिद्यानादवरित्वमं ह्नवं
गमदवमूमथवांभिसत्वथ। कनारुणास्मीतिदहभेन। व्यंगमवरुक्रीगमूखंदहभे॥ बेलरुयी कंपरमसुग लीवकाहृदव्य
त्यविरित्त्वव र्लूस प्रासादयादामकेकल्ठणार्षं स्वदाङेमं हीग्लिरुमव्यप्राकं॥ श्रुथसमहाकायित्तसीवगत्कम्मातिनिधियनमगिथ

जात

नगस्मिन्सवने विविकैयागौवसन्कुस्समगिस्त्वभ्य ४॥ अथ कदाचिदन्यतमा नाराजागस्य विषयसंपोषिधिसमुनगावनाथिन्तूरु४ संघवायदि

वालयोगयालिमंगाव्स्कोभिलमामनोजिज्ञासमा न४ संनागवभङ्कवतमेगातनृपगोत्नृत्समजवेनवाजिनादनादयेस्तगस्द

स्याध्वनथयदाणिकायस्त्युं दंगामूपजगमम॥ दू नादवबालीक्षकगंमहासर्वसन्कुमृत्यापितानिध्ययय १ समुत्कृष्टतिगिनसाय को १२४

यतो१ समाहन्मांगतगुनगवर्नसंवादयामास॥ श्रु धूक्राभिसख४ समालोकी वेगुनगवनगर्गसायुधमहिषनर्कनाजानीगैकिंदि

मानंपियुत्प्रवेसाटुं निदलसाहसमीनंम्हुवांत्येमणजवाणिगयंनमृत्ययाग॥ सान्नगम्यमानस्तिनस्तंगमन्भांतमागेमगर्गमस्तकृत्युं त्यम व्यूंमिव

ऊ॰ननलीयसिद्धापइ॰व ॥ अथ ॰नगवनक्तितिव मा॰ननन्तनीभनरमनूय नन्नूकर्मनजवर्छमानेननग॰ ॰मासाअलर्घीसि॰मतध्रुवति
गुमनि ८ सरुसाद्यनि स्कूण ॥ अथाग्वय॰स्नाइ॰ओी॰ ८ सायध्र ८ समदीयति ८ ययाग्रुमनक्ति॰व्रो॰दे॰यपोध्र॰॰वादक्षे ॥ निवद्ध
वकू ८ ण वरसग ॥ स्मिन्सेनरुयामासननीप्रयाणी । वि॰ अम्रुक्षाषाद्बलिनामसनाधङनाध्रवे॰पनमाद्ययाग ॥ अथ वाक्षिसद ॰
स्कूनगरवलगाद्वप्रसमाक्रिन्त्रवलूप्रनिनिवरुक ८ ॰ स्यादयनाऊगिसमृत्यन्नविनक्के ८ पश्चादाबाङिनवदत ८ समालाकयते ॰
दद्दणीनमर्व्वमतापारुक्क नस्मित्वयागाद्धणो ॰ वाक्षिणं । नस्यवृछिनरावन्नियणमगप्रपानेतिपनिन ८ सनाडानद्भवकिं क्षिछिग्रमरुगाः

स्मा ७ । गिर्य क्ष राज्ञ उव न नेभूद्र यै व ... वृभूम ... का ॥ सुखा ... द १ खविनाद तवस मातविकाने व गद्धस लान । ॐ स्मात्म
न्नः १ स्याद न लिंभिर्गीय त्नना त्य वक्षा वचिरु रुमके ॥ कोकि रुयै सा धृजनाद्विग सी १ ४ खक्ष्या पञ्चुर्व विदिखा । पायी छिव
त्यरुमि वी छ व खनाय ऌि उँ या धिनिव रुमनै ॥ ६ तस्मैनि कनीय दे याज्ञ्य हुवो कातिलो रिमर्ण प्रस्तुवे । ता न्यव यूल्म
ति वि व छ्य थ न के ष याक्षु पकानि यरु ४ ॥ कासा । ययान स्रुत्यौ वियृलेष दाने ४ गी लै न सा धृजन सी म नतिष्ठ लन । सु १२
तेषु बात्मनियधा हित वृद्धि सिद्धा य्ल्यानि सँ विनय ७ ४ सुखसाधनानि ॥ ॐ जि सम हात्मा नैत्रा जानै दृढ धान्मि क साम्य नायि कैस्थै

स्वनुग्रहकस्पुनिग्रहोकव यनस्तनाऽस्यसवर्द्धमानम रिवी श्लमानस्तमववनार्तभुविविमा ॥ तदवीजिघीसमप्यापद्गामनुकम्पनतनुवं
वमस्ताकारलिकानायस्कनस्तकिकतृणमवर्ण्यपिवा। यीतथागतमहात्मसत्वस्य धर्मभावतश्रुवैश्रवावैश्रवणमनतिदर्श
नैवस्ताकिकधायायाप्यनयं ॥ सर्वतिथ्यग्नकानाम यिमहात्मनीवधेके स्वपिभातूज्ञाभाउवृक्षिदक्षाकानाममनुष्यरूप
प्रवृजिगत्यनिश्चावासत्वैप्रनृजाणविकलन्ध्रमरु हतिषुलाविभूतनृक्राकोनायौनरविगर्यां ॥ ३५ ॥ भानराजानकीय
स्यविणातिनम ॥ ३७ ॥ एकानाभातिनन्यद्ववर्णनाम्याकृकद्वयं। स्यूणके गवेतीसरस्वीसमाप्त भानराहसं ॥ ० ॥ यनदृश्रवमवदृश्रवेसाध्य

ऊनयकन्यासनमानुषनवचसाधर्मदिगा चे र्गसाविस्मया क्षिफद्रद्रयावरुद्धेभ्रुवाषयदरुधतिनासाव्यवृध्यगयथाप्रस्कावकसमुपे
स्यनाजार्तनन्नवपुसनपुलयर्समाता ॥ साविस्मयोत्के न्नगनेऊन्नगोभ्यीद्यासमस्कम्पिकयालगारोमडयायतेननवनपुदेदगे
गेनाकृतस्वप्रनिवेदनंन ॥ निवघ्रचर्गस्वप्राकिणर्य नाऌसादनेपूनद्ववाचे ॥ तत्सावृगावक्किययोम्गस्यतस्यायलसेप्राति
देवयत्त्वशः अनुकूपूर्नतत्वसुगनमेनतानामप्याऽ वनरोविवाऊकेन ॥ अथसनाजाद्दष्टुपुचेयतस्याषखेपदगोलस्यप्राति
गध्यगद्भवतेगेत्वयकाम्यया. ततमगाधिगमतारागच्छगसामगस्यान्वधलभथैसर्वयाधगार्णसमादिदग ॥ पुत्पत्सकृयूनवनथाम

नामितिकानयमास ॥ रुमङ्क विर्म्मालिभनेनिवविनगमत्र ९ स्यानामगा ॥ प्र कितिषु दृष्ठव न ष्व केचित् । यकुपुदगेयतिनसयदना
तिनाजाभमालमीयनिदत्रीनूविनाक्रियभ्वगा अयसयूनूमस्मीधामलीयूनश्रूननूपप्रस्था । दानिघ्र२१गानेनायनि
लित्वनव नाश्स्मलेवाव नेनूनूम गस्थमसाय कार्य । नारुतेगेनवकुगेनविकुप्यमालोदोलायमानहृदयाविमम नेतक
॥ किन्नूखरूकनामिगुना न्यथ्याम्यनथनस मृद्धि कुनमनूयालयाम्यूनकुदूस्यनकें । यनताकमूरूावेयाम्यचेमे
सद्भूकमनूगझ्मीम्यूनाहाखित्वाधृदयिनोञिर्यं । तदा लवपत्यम्मानायमीमिति । अथो सयतो राकुलिनमवेनवमरूनू । गाकुम

पयाकसीक्रियपनाक्रमा स्तमवान्बवाविनिकथा ॥ भुवमा । यद्धन्भक्त सीगवकिंक्ति दत्रकक्षास्मिनतसद्धमलीरयंन ॥ इतिसमसासलसीपृनृस्व

माध्यमसग्रत्तनुष्यासुमोनिन्द्रकान्ययनालिवरुलानिसमूप ध्ध्यितद्धवनलाय्यर्थयाप्नुभरोनागुक्षाभिलयाद्न्यत्रयाध्यसकेकान ॥ तेन ध

ज्ञान ध्यमलनाबलीयमानेमवगमपणकारुमतभिनेस्माल्वयाः गाइद्धतुमिनिनिष्विनमकिनवनीयपयार्थकिरूणयायानि आघमानसीयू ध

रुभमृवाव ॥ नारूपलमममात्रुकसूनेप्मकुरावान्मयिः । यावदत्युद्धवामिलीस्वदहात्मानभवव ॥ कसानस्यगवीनस्यसानीकस्य १४०

मकसगी । यत्यंसृथमृसाधनीक्रियनेवृक्षेभा स नथ्यनिपनिधुरूमारिपणमयवेनमथ्यानूनेरु ॥ श्रथारितूर ४ सनचलाननरानारियालग ध

× मोहिला

नद्वि ल्लमातन॥ सत्वप्रकप्रादवियन्नल्वेर्य्य॥ यत्रणद॥ खतनमूल्लन॥ उद्धृत्य वैतंयनमेघगीत॥ खदात्यानिध्याकृलंरवेद गमसी। जिलातर्लमाय॥
धन्वारिमीर्लिविध्यमदरुगा॥ गयतीबकान॥ अथवामि सत्व॥ धु छरवराबणया कृगायकानखाद्वग स्मात्यन्रमादयायतिनागीकोवि॥
शृस्मादतमृद्वान॥ अथाहताग्यातमगद्यदभोवतद्य देशागसंकमार्गो। खदप्रमर्पसुरुसानिहकिकाश्चिसूनामीसह्निगादर्यं
रू॥ यगारवातद्विरुविकीर्णूवरु॥ कपाउनुकीममा वान्मतथ्वं। दर्द्दप्रमणप्रम्भियनीमूर्फिस त्वदकु मिश्चामि मृदरुमात्र॥
अथसामिथ्यम विनयप्रगरु खापिरुरवाच्यथ कार्मसूरवप्रवाध्मयछिगार्दवत्सीनरुणायं छृसिधागिध्यॊव॥ अथसपनु घस्कछिन्मस्ता॥

यवनाकायिपनलोय

का

गतिंत्रग ४ पत्रनीत्नमया ॥ वात्सल्यसौम्यहृदयस्तु सुहृत्सु कीर्त्तिर्विश्वासरावस्यपकानसूखक्ष गोख्य ४ । प्राप्नोति सन्ततिगुर्नि मतस ४ ७

ईश्वरनाकृत विप्रकिर्त्तिं किंदंभात्तयके ॥ शूलभविदि ६ लोन्तयामित्रय रूपरावासिद्धीस्तक सत्यकल्ला ॥ रउत्थमार्गसूजनाकिय ६

ज्ञान वें गनख्याग्रीक्षत्नूयातिरूपाति ४ ॥ । गांदर्वनाम ३ ४ रवनकथासक ४ सनकायकयथायां विनाकृमात्तयकुरोन्या ४ तिनथ्यमा १२४

महात्म्यावाचं ॥ सत्कृत्य धर्म्मश्रवणकाले कथ ६ याँतितानरिजाहंपाप कम्मादीनवधदर्गीनेश्वाति ॥ ॥ तिमह ६

लोकेपिज्ञानमर्कवर्त्ते विश्नातिनमी ॥ ॥ प्रणितवत्स विगानि त्सम्यग्कात्तनजातकानदनामकनलोककदामवत्सचिक समन्वितं ॥ ० ॥ ६

जिघ्रीसमय्यायजगमनुक्रमुयक॥ सकैय्थेके वबमहाकानृदिकामीयरुके॥ गअथानृगुस्यगकाधिसत्व॥ किलान्यगमस्मिन्नतन्थ्यवनउ
दगातिमीनुषसंयागनितवविविधुमृगकलाधिवासं रणगरूननिमम्नमूलवढ़रूपवदहे लेयधिकयानवारुतुव्ननलोनविन्य
ष्ठमागभीमाकलेरव। गलिसमागवल्मीकण्वयविद विक्षमहरू मिराणं वलेउवबणू सत्वसम्यन्न॥ सीरुततवकामायनर॥ द
गनहमत्गेमवरुव॥ सकनृणअय्यासादनारितु ये विरु॥ सेविष्नूरगायलूसतिलमामरवीके॥ सीणबगुणअदनण्थवासनि
नगमगिष्ठभविवककामऌवय्यागीगमनवायुदगामय्यलक्ष कान॥ मृगभकणिमानृषधानवागस्कुपखिवन्धीलिक्षसानृकम्य॥ ववा

प्रमाणस्कन्धयानम् ऋद्धि ऊँ च्यवासि गमाणि नव गीर्य्य कृत्युयार्न सविनयमहिगम्भावाव ॥ मकाजसीसस्वागीमि मी मृदु कैकार्य्यानन्नाम्भा तु ६
मन्त्रमस्य । यावत्कनामिस्वद्विकारियस्याभ्रागिय सादारिमृखीमृखन्के ॥ गदानाहुतुमत्युर्ष्कि मकानोजे १ सुनम्नश्चमायि
रावहिति ॥ सगच्यतियगिजगतिग्र थैतमञ्चवद ६ व्यानूनाहु ॥ गन १ समरकृत्नगपूवैकायस्कनाम्नि तुउ १ सनुनामिषपन । ६ १२८
समृत्यतन्त्रमसवखवैगभखमात्रणर्वतकवद्दरा स ॥ उकृत्युदृग्नादथगीनेवेदुप्रीन १ समानीयगुनगीमिल । तिथ्यघ ६
यास्मिस्वपृनायमागेन्वणप्रयानॉ रिमृखावखव ॥ ऋयसनाजाकुणक्ष्लो फिनकस्यविनयमश्र नेउभययाग्नणसमावजिनहृदय ।

सीयनिश्चक्रणान रमूवाव ॥ प्राला श्रमीभसेन रत्नेदोयाभ्ला लावयांस्कि ममयुरत्वं । गदहि सिडक्ष्मि दंयुवं मस त्यीनृवौ नत्रव
नेस्कु वासः॥ यांक्षाहिकी सरायवने स्मिनशी ना श्लूव ओ्यूपसग्नेइ ४ रवे । हिलो रवक्रे ममनत्वयुक्रो मैकास्ये किमू ६
रवयगक्रु ॥ गदाहि गक्काव व्व्यथेर्न वांम्बि सहोविन यमयूनापवां नंसेनाक्षयत्वस्त्वूवाव ॥ रवांहि मक्षेवमनू्यव युः
का्भ्का भायंयुण्ववत्स लेखु । श्रूयासयानाहिसज्ञ नस्य स्वलाव नामवगुणभवज्ञकि ॥ श्रुतगलीनव्यांमवेष्ठियत्क वनावि
र्नमीरवनाप्रयन गेनालेमन्याद्धि सुरवंतनाराीमेन्यादंगीजारुविगंमगभूलों ॥ विकिद्धिगं गयदिमत्व्रिसक व्याधवगं वीनाविमूवन ६

या॥ खदीयाःफु द्धिमप्रानम्हदर्थ्ययाडितामम मे। खलंचयिविनियुक्ष्कनन्समस्यादययनुपदः४॥ पदाक्षासुपदानेनकाठमकेस्यानुपद६
मविनियोग्यकृमर्द्धमरुवान्यत्राव गच्छति॥ शून्ये नेबाधिसत्वे४ सैनाभेयन्तुष्टरुवाच॥ नोचैष्णत्रयास्ऽजभैक्षोगेल्लना नि६
सगासि द्धे वृद्धिमस्यसाक्षिकिमजगकृदस्थासमुदा र्थ्यू विकीयकृतक्ष्णाय्यद्भगुदासृगान्यते॥ यगस्त्वीडवी मिद्धनामिदम६ १५२
वस्मनतारुवनानायमर्थे४कस्मेवित्रि प्रघ४६ ङ्कदूरगना॥ स्मिसत्वविनोप्रवल्पकानिनङ्कृति॥ श्रुमिश्ररत्णमाविलो६
रानीयमिदं हिमनृपीयपथ्य। कत्वचल्माननि लोत्याद्भनिरुनातिवयायनमानुष दृदयानि॥ पदोन्मनिगुल्तोश्विवमास्कनक्रिउम६

देसि॥ नरिंमित्रस्वारिज्ञाद॥१३॥ कविह्ववर्गिरूतयं॥ मावेवमूयमा नामन्नृपस्तयाविनर्सहृदयं काशी॥ मृगादिवयमनस्यस्क मानूधापवान ध

णाधूप॥१४॥ अपिवनक्रृतंवक्रनाद कौस्मियथाविनयय ल्लुनेष्ठायेनरमवनीनायिजन॥ सासंकमीरूवे॥ गदनेत्वियर्यरवेनासैया ध

घमानमि[illegible]नीति॥ सनथानियुतिशः ख्यणम्यय दजिनाक्रथवर्गमहासर्वस्वगृहमेयाजगमम॥ जनस्वनूपूतसमयेन ध

नत्रान्यगमस्यनाह्लादेवीसत्यस्यप्रावद्वेव॥ सायं यमानिजयिकेस्वपूर्दशो। सनथेबारेव७ साकदाविन्निज्ञावगमूयग ध

नाप्ररव्यूषसर्वस्वपूर्वपथ्यतिस्मिन॥ सद्वनत्वसमाहाननिवृ[illegible]याक्षतनकसिंहासनर्स्कनूरम्यगंसनाडिकयायपदापनिदगीविस्यक्षा ध

विद्रुमा

येषां शुचयातातन्मर्म्मीम्रगामिवकाय्यद्वनिम्ग्रातिमी॥ उद्यानकाननविमानसरित्सिद्धिविशेषगानाविकीर्णभूमतिनतविनाजितार्यगामिमुपरु

नउतीवघनान्धकानाकस्थंजगन्ममतिनस्फुरन्नरक नातिश्री कृतिसपूर्वसस्फुरुविलयस्कनसलिलेन वेष्ठसरुनियतितेस्फि ध

जा॰ग॰ न्द्रकरुलेर्वकेयमान४कातिविद्धिनातितत्रावसरु॥ अथसमरुाकपिनाहानरुगास्फुद्धतमनूविवनन्तारुथमानरुवमान्‌ १७५

तकम्पिकातिस्फुरस्यतिन्द्रकीवृरुस्यागुआरवारिस्फे ध भूर्दगमरिजगमम॥ अतिरुक्ष्वेर्नगन्युपानमवलीकयन्दरुर्गतम्पूरु ध

र्थईत्यनिजामनयनवदनयनियाणुकूडादानमर्तयय्यूत्सूकंतउविवरुमानंसगसायनिभ्रनतयासमावर्डितानरुकम्यामहाकविनि

ऌिफाहावव्यापानस्कंपुत्रर्षभगणमीऊमाहमानृषीवाचमूवाच ॥ मात्रालभमगम्यस्मिन्प्रयागयात्रिवर्केस । वेकमर्हस्तिकत्साधुकार ६
वान्निरूवाकृतंष ॥ अथसपुत्रस्कंमहाकपिमाकेतयास४ मारिपुणभ्यो ढीकमा ल४ साञ्जलिनुवाच ॥ मानृषास्मिमरुकागपुणष्ठावि४
वनन्वने । स्त्लार्थोयादयाऊस्माद्विमामायदमागेमं ॥ ६ गत्सृकृहच्युस्तीनसपसाफस्यव्यसर्ते भरूतू । नाथवानेनयूथनीममायिग४
नणीराव ॥ तघरुवासमरुासव४पर्नीकनूणमूपजग न ॥ आयकगोवन्धुसृस्थिस्तीन४कगाऊलिदीनमूदीकुमोन४ । कर्याविग
स्तयिसानूकम्यानाके म्येयर्थ वउसानूकम्यान् ॥ अथेनं वायिसत्व४कनूणयमानरुकोलहर्लेरान । स्मिन्त्रनववंसासमाखासयामास ॥ ६

यातिस्म मिवान् शिष्यगण भवनवन्द गंगातिजगाम ॥ अथ स्पृष्ट स्कंदति कस्थ पार्यकर्म कृत्वाय यक्ष कायवह्निना संप्रदीप्यमान व गामस्तदा ६
कस्थ व्याभिनारूपा कन्यकं पतीक ४ कि लासवित्र कूवि ४ प्रारिक्ष्यमानव ललिवित्र वाद्रेगा गत ४ पवनमद् गन्धे भानीन ४ सप्तस्तमयधरा ।
आन सर्वीर्यं दगाम क्रिजगाम गगनकागत वनमशिवित्रतल विकुर्वगन दर्शनसांमा तुम्बरूं रात्रयन्त्र यौरित्तदात स्वनमशिवी कूपनया ६ १२३
४ साक्षादर्यपाप्तिमन्यमाना ४ समूधगतीष्ठदन्तु तिरोहितनपरस्थवसम ४ पवासयामास ॥ श्य्थेनमन्यकमानाजाम्नगयाम ६
ताविवननन्युगमिवान्दस्यपत्रिग्रामेनकपुजीनामलिंवसर्नंनां तिपुच्छन्न कीपीतमगि देवैनमशिवीक्षू सेसाक्षस ४ को हरूस्त ४ प्रमकू ॥ वि ६
नि

नृपितगतनूक्ष्कस्थैश्च किलासगावलक्षविशायानुरूपगतदीनानजंस्नूकानीनाचरुश्च । कस्तींपुनयिशाव्यावासृकपाप्माथर्पूगतश्च । श्रुतकन्ना ६

गसेयागश्चकगभावास्यियक्षणीं ॥ सगत्दीननक ६ ञ्जनसुमरिपुणेमन्नूवोव ॥ मानधास्मिमरुतानाऊनामानूयरूणि न ६

रुयमिमासवरुमनूआकासिन्तिवययेनूयूका नाक्षांतस्मिसंदृष्विनिगमाविरुयावाव ॥ मित्रडारुस्यतस्थर्दयर्थ्यगा ६

वर्न्यस्थितश्च । स्पगकाश्चतनंयकीरुलमत्यरुविस्याफ ॥ तस्मान्मित्रस्थारिडारुंगफवद्रुष्ठमर्हासि । तावस्तिरवमवकेखरगवाक्षि

र्वसृहरुन ॥ मित्रस्थामित्रवानिनीयनिगरछ्यवक्रिमर्वीविषांसमूपयान्दिदश्च । मिस्त्रैव । तीगादिदीषमतिनीकृगमानसानीमित्रडर्हा ६

मित्रस्तप्रयुर्व

सामुद्रां समेतां कथकारामन्तु   वाक्ययानि   नीति

नगरे केसरीकूल्हकद्रुवसामान्यमृयाजग्मम ॥ उवाच वैन विनयाद्रियां तमहावयन्ता भुजनस्वरूपं । आगम्म सयक्षयक्षपद्मन सा मत्ताद्धृष्ट्वा

पयानलमनाह्रस्वा ॥ कश्चिन्महानाजनयीतिना [illegible] मि प्रयागयागालमिद्दयपदव ॥ कश्चिद्वणं त्रिकृतगमत्रयार्णं कश्चिद्दुर्जसं

आग गत्वीं द्विजनि ॥ नामानुष्ठक्षाक्षिमित्त्यवर्यम [illegible] मे यद्रं त्रिधिमयाक वासी । वद्धद्वीयनरुनादकनविश्रस्थमियद्वि   १८७

मस्यपदं ॥ प्रयागयागादध्मिक्षमागम ४ भकां [illegible] समृद्धउमिनारवनं । विश्वक्षितयेमयिमन्यसवकल्पियमाक्षायययया

वदमि ॥ अथ सराजा गनसस्या कृहगैनारियाहानंगविहमप्रवडितहृदय ४ संजायमानधीजानियगमितिविचिकामायव ॥ दक्षाय

पूरणम्रम

दानाद्विषकिकानामास्मदयामपि। ममद्विप्रतियाकिंच्यकयमहिमिन्द्रानागमि॥ अहमम प्रनगांक्षीनुभ्र्यादिश्वास्मिकर्म्मलभ। अहमबद्धा
गौर्वा। कार्य्यर्थंगतराकमि॥ गदद्दर्थयप्रनयये। किश्रुहर्षिपूजनमिमितिविनिश्चिथ्रेनमेवाव॥ वानंवालहकमिदंगर्व्व ६
मनातिविरुगंनपयातनिश्चयकनाः सझानवव मत्रुऊ४॥ ऊयागयनतक्कंभान्नखरूपीठीतरूथा। दृशिकल्यातेहृद ८
यखयिस्वलनाउथं॥ श्रीकणिपव्ययाश्चवदक्षासि मृगवन्मया। कुविज्ञायस्वरार्वगगज्ञमाहृयंकथान॥ अथगंगुरुसुख्यना
रू॥ श्रीगिहृवकेनगनाहिव्यास्तानेवमनुमगम्रुछनलमवेख, पनुमरागनगुव्याशितयागड्छनलोभयायथाम्भंकरवाविदिगात्मेवल ६
न

म

गेदीनवत्सलाकृपनंतानयितुंजवनमीं॥ नविलस्वितुमत्र गक्षगशुभदेशादविक्षयवाहनानानवगमधमवाश्चगक्कविलदयमीस

मयारशिक्षांविंतुं॥ अथवाधिसवक्षेननस्य.कर णनाकुन्दितगक्तहदिवसमरिहन्यमानामारीम्मारीतेनिजंकगां

नालसर्गीरयविप्रादेदेनग्रमायनादिनीमुभेति गारितिनीतिगस्यश्रूयदामूर्ध्वमानूषीवावीविसर्जसमाहनगहनाद्वि १८१

निश्चयात॥ इनगवववर्णीपूनूषमिश्रमिवापय मानीयमार्तेगालिलोपंनदर्दशौ॥ ततस्तदनननानिश्चितात्मा. सर्वग्रा

णसंदहमाविकयित्वा॥सगांनदीरीमनयांजगमहविशारणनवीनर्द्धवानिसनां॥ शाहत्यभा॥ मनस्वपूषाथतस्यमामाणयस्वनि

तिनमत्यूवाव १ तासां उनव्वाङ्कमविद्धतागी१ सयक्षमेवाभिवृयारूनस्य॥ ससाध्रमानायिनित्रिन्ननेत्तुब्रिवकेमानांचितदीनयेला।६
सवोङ्कुयांदख्वालितानूवीय्य१कूलीययोनस्यम६ नीनूकूली॥ प्रायस्थनीनमयनीप्रनूर्खंयवेला डोल्यूअमनविनिवाक्ते६
नखेदद्द१ख४। स्वेनाक्ष्मनोसमयेनीयववीनम स्यगङ्कुतिनंसविससङ्कृतिवंप्रमागनीना अथेसयूवृख१क्विम्बवाव्वेव६
सृद्धऊनद्ध्वेरानतेतनस्याय्यद्धतेनाख्यययक्रि१ सोमृखनसमावडिगद्धदयस्कयावाक्षान्यूयकौरुयासमूत्काप्यमानद६
विस्मयवद्दमानन१घलमेनेनत्रेच्छियमृवावै। श्रावात्स्यातींरानसंरुस्रद्धान्धेकववबा। नातीकळेमिर्दकामेदथेयत्क्रनोव ६

यामिनिश्चि कृकलतिहिदयाणायणणिन ॥ सकृपलदयामे तगश्छिन्नम्यायग्यान्किध्ममम्मूष्म ४ कातानामाक्तिगुल ४ ससाधूदयियी नानयाणदया । ग
स्मात्पुत्रस्वात्मनीव न दयां नीत्वाय कर्मजनं स दकृ नरुनन्मनां सिजगतां नेजत्वमूर्छायय ॥ अथ सनाजामसमारितन्ध्यरुकस्यवच
आ नेसयानजतयदोषं [illegible] कृतायवम्बस्वव ॥ अन्तयक सवमगयश्चिणांदकवानिति ॥ गदवेयनइ४रवमवइ४रवसाधूनांकिचिन सह४
कं नान्मइ४रवामिति ॥ कनृत्यव [illegible] यिवावीं सकृन [illegible] मास्तात्म्यरवलजतकृत्सायामपायतयमिति ॥ ॥ कृतिनूजातकमद्विगति १५८
गमध ॥ [illegible] ॥ प्रथकृनन्[illegible]कगणिगाणितनूनूजातकं । नकातत्रिभदन्यव[illegible]काव[illegible]स्कृयस्कथ ॥ ॥ [illegible] क्षिपतामायिमानसान्यादकं ॥ ६

किमस्तुलान्वलितं ॥४॥ गेश्च धम्मप्रयते वाञ्छितसंवहः ॥ कितम्नाम नितिहिमवत्कुंडो विविधनसवीर्थ्याविद्याकगुः वक्तरि योग्यविविक्तः ॥ वे ४ पानिगृह्णी

तरकमिसागा नानाविधपुष्परूलपल्लवयक्तविटप ६ नवतेम्महीरहणगेनाकी पूर्णस्फटिकदलामलसतिलपुस्रवणे विविधयदि

गणनादनादितं वानरय्युथाधिपतिद्धत्तव ॥ तद्व स्कुमपिचेनेत्यागकारुण्यश्यामाल्वानियक्तसवाविशाखिशातीवर्ष्यामा सर्य ६

ओयालिनायक गमू ४ ॥ सततुग्रान्तंकन्यकृष्यधृयाद ६ यंयधेनाभि स्वतामिवव्यामालिरवनमा धुयतिमिवतुरुत्यवनकाशन्यस्य मेघ

संघातामिवयुत्थन्येकानाविटपमाकीर्ष्ण्यदं तयागालरुलाम्मिकनेचगलेपवनस्वादइरीभ्मेनास्तवर्ण्णगन्धिषरुलंदिक्षे नानम्यमानभा ६

भीष्मस्त्रियप्रयायात् ॥ अथ ते वानरा रुष्याउनखाद्यपयान्तमाजेमासाअप्रयत्नगनगरायस्कंदौक्रमन्ते विभक्तीमक्यावगुलकयाखस्नुपवकम् ४
॥ रुष्याउलैरुस्यपउवानरैस्कैनाक्रमयमालीवनलोअ४प्रध भक्ति। गमरुप्ययोखे ४ चिमिगतोविप्रयागीन खवाध्येयातिप्रायत्त वेत ४॥ गेदक्ष्मस्नाउ
ठा वैवनापुरुप्राअयन्तीविस्मयवकवानामूपडगमम् ४॥ जु वीविध्याविक्रमवृद्धिसम्यदान्मानय क्रावदयायतेभू न आप्रवृद्धिजतेयकुना ६ १२
पियुस्यन्दुक ४ किंपुनर्नीरुमादक ॥ अथ समराजागा ६ न्यरुषान्ममदिदग ॥ रुयाक्षानुवानन गलवबल क्षातितरूनगानारश्विनम ६
कमावस्थानाम्रदर्दयानिधकाव्यकमर्यंवानेनाप्रियतित्तवायमद ४ भ क्रपिस्वप्रमान्मानं संदृष्टौगाढी खुमस्याप ४ पदविमानंवितस्य देवतलतेयमि

यंवन्यक्षुअस्मरखाकनात्यायृगपत्याद्धिंअयत्रामितिं॥ नतथावक्र॥ अथ्थेनसनाजाभान्कोदिगात्तंदकानाये मूर्छयावुसवंदनक्रभापूजानयासम

क्रम्यमानश्चगसं मइनिश्चयनायसंवेगयामास॥ सध | ध्४क्नपुसमनयाच्येघ्मसाप्यिनादिरिनस्यव्रलमन्यरंक्षमन्दीरपयविश्रमं सध

मासकमनमचृयमध्यसनाजासकोरतत्वविस्मयव | हमातश्कुशलपाविपुश्नपूर्वकमवान॥ गत्वास्वयंसंक्रमनामममीधीस्वजापविनेश्य

कदयनत्वत्वा सम्मूद्धनायकपयस्वयमकौतुवमभा | नवाकं ॥ आर्हवयंवादिहमदनूयाहकावदावक्रकविपुधानन नघत्ये

सोकाहत्तिवचनानाभवंमनासियगेनाकिकर्थे॥ अथवाधिस्रवस्कस्यन्नाकस्कदत्यपपक्तिसीमूरखंप्रातिपूज्यन्नात्मातिवंदनमतगुणनक्रमेध

जा

स्यामूर्तिर्तयथयीवरूवृष॥ अथसमस्तर्पुर्विविकृतमणीयसर्द्धेऽसूनरापूर्ध्यरूलंपश्चात्यतालर्कोतविमलसलिलाग्रायुमुद्यानन्तस्यूलभर्त्रीवनप्र

दंगामध्यमसताळयावतमर्गोल्यतामानिनायः॥ निवशंकिहियंत्रीवसुतक४सद्गुणरूबला४कनमर्गोल्येमनतोल्कःगफीथतंकळयावन१।

संगववहमन्यमानतध्यघिमेदेवताविलाषिनरिग६न्यमानघ्र(छ)यारितालिविलभायुणयत्सनेनजतन. लान्किपुरिसंयुकारि४छी

छदयज्ञादितीरिंघेन्याष्ठिर४कथारिस्मस्यजनकायस्ययनमनूगुरुक्ककानः॥ अथकदाचित्कतस्याराजाग्रीष्मकायवावदारिलवणी

यतयींसलिलकीर्तीयसिममृतसकमागेरूआनगुभालिभ्यातिकंगरतंवनयुद्धगसानक४पूनभ्वामारिरुगमा। मगद्धतीनन्दनन्नम्यछाहरामाकी

१११

दं समनक ४ पुनस्सुन्दनीहि ना शीकु कोनवयनाकिलामी विरहति याला लिगानुवृत्या ॥ विमानद स्पृष्ट्य पर सभ्रमलीन दृष्टं । गायवया
मीलेनयवीं ऊ युग्म मस्तु रावानि गये वेधूर्ता ॥ मात्यासं वन्मानविलेपनानांसम्भ्रमदगन्धो केलि नैद्विनैरं ४ दद्दकोकासा याक्रमानां
जाते स्मित पासावित्तास राः ४ ॥ रोनयिक लीयू नै ४ ययाफमा लेपेयिमूढ ऊग्वा । धसी मेन ना सी ने चैव नासी न
लितेन पस्य ॥ । विमानद गाम्बविस्रक्रमाना विलम्बमाना ४ कमला कनघ्र । दद्द मनायमा ना ४ पुष्पद्र मम्र पमदाद्दिमाला ४ ॥ मद
युगलानायिकाकिलानीं गानू याति चवहि भनी । द्विनरुगीगाति यगानि गीनाजलिनन्नरूगी ने ४ ॥ पयादधीनम्र निन दीमृक

नि

रि तस्मा नि त्वा दी र्घ्यायना रत्न म नि त्वा यनं का य मध्य ज म म ॥ व नि सं ख्यान व तं वे क स्या द्व गु ष्ठ वि न या प वा न सो ष्ठ व ४ सं न म्रु या यमा रि वा दा यं नि न स्वं द
वे व न्ध्र व यू र्क सं गा ड्डि क्ष विवृ ल स्त्रि नारि फा म्र न य ना वि न का का नि ला व न्य त भा र ४ प्र व न त्क न क व ल थ्यां य नि म्र इ स्ता गु नि वि र लभे या ली
न म ष्विव न म स्वि क्षियं स्फ रु ड् वा व ॥ रु म्हा म ल ज ४ ख व ली कृ ध्य य न्य न्न न्क ४ यू ना दा न ४ मु ति व दा यु नि क्ष न्न ४ का यं दे नी सि का य ने न न द्रु
लाव ध व ना ४ स सं र मा वं गा ना ज्ञा न म्रु वू ४ ॥ दे व मा मे वे चि न्न का ल सं र व ड्र ने नि य म न यो ला विं णा त्मा म्र नि न यं कृ नि वा दी ना म नि ॥
उ प ह ना ध्य म न ये त्वा रु स ना ज्ञा न रु षीं व व त्त म यु नि गृ ज्ञ न्नु वा व ॥ कर्थं लो ध्वि यो त्यु र लि ला का य म त म गा न तो क्ष्य न कृ हु ना जि म्न ला वे न ना य सा कु

१८०

भूसात्मना॥ तदयमस्यागार्थसंज्ञेनयथ्यवक्ष्यदितं माया सौधसंरतेक्रस्वकास्वरावीयुकाणयामीस्यूक्ष्मायुतिसानीदस्मादसिमादयरहनुमस्यतिनतिम्र

स्कमृषिवर्नसत्तवदरिजगमम॥ अथनादव्य४यनि | जनविदिगास्यागमनमालाक्ष. नाजानंक्रांक्षंसक्रियकसीमयरावीविगानीरुनहदद

या४ससंज्ञमोवगवक्कलनयना४ समृत्कायारिवा द | घवगमषिवनसमृ।घगाज्ञनिकूमलाध्यानन्ततिन्यवसमृजनेकयकजा

ननमक्रेला४नाजानमरिजग्मथ॥ गक्रसीसमृदावा | नलीतावितनयसोष्ठवं। नगस्यसमयामासकाधाग्निक्षतिकमनथ॥ ताह्मकनय द

दायप्रसनालुगादव्या४ससंनम्हंतितसमृदावानतूरुक्रमंसायूधमरियनर्कनमृदीक्ष नाजारांकमषिवनंयालिवितालिनाजिनिविष्टधर्षिसमायध

मानुषा ॥४॥ यत्तात्कन्याकृतवैपंजा स्मारु दुध्यत ॥ सज्जन दर्शनस्यास्य दद्यामि प्तनाम्निताम थेमस्मि ना ध्याशाविमि ध्ययन्ध्य सूवानं ॥ उदू नूवाव ॥
युगिगृहि भार्य मयावन्ध्यां मद्गानाङ्कुप्रसाद ॥ गदाक्ष्णपय यावदिस्मासि गमतयुथ्याज नत्तनवाव्य थागि गक्काम कृत्य थसनाजातिनृदुंयन
७ मिवनथवनमाशाय्यासद्रुतासद्वानलपुनववर्धप्रव स्यकृताति थिसत्कार्नं मद्गतिसिंहासनेति वध्यूसमृत्मारुमातमान्कश्रुयाश्मा १८१
युगलपवित्र ॥ प्रीणवकृमातनामायमकृदीकुमाता धर्मम्यपक्ष ॥ धर्मे प्रणिमनत्व्याला वदेधावृद्धयागताशातिध्ययस्कृव धर्म्म
उययथार्तेवकृमर्यादृस्ति ॥ अश्वत्थाविसत्वकृस्यनाकृसंपवेत्कस्यस्कृद्धमधूनविनाद्रुरनलववसद्धर्म्मे द ल्मासना ॥ मयामत्वंवृम न्यूदधे

र्म्मं सकृपतान्त्य । हिंसा स्कंधोनिव्ध्यादिपुरौद्र त्रिविधक्रिसनायध्यमत्तनाज । आत्मनीव दयास्याज्ञे जतवायथा जन । कस्यनाम रुं
छिन्नमधर्म्मप्रुनयाणिव ॥ दयाविया गा कुजतथ्यय नमामकिविकुरुया । मतावा कायविव्यन्देश कुजनेपिजतयथा । धर्म्माथीन
नेजदस्मा दयामि रुत दया ॥ स्वच्छि दिवलास्या तियुणात्मात्कियमृयणे ॥ दयाकोकविकृतरवाणिय नज्ञारुनरसमुंधीनामि
त्वाणीवृजातिविकृतं नेव वतनृ ॥ विवृद्धानस्थिवं य नास्मानूवि १ प्रीव्यनमत्काप्रदात ज्ञान्यादात्रुजतयाति गुणमनकीर्त्तिन गुण
तृ ॥ दयास्नोद्व्गंजनयातियमं धामृपणमात्दयावान्नाविस्वास्यारा वनिजगतीवन्धव रूव । नमन म्ह कार ४ प्युरस्थाणिदया धीनहृदयं नका

नृपाकृतस्कान्यनृपानाद्दिदेश ॥ अथ गीताजयपुत्रपाश्वस्कुवाग्वो लवव्यतकनाग्र । वानरावरात्मनमृषश्रा ॥ समृद्धगलालाकु दत्तुगस्कावमपचनपनम
हृष्टेनमिवारितादृकामा ॥ नैवनस्यातिमत्तिसस्कृ ॥ अथ पसवाविस्त्वमस्मृनीगडाकजवलमानितलजवाकलितामिवार्धकजत्तमतिदल
कलकलानावमरियगदालाक्षगतिवर्षेल्लवबसम कणाविक्रीयमार्णगन्वनेगानलाश्वद्धसुग्मवषेतत्यविवनसाविमावमाज
यतायणस्क विकृतदीनमुखमत्मृतैवानन गतमवेक्षा मस्त्याकतृलायासमाक्रम्यमा लच्च गासमकाविषाद दैन्यसंत्रासः समासस्य
गदानतसूर्थतन्यविज्ञाणवत्रसितमतितविरुद्धतस्यवतस्यतश्चभिरवर्नीगतमायत्वागतिनदलवीर्यिहमियम ॥ अथानकपल्कन्दकमणायाम

पि. तीगीतितर्दैसमरुतसर्व स्वीयीतिगयात्स्वगर्द्ध वाभिन्नाद । द्वार्यामपितर्थीनकुमार्त्यी गंभीर्वेषतदन्यवानेनाग्नी । वर्णितयदुंकनंगनस्वी
युगगात्रायमिविकोतिकोमलभैक्ष्ययातिविवद्धित ४ पृ सतस्यव्यवसाय ४ पृद्गीऊगममत्रैर्योग । सवयत्नात्रिजाग्रमस्यविक्रमनम्र सा
थेजगमयत्नतेक्रमग ॥ ऋषिर्नृक्षवगस्यगितवद्धग नैतच्चुदर्गतिदक्तनौताविकुप्रमाणयामह्याक्षिन्नूरयाद्दणिथितम्नक्रपाद्दरया
वजुत्यागरभावध्यवनत्नोयुतस्कैवनस्यातिप्रवतकंद ॥ विप्रकल्लवाउतस्यानकनातस्यवनवावन्धनश्याकृतेवाञ्चसमहासव ४ कथा
त्स्यवनस्यतनग्रगास्वीकनास्य समासमोद ॥ ततात्ससमातमप्रदर्दैससाद्वामातस्यतीयेग्रत्तनाक्षयतीताग । स्वसैक्रयापूथमथादिदेनोऊमादनत ४

न ॥ नि॥ तार्कसमावजोयितुकामनसुच्छ्रलानुवर्त्तितारविगर्यं नसमर्थस्कथस्वार्थमर्येप्रतिपर्द्धेसवायथयनार्थप्रतिपन्नवान्सरा ॥ बानिति ६
नयथागणवर्णेपिवार्यं ॥ सत्कुत्यधर्म्मेजवर्णाकत्रलम ६ वर्णेनाजावववाध्वव वं नाल्लाप्रजातस्त्वयापयन्नेनराविनर्यं ॥ कुगस्लुकथयाम ६
७३ थ्यपनर्य । नर्वं कत्रुह्ला ४ सन्कारावक्तिश्रुति ॥ ० ॥ तिमहाकापिजागकतत्का विंशतितमं ॥ २५२ ॥ सबानिगच्छेसंख्यायेकेकम ६ १०१
रूनं । कयिनाञ्जानकं ष्मकगानमकादष्माक्वं ॥ ६ ॥ ० ॥ सान्मीरूगकुमा णयिति संख्यानमकृतां नाविमर्थं नामकिंकिंदस्ति ॥ नय ६
यातघ्रुयान वाधिसत्त्वकिंतानकद्मायवसतोपरुकुमर्थकामस्य धान्तवादनीयमामिर्कनागकृत्प्रमाहामर्षसं नम्रमदमानमात्मयादिंवान ६

ऽजसामायाणंयातक्रोधमेनेति ॥ दर्स्यांप्यगूनीताराामद्धादस्यककार्येसंवाधवात्क्षाभावकासेधम्मेस्यांथैक्षेपद्धावासंयनिग्रहविभयुयनिकेऽताद्ववकद्धा ६
विवेकस्स्वीसद्धस्नयप्यनभाग्रधद्धमाविनय ६ नियतमानसंस्काय भावरूव ॥ नमस्तत्तिनसमोदानेंकान्तिवल्कवादिनीनदनूच्य
धर्म्मारव्यानक्रमं व्यतीहिनाम ॥ ग्रंतान्तिवादिनामि ६ श्यवलाकश्चवृद्धिपूर्वकसंक्रं ॥ व्यय्यविद्याजयसामहितव्रययाम ध्वक्रूत्ला
स्सर्गंश्यानीनवाक्ष्णिविक्रियाश्वनामायनसंजन ६ यत्किपूर्सी ॥ आनन्नस्सुक्तानिकयुणदहावीनेतात्मवल्लाकमलक निश्चुनस्वकान ६
यत्कान्तिकथाग्रणक्र गैज्ञान्तिवादीगितनीविलंक्रं ॥ स्वरागदल्ताामस्तीक्रमायपनापकानस्वविकानभीना नादथेयूकाश्चकथविमायाश्चवी ६

ंगवबगगयप्रयातं ॥ ९ ॥ यांसगरुडामिवपूज्यं गुणा ७ ॥ अपिवरवस्य ४ क्रान्ति नामिषा ॥ पुरसवतावातिज्ययया ति द्धि ४ पूज्यन्त कीर्त्तिवयनावद ६ ४
नज्ञातायसमप्य क्के कनाविशुद्धि ४ ने गुल्ला घेन्वयनासम ६ द्धि ४ ॥ यथायनांध्वमसंदानकल्प थव क्ति के ४ सुखवतां मनोस्ना ॥ गुणारिति निवं कि नवार ६
संक्षा क्ष माति लाकार्थकर्नी क्रियास्ला ॥ अलिक्रिया ४ कि सम न्नि नानी ध्याया यतनांवलसंघ दय्युन वा या दि दावान त वा वि धी नात्य थ्यंव रूा कि न ६ १७२
नथगमि क्लि ४ ॥ रूमामथ वर्म्माल सज्जना नीवि कुल्लिता इज्ञे नदाक्कवाल्ला ४ ॥ प्राय ४ पुसमा कु समल्लवे ग्न्ध्यं न न्की क्लि माला वयवाराव क्लि ॥ रुकीदि ६
याधुर्म्मविप रूमायां प्रारू ४ सरखाक्के ववि मा रूमायां यन स्मान्त कूर्च्या क ४ वरूमायां युयत्नमकोकासि न कूमायां ॥ ४ कि समहास्ताना सीथ म्याति थ्य ६

२

चकार ॥ अथ स राजा निद्रा क्रमविनोदनात्प्रतिविबुद्धः सावसेषमदघुर्णितनयनो मदनानुबद्ध्याकृष्टहृदयः शृङ्गायतयालेकः स ऋतुपर्यायपञ्चक

॥ जकादवृताकनाथ्यूपगमरायमानात्कछिरसर्गीयध्य कीर्तिवायतद्वयगायतयालिकाख्यः स राजा देवीजनस्य विस्मृतिये कुणारसिक

थिकडवाचिवंछितदर्शनात्मकमकिन्नुत्कायगयनाभूव तिविधृतस्कप्रवामनयाजतव्याजनाकवीयरः स कक्कूकेवेतुदलुयालिरि

नकः पुनावववैः कृणानुयात्रस्कद्वतमनूविवबार ॥ स गायबकिजनानेरुख्याविनाविगीविविधकसमस्तवकयन्त्रवतिकनयच्छति नाम्न

लवसनोगाविचित्रामनसरंस्कदोभुमयदमरिजुगाम ॥ दस्वैवसराजा शान्तिवादित्तनम्छिवर्नदवीजनयानिवृते पूर्वे वैनानुभायदाघात्मदयानिवृ

प्रवर्केत्याक्षिवश्चाद्विकित्सा ॥ यमसृक्ष्मानंसलिलंतत्सलिलात्कयावशाद स्थपयत्नवातेनतु मीरायमीन्द्रवत्समदमागर्तीनरवत्वसतंगतमकिरत

प्र ॥ अथसनाजाज्ञंपूर्वर्षीकीर्त्तयादृष्टान्तिरेत्सनन्द ॥ मव श्रीवाच ॥ सत्यमत्रेयपूर्वावभक्तेभवमायन्तारुद्र ॥१००॥ अथसपूर्वव स

मायत्तिकरत्यचिमादस्वदवेवतूदेव्याजीमन्दस त्यामि त्यवाचवरु ॥ अथसनाजाधिक्कामिरोन्नमवरुत्सयतधन्नक्षिणां संत्यायवरी

रु ॥ मातावक्षा४॥ नवींविधिनापियत्रिगुमनमरु ४ कर्णयस्यनतामवेत्रश्चा उदुम्याकाकीनामजं भश्चजेताकिंजीवतोनन्ततन्त्राधमभ

नेना ॥ ७०॥ मुक्षामृधिमावधामहंष्मार्थेधन्नु४प्रवकर्षे ॥ अथसस्वाधिसत्व३कन्नर्णयामरुत्यासमृपन्नधूमानहृदयस्करत्कनाक्षिवानाजा

ञा १६१

तमुवाच ॥ अलमलं महाराज इति सखा ॥ यदेव तां दिषन ४ प्रमातनां विगारिनामयाय्यमरप्ययधिवीन्न रुगे देवस्य ग ४ पदिनृयाद्यं पनं

पिवधर्मसंक्रयाकृ ॥ श्रमरुद्र ४ वादयपीदमातमा ४ यतानि वेवंब्रमं नेष्ठमानुखा ४ पुत्तोरा माता ४ रुलसमयदाश्यायकगीमूखा

वदीय ॥ रुपया ॥ श्रुत ४ क्रयामत्र कुत्र्क्षमानुर्वे यपीप्मिते वेवमनं तोकिंवनः । कुत्र्क्षपनेवमवन्ध्यं सारुसंमि प्रत्वदाज्ञाप्रवनं

हिमागिव ४ ॥ अथ स राजा तन्नस्यायकानित्यापि सदयवेताक कनत्व [illegible] पकानाद [illegible] पनमवि स्मितमाकिं [illegible] माद ४

वर्द्धमानमदीक्रमानमं [illegible] ब्रवनमुव्राव ॥ साधु साधु महाराज ॥ ये [illegible] प्रयकारं पिदया [illegible] यमीदृशा ॥ गुप्ततो सानुबद्धं दिवयमाकूति

गन्धर्व्यां तस्या कान्तिता विस्मय प्राप्य योगेन्द्रस संनागात्य नौ विस्मय विक्रियी ॥ अथ तस्य नाम्न ४ स्याद्गुनं राजनसमुत्थिता तस्यापि गन्धर्वसंनागव भाग
स्यन्त दरुवनु ॥ यथा तामन नाम्नुतिरत्ना निरवकोस कान्ति ना प्रथयस्य त्ना निरवकोः यस्यान्ते भेग गुस एवं नाजा ॥ विनैव राज वयन्निभ्रमत ॥ ६
ला सान्त्व रवान्वेषण कनना के खवविस मणो व्यकाम यं नृवन ॥ ७ गानाक्रिय नदी तीन सान्निविरुद्धस्य खादरुल ॥ तथा नयपस्वा ६ १७०
वर्द्धन गन्धर्व सदार्थ कान्त भाति लसंयक्रोदयाविक्रतम जर्जूनंबयन ४ गाक्रमघ्यखरा वोधक्रिमकु मिफि निर्व्यपमूयथ्य ॥ जसन वूसाव
ध्यमा ॥ गोविस्या जल क्रीडायाय संयकृपन्व वरंखनक्राविध्यानंनं दिख्य जागासऊनमरु गावलकायनयविद्र गकौन्तदीमनुस संच ॥ कुमनवा

स्मादयस्मक्षयदगणाति ॥ वृतगरूत्वाति मनूरवींविशालिनसान्क नाति प्रयान्तेकतिमनणीयजेसरोनिवतान ... सन्क्रान्तयेन प्राकृतनासि तेदेवल

गजामगतेनमानुषरूतनइ धर्मेतस्यावनस्यते ४ समीयम् यजगमम ॥ गंमधवृन्दमिवमायरनावसन्तमांसा ... गोतमयि ... तवदी ...

तीदूनाद्देतनयनि ४ सवनस्यतीनेकमूलोक्षमानमाधि नामिवाद्वै श्रायनियक्षसहकानरूलमूनाति ...

स्येनखेष्यूरूजनक ... वनसायादूपुरुषायसवनस्यातिविभि त्तिध्वयमूपजगमम ॥ समृयैष्यचेनंददर्भेफ ... यरोगध्याये ... नने ...

नेनाकीविदयं ॥ अथसनाजसर्व ... लिलविनाथविप्रतायिनस्मान्मुख्यपि कुद्धमगिदनदननेनानूविध्वंसयन ... विनासयन सर्वान्वाननऊन्मानिनिसय

केरगायुलथ वाचिसक्कडवाव ॥ कामंगनीनंक्रियक्रमम मत ४ यनस्वाख्यमयागतन्तु । अकानियथमोविनमाधियस्थीतसाम्मयार्केविनिवाकेत
पि ॥ जिवाहत्थेविछिषक ४ सदप्यांत गा अक्षुलंकानव ६ इहहकि । वीनायथा विकमविद्रुं भारीधायाकथ्यमीनृजमहदामि ॥ यनाम६
सत्कान ४ मनस्पर क्रिय्य यूकेस्यसमानजा खे ४ जख यथतद्धस्यसम्यक्रमसस्यमयाप्रुमानन्त्यमिदं मयाअ ॥ जत्मीनयत्थेयनइखयागह
सजकियागह ४ मखविप्रुवावा । क्रमतवानेनसमरव्य ६ वगामसत्मवास्यागम नसमव्यू ४ ॥ पूर्वोपकानानृनगात्मरुछि ४ सत्काय ॥ ६ १०७
कि विमर्तीयगीव्यत पूजानयान्विरियुगावम स्थी ४ कुगक्कसावगुरुणक्कसत्तू ॥ जनगुणभ ४ सक्कदनासक कृपाकमयीगद्यसर्नउयच्या । नया६

प्रियपुत्रांकुसमरक्षयोः क्रियाविहीनान्येपि ॥ गुरुर्वा विहीनश्च विपन्नकीर्तिः दोषादयं नावसंकितस्य । गतिर्दिवकस्य वनाम कान्याकालाकलो द
स्यात् नकालेस्य ॥ गुरुणि तार्थ गुणश्चाप्ययाक्रमयाद्वर गावश्च अथि कपुरावः । धर्मेणत्तस्मादनसाधिनार्छी स्त्रीवकृतउमनुष्याहितस्मी
४॥ यच्चत्वलीजान्तयदानमात्यात्पौनाननायद्विक्रमतश्च द्विजातीन् सर्वान् भूखन्त्ययगगयाकीर्तिगानुकूलनयिभवनाजा ॥ यर्थदिध
म्मायेयगश्च समृद्धि श्यामक्रमस्वायदयनवत्रवेव ॥ कुजा नकम्याद्धिनयावमस्माद्राज मिलश्चान्नननाउ नाउ ॥ श्रीनित्यमनजाभ्याति
यावद्धक्रमनवाक्ययगननतसश्च नृगादिरावनसंहृतक्रियागन्नमयहायययोति पिष्टं ॥ गदवीदिमगामपि मनीसांवर्जयक्तिमद्वफ़ामवालो ध

रिंगाध्येतंपस्युयासीवाङ्केश्वासंतासींष्यागुणादिप्रियपवन्नपुनः॥स्तनमतिथिजनमनाहत्नमपुवान्नविविपवद्य,तत्याविष्णुध्ययथादितयुस्कावातिःकुजिनस्
स्वयम्लायोरिःइक्ष्वाकवंशीतिः१कथाःरिद्धमौलिपिथ्यमासीव कानना अथगतिर्णजागिमवाप्यमानश्रीमन्नूतनराद्विपद्रूविः४तत्यान्द्रियैः४ अवश्य
म्रूपनेकनातियः४सुर्यमादरगकप्रथम्भवबद्धतं॥कु तेनन्रूपनावयामुष्टानवावलयकर्वलघ्नतादयत्तवायनतत्नाप्तातिसखानिकः॥वन
पदानंगातादिगुणानमेस्कन४॥कृतादिहीनापिविद्यायान स्यस्४पदानगीतादिगुणादिपदिमान।पत्रगसौख्येनातिसाध्यैनेपुःवैघत्तामामसि
प्यजंतेनिवार्थवश॥कृतस्यनृपस्यवयगुणास्यवान्तसकर्मस्यपनाङ्कयस्पवा।रूस्नाप्यत्तकोतातिविधिगुणाक्रन४कमाञ्छिमवेवढुहममानेका॥स्तंविय४

गक्रमसेममदीनृदाकल्किन्दु लीक्षायविलीविनान्तघना ॥ सत्री सिमरुद्रमनः ४ सनातृहेतु लोल्वि गाथा अगोसृद्रतिन ४ ॥ अथा गतायुद्धेन नृपशकिरीतेकृ
क्षमा धमकमरुद्रविग्रता । जनस्यवयेनरवतृखरावन ४ ‖ यनाशयाद्वाशविश्वारुकर्मण ४ ॥ अथ देवी नियंगाउगच्छिगीवलीविनाशायुवर्णव
जीविकी । जदीनयायानिशुरुकमाणयाकृयारूपकायग ॥ ‖ ससृखायव ॥ मन ४ युदामकूपयानमनाकिनं । विनिर्देहन्नक्षितिविवयुवकोगे । अथ ४ मुय
तेनमयायुरोनृणमजनेनवश्रेष्ठ्यातियदृसंगया ॥ यथ ‖ समभेयकालिगायियावकसृदानसंसकाउलामिहन्तदी । यम ॥ किमायाकिमनाद्विलद
सृथाश्रीगसपताकाढितयक्रमी क्रमी ॥ कृकिडांध्यायायधंयनिरुनागिलद्धतारिरवाडग ॥ अयंदेवनजनयातिभेशुग्राधयवला ॥ श्रियंयूक्ष्ध्वास्माद्भुवानिसृरवरा

धनूर्द्धानाविदग्ध्मो वीविरित्मयाखेनमूर्पान्नादः ॥ अथवा पिसरब्ध समनकेगोजनकालाददलमूर्पगत्यव्यकँ समनकात्यनिवतास्मीतिनि ध
श्चिनमतिव्यक्ककाममृपानूर्देवावित्युनाजानेनायं ध मययान्तकालश्चेति विदित्वा । विप्रदपदारुनेनमानुषेणावच सानाजान ध
मावराक्ष ॥ तेस्तुतावन्मसतानाजमामीव्यान्सीन ध नघेर । कीदृग्रूलमिदन्कावाढिनीदयितुमर्कासिमा अक्षिान्निर्ङ्गतसम्या ध २८४
कीतिनर्तगदद्वनेवनें । अूसाब्रमूगोस्फीतिका गो मीन्यवेदयत् ॥ अथ सन्नाजामेनजस्याथद्दगेनमानुषेनाशिव्यादान ध
शरूगानन्मावड्रिगद्दद्यकमरसेयपूर्वर्षगवाद्ग्रलानिर्दिदन ॥ अथमस्याथद्दगस्थनादगाप्रिनीनि ॥ अथवीपिसरवर्मूपरङी ध

पद्मशिक्षायगरुमसम्भूवाच ॥ कृष्णउवाच ॥ सत्यं नवप्रवृदायमूढकौघगर्भकित । डवेववनमूढ्द्वर्तन्ते पौत्रि कृ... कउक्तं ॥ यानि जासस्यनस्यायमीक्षा

णीयग्सयक्रिया । आत्मनोपि हं दक्षायां हि जे स्थापत्तयश्के यं ॥ अथसनाजाकिन्नषल्ययमबोविकृगुप्याः क्वतिसमत्यन्नकोदेहस्तु सावेग

सेन्नमूवाच ॥ अतिरिक्तार्थे मक्षीनमनानस्याविगादितीम विदिदेसमसूयगः सोकस्यामि वम वमन ॥ मयातिशयत दृष्टिकमा नस्या कि वा

धर्म । मतश्च ममनूख्याख्यायदिवंमिगमववा ॥ वाविसत्व उवाच ॥ नार्यवि गसादन नववा जतकृत्मास मगत्ववगम्यकेम्मः नार्ययूनत

कडु सिद्धिय व स्थलीञ्ज्ञारुनं तेनमयैवमूकं ॥ कादिरुतं २२२२२२ तानमिवावासि कृद्रजोरुनीदि स्वातिनिषवार्कं । प्रियरुयुगायाविकित्सकस्य

रीनिश्चिव्यविजटान॥ातिर्यग्नानामश्चिनाग्य॰ णंसतौरवथ्यवस्त्रवाग्याय। कर्लेव्यसौवन्धिसृदृजनातीवि॰ गागानामिवविक्रणा
षं॥ गस्यकुवनस्यमश्वकाणा॥ ...नमीपगातिम्नगम मरिषुणताहरवन॥ अथवाभिस्त्रीवादीवेदणाशिवाकधानवयूथसमनू
जा णगमस॥ अस्यान्व्यगुवि...वायामकृताद यानिव४ कनविदन्यग४ रुतमूपरीकव्यामिति॥ मनथ्नश्वकृ१॥ अथकु १८२
दाविकस्यीभारवायीपिपालिकारि४ यस्तूपूटावक्षा दितिनूलीवान्नाभिमहद्धकरूलेनगवाननादद्दगु४॥ गद्दुभलारिवद्ध
मानीवस्तूगन्धनमार्द्वायपन्नयाशिपाकवणाक्तिथिलवन्यतिनस्यानद्यानियवाणा॥ अनुपूर्वेलावाद्धमार्द्दनदीभ्रातसारन्यगमम्यनास्त्र४सा

क्ष्मपूर्नम्यकस्यां नदीसलिलक्रीडमनूरवगाजालकनत्तुकयापात्सर्वैव्यासक्कृत॥ गत्वानमात्यसर्वेवास॥ ।संभ्रमसमीयिहुगमर्गीनानी॥ विस
ष्येिलास्वलति नव्यकानप्तुल्लारिनामगुलुमुदयन्त॥ नग अन्धम कौ॥ कर्णम गीतास्कापी धीकृगा ख्यासविकूळ्किगारुभारूलथकी कूरुलव
क्ष्लानिविविक्लिपादिक्वाविनावनानि॥ कौहरुलयव सगलाल गननयनास्कृगायाधिगकृन्य्यअथरूलीयविपक्वगालरून्याविकन
नयमानैजालकलनुकयाश्वैभाविलमममवक्षकिमि दमिगिगदावाजिगनयनाश्च समयड्रान्कसहनाक्ष्न॥ अथसनाजागेलूलमानाह
ययाय्यायिकवैक्रजनयाविदृष्टं स्वयमाख्वादयामास॥ अद्भुगनवसनाथनव्यक्षस्यविनिस्मिय॥ अद्भुगसनभनैवयग्रयागगुलरुानिलना॥ स्मयूवैवलू॥

जा

नवकान ॥ तारिमदाज्ञापुगिपक्षिय श्रीनाशापिगामय्यविपरीत्यानश्चयुग्रश्चिवे गुष्वबद्धराह्नुस्वैवाहमवाह्मरिडयत्न४॥ ॐयमदानाजममीमम
रि४ममद्युजागिद्दिमकानन्दूदा। समानजागित्वम ६ [illegible] यीवमंकीस्लागयजानामसह्वासयागमत ॥ गह्वखासनाजायनेविस्मयम यत्यपू६
ननुवाच॥ श्रुषिपाथममाख्यादिनगदथंमलीयातिश्री [illegible] ॐतिकस्मात्तरज्याथमाभ्रानजागिहिमीछ्रु यकवानरावान्॥ वीत्तिसवडव
व॥ काममॆंवस्यवेलामहाउनाउनीदिह ननूवकोर [illegible] कुमायिति ताति। असंकुगस्यायविमद्ध गीवमूयादि ऊंइ४खमगीवउ४रवंमजा १७३
गवराकूमरवमानसम्यकेगगस्यवन्धायियगाउनस्य॥ ॐदकूदक्षावमना। किदेन्यंगाखामगतप्रुयातवद्धमानी। खकाय्यविकावसनी। प६

त्राधिप्राइङ्कवन्मीसदसेवइ१र्ध्वी॥ आनम्यमातानिधत्तं विदक्ष्वाविनिष्यगद्दीपकसितीमखान्तिनरीमहान अन्यविविक्यवेगमदर्शकया४ळीतामि
मीगतीमिमि॥ वेगोपिक मयानितविलेनाकधमामा६ रुमथस्वमूल्ये४॥ आलोतायामगुज्मधुमूलीस्वयादयावे व्रतगीतिवेध्य॥ प्रारक६
न्दमरमान्यूनतरवर्णितादिमेरूमीतानायिस्वयूथ्यात् ६ नगष्कनारुसीसमवायमस्यपसानिर्गीयातिमिवायुभारवीआसमीगनागीनगया
गयावणारवायरुस्फनवयादस्य । अमीमदेधमाक्रम६ लोदिशकी४निछिध्यमीत्वस्फिगतास्वयूथ्या॥ अथसनाजाणाभागुरजार्णनस्य
मय्यवलाप्यींगमाहासहमवकपरविस्मयमखरन्यूनतरनेगवाच॥ पनिह्यात्मन४सीर्स्वीयवयसनमायगन । ह्यामतिसमानायोग्राके ६ ६

क्वाकंदर्वदेवक्रः॥ नंदा कृष्ण चित्तनकलागुत्तानवक्रमेयूना॥ क्लिनियस्यसर्वां॥ सगत्रसाक्तष्पूनडग्धानवनविहानस्वरवेपुकाममनतदूयक्रीडायसर्गी
यानिरवदानंदयानिश्वर्गीत्वद्याम तोविमानपुदलो. मदोद
गयनीयवनगतोनिद्रावणमयजगमम॥ अथ मायाविकष्युस्कावाकनगागमवे
ऊ रवनाजानं वनागमत्याकिनाक्लिय्यमाणहृदयंन द्रुगनाद विरुक्रायथप्रीतिकगसमवायाश्समाकुलतरलष्णातिनादसीमिधकलपुलाया २११
समनकग॥ पुसस्रद्रा॥ नाम्क्रवालव्यजनासनाद्यै॥ पु ध्याष्टतै॥ काक्रनरकिचित्रै॥ ज्योवयोविक्रीननुगम्यमाना॥ क्रियः॥ खेगवानि
रगविनवनर्था॥ ता॥ प्राप्यानुयानेपौतिमहोरहोनीयूष्याणिवानुभिन्नयद्भवानिप्रख्याप्रयत्ताप्तीयप्यलोरमदानुक्रिरेस्वतयनाकभेल॥ माग्यतय

त्स्वाच्छक्त्समाद्दिनामान्युत्क्षेप्यं ॥ तत्कालत्वेपि प्राक्पश्चाद्भावेन सञ्जायते तत्सादृश्यतात्पर्यनेनाभ्यनीयम् ॥ अथ गौवेत्ये नमन्यत्क्रियादिपूर्वमाणलक्ष्यानाक्षुत्याविशेषकत्वेन

मतविवत्कृत्स्नशक्तिवादिनश्रुणुमयदप्रत्यक्षमूर्त्या विदितो यत्पुरावमाप्तात्यास्त्याद्यमनेकस्मिञ्जनादिक्रियानाक्रावात्तसदब्बाह्यगासीनेनास्कैतावा

नयिद्वय्युत्पत्तिस ॥ श्रुतिर्सर्वलक्षणमवीमतनयावाधमयदश्रिय समाकृष्यमाणोत्कर्षवनायामितत्त्वविद्यमानमयदर्थ रक्तत्वमनिवर्त्यसमसोम्या ॥

दर्शनमतिग्निसम्यर्थ्यानिर्णयाद्धनास्त्वदमतिज्ञत्वकामिदनय ॥ श्रियाश्वमनाक्रियागमनदनविषयसन्निकर्षयथार्थज्ञानोत्पत्त्यनपेक्षमानसमाकाश्मा

मिवर्मगत्यर्थप्रत्ययदर्शनवक्तुमृत्तेवक्षासनमासीनं ॥ अथ गानानुसुक्षियत्स्वमत्यक्तुः साक्षाक्रमसत्वाक्ष सदगतानादर्थवर्थकाविक्रमपितासीत्क्ष्याप्तित्यानिरुक्तम ॥

किञ्चिद्द्वाव ॥ अथ सनाजा गस्यम दालप्ती द्वितीयं यालि मूरो वाहकर्ण्णना स्विन लोल न्थे वति व कर्णे ॥ यन तिरु तिलि गय सोगा नी नेनमु ६
तिवन श्च स मुरुनो अव नोवू काय ॥ यनि विद्धि ति गनीनय कुतिष्ठ ४ यनि विक्रया वजुन रु मातू व ल्ला ॥ मत्र छ म्य कन रान्कि धीनी वि दे
गमाप्रकरु मा ण स्यसा क्ष श्च नासी द्वुर र्दवीणि या अन्त यन्कुरु र्दध म्मा द्धी श्च सर्क्य माय ॥ वनि सरयान मरु गीन न क्षकारु ण अन्नम लो ॥ ६
वाधेगाइ श्व मत्य न्द्वै यनान वयथा छि न ॥ वानन्कु द नरुकम्मनन्य श्च सक ला सध्या कि रतमन ग गाइस्मिन व नविति म्ना ल क्षयय व नान्क
देगा श्ना क्षवदो क्ष सरु सा वि व न ॥ तिमरवन्न उ ग स्मि त्राज तिरो म श्च वद्ध म वदो श्चर्यो वक्षि का लाक ताया वमूच्च नायी सम्मद्ध ग मद ति काला
कालिक ... प्रनि

रुलं समकताः सुरुत्वा इति ते व्याकुल गस्यन्तः क्षाः समायाजानान्यमांस्यमूनस्कयः सुरावमदात्म्यं गत्वा गतः नाक्षीथेनलीत तन्ति मज्जुनं मंस्यमानाः पुनाय
मृषिवरस्कस्य नाक्षादाप्रात्सवतिदं जनपदं निदस्कीः तिजागत्यागकीः समन्तिगम्यताम् ऋषिवनमरितुणस्य रूमयमाणाः कृतांजलयो
विक्षाययामासुः॥ ऋष्यामदकागामितामियनंन्तय नमासादतिवायसेतन आयानत्तस्थन्स्थं तनौ सं नवपुयात नेमाद्यूनमस्यधर्मी श्राः
स्त्रीवातव्रज्ञाउत्ताविप्रदीतानत्तागसानाहासिदम्भूम ज्ञा। तस्माद्भद्रं भोः किंतियस्यतस्य. स्वकं वधर्मगुणपदनरूः॥ अथतान्वीक्ष्य समता
समान्यमसयन्नबाव॥ मारीसुपूर्वकः सपाणियादमासिनाकल्हनानामसमनागसः॥ किन्नवान्यापितावत्सम व नान्तिवसतः॥ कथमकस्यपिरः स्वायः

[illegible] ॥ तिषाद्वा [illegible] ॥ [illegible] लोक ४ यन गान्मय ४ सा [illegible] नत्व [illegible] मये ॥ [illegible] लोक ४ य [illegible]
[illegible] ॥ सातनकनय [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] नाथ [illegible] ॥ [illegible] सलोक ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] समय ४ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] यत [illegible] ॥ [illegible] ॥

पद्रकनातिभिक्षायां लीकिम्भसूतेषु तेषु॥ ॥ ७ ॥ एवं त्यन लोकसंपुद्ग्यपर्यायनिवयात्माद्वियमा ॥ ४ ॥ कीदृ कम ॥ यत्तत्कृत्वकिविकसति नयकं

ज्ञातिकामकदन्यराद्व वाक्षि नासिद्धिनयो ॥ नाकरू … दिक्षमयकिंसतयानयत्नेजाद्यत्नीयकयाव ऋमडूक बाधिता ॥ सा वाग्

कीतानुविध्ययानियमानियमदर्शीता ॥ ॥ उय ततो … नयय रुपयपुक्रियां क्रौदृष्टा ॥ दिकालानियम ॥ ४ ॥ कमतय कोध्यसमीतनेव ६

नयन ॥ ३ ॥ सत्तयानयत्नेयतत्त्वना क्विकमलसत्तय … रुदृष्ट ॥ ४ ॥ सूययथ तावत्तीयपत्रवकासरुदृ ॥ ॥ ७ ॥ एवं मसलनात सम्यग्य

यवीरूप लनत क्रमल छहाद्युमाहियवलोकरणि ॥ हयसनाजामिथ्यादृष्टियनियतारितिविरुद्धवृद्धिवाइपाविनयायवलाक्रीयत ६

धूनानरन्डवकेनयियासगासगासयदेवविफगुणतूरुगालूगाणदेवनमार्ग्नकुणाम्यदेचदं ॥ कुरुश्वतस्माफुउनसाधनं धनंशिवाक्तला
केखहिताद यांदयां ॥ स्थिनकृगा लड्डियसंवनं वं नंपनतहिस्यादशिवंनेनतनं ॥ स्वपृल्ल सेआत्वयेदीफयाफया. स्ह
तृषुकोवमनाह्मयाह्मयो ॥ वनात्मनाथेपाति सहि गौजगघथांकोलिमनासूनंरूनं ॥ तेनयसानंतनसानयानथीखजवदं
हागुलस्तनध्मनथ ४ ॥ अन्रूणांकादमंदानवकेवा नसमान्वितग ४ पृथ्व्यमनीधेयेधयी ॥ यगन्डियांवस्थीतिनाभिसम्यदामगि
यणादृशिगिविस्कनायधं ४ ॥ छपरकनस्मन्नातिवानकुवन ४ रुमायिकेमदारुगाशिहृगिस्थिन ४ ॥ असहवसंयमनादकूजनामनोह्मवाम्नन्द्र

१२३

गरीनतिरस्कन४॥ अम्रकासश्चिनिय्रमांविवखडुनादसद्धिक्रियाजिष्मविवर्जनाजिव४॥ अनंनयानंतयगष्टयगाकिनादयानुया॥ उसामाद्धकेउना

न वनन्यनान्मार्थममारुराख्वगानजाडनाजन्नि यंगामिथ्यासि॥ ॥ निसमहात्मागस्यनाक्षमदसद्दर्शनान्यकानंलाखवेवे

वनाकिंश्रेणिथवधूयपूकाध्येवाश्मिसूगातिमार्गेता उवानर्द्ध्यस्य॥ ॥ अथसमयाजसम्यतद्युयनसोकदूलाकगवष्यकितद्यु

सम्यग्दर्शनव्रता४ सामाद्यपीनजनपदाज्ञानदम सीयमयनायश्यावस्व॥ ॥ गंर्वमिथ्यादृष्टियनमोष्यवधानीतिविलाधवन

केम्या॥४ सर्गादृष्टिवसनगना॥ उवंसद्धद्धम्मध्रवलीयवियूर्णं घद्धोम्यावियनयगाथवमध्यूपर्तर्य॥ उवयनमाधर्म्मजवलसम्यग्दृष्टिडत्या

स्थयं समुपनीय दलितिशिविवशममान्ते सलिलमादायकान्कानमगान्तिस्कन्निर्गतानायुथ ॥ करामितादिदं दसद्वद्धनागलगालयं । नगाइरव
पत्नीतानामायदूकनगायुर्वं ॥ खगेनमाकसखप्रा फिसमर्थेजन्ममानुषं । इन्तरे क्षता दगायामेवं वितयमागमत् ॥ खर्गाव
नसस्थममास्थयंगाधर्मेलक्षमतिथयाखवांकि । त्थायजगावन्धविवाजिगा वमेयाविलोषणयतानकमयाः ॥ चिनस्थगावद्ध १२१
कृन्नोगराजनसदावनवाक्षितिविधद्यमागायः ॥ नीनसंक्षायमनर्थविस्फुरन् पन्नार्थकथविनियोगमेस्थति ॥ । कृन्धतम
न्येकलक्षणमघम्भेइ खाउनगनीनाः कगाजलयः साध्वतयनाः सम रिपुणम्ध्याकैर्याहस्कसंक्षारिः पानीयमयावकः ॥ ववावन्धूनः

वध्रूतां विंगतिः ४ ननलाक्षतः ३ यथावत्क्रिमहाराग धनक्राहुमर्देसि ॥ तृष्णावंतनम ऋसकनूलमूतुः ४ ॥ अपनद्वंर्नदीनतनमनसः ४ सलियुः
देरां कान्कानइत्मैक्रानलायवमाग्नेप्रयच्छ ४ ॥ जः लाछूयु ४ णीकेजलासलिव्हायघप्रवीतिचं नमति गार्यः ३ क्षायाद्रुमः ४ अदत्तमः
सुखवागन्नाव्हियातामधिपधवक्रः ॥ कान्कोनंग कभगरव्रातिस्क लेम्भन्यसयग ४ र्दनुकम्यीपूनसूरुर्गादिगंसाधुनिर्दिग ॥
सम्यझलानिस्तिदिनांच्य नः ४ कान्कानैयनितमतां तदर्देसिन ४ खामिन्तस्कानेयितुमियं यसमदात्मागैः ४ करुलीछपयाविनेस
मीरंगतेनमाकृंदिगहृदयायग स्कान्कानंगकीतिस्फुरत्स्तुव नगत ज्येषीपवगीस्फसीसंदगोयेन्तसच्छिगेत रूजागवनरागवीवने ६

रुमं तिनेनामव मनुमहेसि ॥ प्रजाऊमीतियमसंगयरुमीरुमामिवानरोउमहेसिकुमी । गयाधनेसूरखूदितालिरुयपादितीध्वनाणीवि
मानयंगलाथ॥ रुव्यनुतीयमानाविसनाजाणेन मृतिवनला । श्रुताजेवायदतमातिरुमव्यलवाकिसंकमोत्तथ पूनरवाव ॥ न
जाम णायसरुमक्रिरुदिवेंरुवानुस्किणासिवाम्हतियमवृणं यदिनरुभापदगायवदससंगर्किमुथेमस्मादरुयंपुयावसे॥ वाविसवु १८४
उवाव ॥ गुयणंमदानाजुयदथेयंमसुपयत्तथ॥ श्रुनागसं पवजितमवधीजाम्कणंनपथ रूणितमरुतमारुपुणभवाच्यवि
जाजेनं॥ मरुव्यमितिरुतातामयं नयम्रिकाविधिथ॥ रुंभत्तरुयं तम्मात्तवरुरुक्षत्तुपव्यतथ॥ सरवादकस्यधम्मस्यपीउामारुरुववउ।रु

मामि यवदनकुर्ये ऽयारिगभनरूमी ॥ गुण ॥ नामाकनवोञ्चवषावोनाकुनिवान ॥ ७ ॥ भारूमाकिंगादवीय्याकथयामिरूमामरू ॥ अथ सनाजा
सनकान्यपिकान्यनाद्यनस्यमनर्वेचनकुसमानि सास्यकमछिवनमवाव ॥ उरूामरूदानीं तं रूान्यवनना गामि लुकानिवानवा
थेमीमदतिप्रमानितमरवुद्धिगप्यकनवृकदीवार्यु लिकस्यमनर्देद्धिणीयालीति ॥ नानासिताकमतामिवनालद गाद्यथाजय ७ ॥
किनतसस्पिउतस्यतासीद्धश्रवनकथाऽत्रानिदरवृतस्यु सरवाविनस्याप्रतिकानधुरुं श्रीक्रुरुयथगमिसमीरुइश्रवें ॥ तवृक्षुद्धिप
मानस्यतागमेक्षातिमेतन्तुं । मुकदमवुवकक्रदवलवृद्धिप्रतमूर्ननं ॥ वाधिसरवलवनयारूमभन्नविदित्वा ऽयरूतांमास्यानिवेनरूीतेत
कथकलिरलकरूमतिकोकार्यं स्वहितमत्याद्दामयागरु वाः नन्दनयस्यानि वेयय्यारवाग मारुनमिवेनसमन ॥ २ ॥ गार्समकुपीवरुत्व ॥ अथतेन राजा संदर्शयन्यतरुवाव

गमतिक्ष्व सत्सकुम४प्राज्ञ तिनन्तप्रयुक्तायसवङ्गमानमदी क्षमानकुस्वाच ॥ कन्यानिभक्तनि [illegible] वसीयनिगृहन्त तायियश्यायमवादयुदया ॥ ६
विरालिसोमा मिवचादन्न्यशक्षिप्रावृतातनन्दनन्नृ [illegible] यकारुवान ॥ वाम्निसरुवडवाच ॥ जिवादकैगात्रवमृखाविवसंरवना गढश्री
ऽात विकृसमाप्रनवलनन ।वाक्षैलाकयादिगतात्ताक्ष्मियद [illegible] गस्रोदवबीनामन्यकमेमोविमवोदि ॥ ००युकैसनाजारवागगादिप्रियदवन ६८
पूनद्रेसन्याध्राधसत्कानमस्मेसमूपहत्यसोविस्म [illegible] यभितमहिवीक्ष्मानडवाच ॥ [illegible]यन्नयदस्वलनमनत्वैपृद्धियराव४ ॥ ६
ासादतिलिक्षविप्रक्षमानप्वक्राम्पसत्वाम्नियप्वेवदमी ॥ दागडदांभप्रसम्नछदीफयवकरुकेननवयमृद्धि४ ॥ वामिसलुडवाच ॥

धर्मात स्यधानस्यवनिर्म्मलस्य वलस्यवैवेन्द्रियसम्भवस्य । सान्नीकगस्याच्यरवेवनाजेन्नवेप्रकोनारुत्तसिद्धिवशा ॥ नाजावाच ॥ किंस्य
श्च वेदमक्षियनलोक ५० णि ॥ बुआवाच ॥ आमा ॥ द्विमहारोजपनलोक ॥ नाजावाच ॥ कथं पुनरिदमार्षगोकमस्मा
रिनयिशुद्धावर्षस्या ७ ॥ शाक्यसिंह उवाच ॥ ६ कृलमेतन्महाराज पुण्यरूपादियमा ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७
७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ७ ना ६ पूर्विकेयाक्षमापकेजनातिदर्शितक्रमेयनीलाक्रमगम्यक्षयम्यउरवान ॥ तच्छ्र
कौनरुवरत्वक्ष्माशाक्यिय्यविवत्स्याग्वेवद्रव्यकाना ४ स्यथरुत्रय ४ पनलोक्रपश्रमातएसन्दरुज्ञ आमातिर तं ॥ जातिस्मना ४ सोनिक

नैपूनृषैयमस्य वाद्विवस्थमानैकातिकथयानुत्तं ॥ एववायसैव्यारुतमीस ॥ नित्तितीयवेत्रकस्वाधनयाङ्कयारुवक् ॥ वधविकलेनगाउनया ६
ढनेदेहनगकुलयवदगादनेष ॥ विनसनोविविधे ६वसदाउव ॥ कथमर्णयतिदास्यास्तिभतदा ॥ अथसवाजागीत्तिनय ६
कथमतिलीयधाससमूयधः स्यजागुसंवगस्यक ६ मिथ्यसृष्टनूनाम्भसधसंयुणय ॥ यनलाकगमखिवर्णयणल्मावाव ॥ १२२
॥ तिजाध्यगावत्तनेकथयागनीरीयादिदेविड ६ वगीवभैमतष ॥ कथंवविख्यामितूणीसमेयिवविगक्वाक्रिदहतीवमी ६
पूनष ॥ मयाधसद्दणेततनष्ठयेगसाकुवर्म्मनायागमदीघेदगैताः गदतभसासूगतिॱतिईवानं यनायेणखेंगतगक्षममूतायथे

वमदृष्टिनामत्तत्र्याह्वतीदिवाकर्णावसमुघनानमथानर्थवमार्गेत्वम्षप्रवर्न्नमरुजयंप्रनाहमिवानदर्मगति॥ श्रुर्थेनीवाधिसत्वथसींवि
समानसमकरुवदृष्टिंप्रक्षेपुनियाक्रियात्रदृणमूर्व स्त्र्यिगवपूत्रमावार्य्यवदगिष्यमनुकम्पमानर्गतिसमन्नगगस॥स
छिस्थवकाति मेणाद्विजपूर्वगुणविमयथाविव ४ुन्नपाखवक्षावदर्याप्रजासक्रीलिकमथसति दिव्वस्थपन्का॥ अथमेश्र
स्माह्रगोहजयंजयनंकेदर्येरावक्रहरकनंगवन्। डयेतिनत्वाभिगयाद्यालीजालेन दिवस्यतकाकिन तैमपूर्नपूर्वेला मनस्यस
दगनसीस्नुगस्नुगेत्रविहिनेसज्जनसम्मगमनम्। जहीहिर्गवालिगनंजनेजने४प्रवंदिगोधर्म्मविनिश्चयस्वयथ॥ त्वयाहिसदेवेलसाधूना

तीर्थंकरदीनाता विश्वर्नांछिनदोषियए॥ अकिंनारामयलोभस्कुलक्कीवारिमूरवीक्कुर्वं नसूद्धवसूविशिष्ठनयद्धक्षरावगावय॥ निसीलूमायदि
यमीविअहत्वद्धगनात्तवा॥ स्वप्नपिवद्धिषेदक्षके। स्त्तिनायदमूरुनेरु॥ अप्येनातसद्धिनदवनडवाव॥ अथकियुक्षीउरावक
रूनि॥ मनूष्याडवू॥ सस्तमतांद्धस्थाबियत्त यकीन्नलामत्रमनाल्लभत्र न अद्वस्कुडअखवस्वस्कानस्कुरुरुर्षलामकोरि ६ १२६
रवाविनष्ठ॥ जगानिउस्यूदिनयथानसफावका झानिन्नर्भगनातिन निमज्जानमेरुम्मरवेगुयर्षामूलेत्तमाण्वीसरुवाग्खुप
नष्ठ॥ नक्कूवोगस्मभरुासर्वेस्यकारत्थयनिवयादरुलियावकैयकसमन्तुगावंद्यैनान्नियगमीदगंकिकिद्वाव॥ कर्ष्ठरा॥ घृणावि ६

मूकावतीतियेयत्रयात्तत्पदयवृद्धि४पन लोकनिचेयथा॥ ष्टहोगतिद्विकृतयायथ्रियाहृगंद्रियानीतद्दिानवंजिता॥ ऊवेतिमन्येतसम
त्पूमयगं४७८अतियायस्यनवाइनन्तौनिज्ञरुाव नानायगमानयाप्रियाविमर्गमान्याद्धवर्तेजमालवा॥ ददस्यैकस्यनामार्थे
नागतत्गस्यनातिनश्च ऊर्दसत्व भूतंघृत्यधिगस्ता वनमूरता॥ ॥ श्यनस्यद्विनदयागकान्यग्रयान्केरत्माक्षिवमवक्रमाण
स्यचित्काप्याइनरहू॥ नवममीऊकर्षेणमयीजिता ४यानिइवेलगनीनात्रिदकमण्डलायमनकेयाजनोयागकान्कानमयथदः
नो४कर्यंव्यातियास्यक्तितगवनपियेवकिन्कदक्षियनेषामकाद्मध्यिगाव७येनिक्रु७नवाक्रोस्या७गक्षय४४पूतनगमदीयातिमांसानिया

मतिवन्मामयीकृतं॥ अथवाग्निसद्व ४ कान्तिप्यनिचयाद विचलितश्लिष्टकिता मत्कानयुग्यागलान्नेनाज्ञानैर्नामसंनम्नपिन्यूपवास्थितैत्रच्छवित्नप्यायवानह
(?) यीविास्मृतान्महिगादितय प्रमयगाविस्मय १ कृतम रिवीच्छ्कन्नभयमान ४ समनन्नेष्यान्निप्यगमोदृशीकिंकिंइत्वाज्ञ॥ तान्भयप्नाम्य ६
ऊतिगायवमानयागा १ संदृच्यगेजगानिनतनम इच्छावि क्रा १ इ ४ स्वनुभयइवि गाकिगतश्रुवकि वौवापितैत्वयिमर्याक्रियतेयुथार्ह ॥ अद
पिवमहानाजु ॥ असन्यवृकान्यापिसान्नियाच्छतीसा वढिमानीजगदयकाविलंनतयकोन्रूपंसदसायवकिं कृ विसर्गेमाभयच्चग १८२
मगीयतेन ॥ अयुक्तवेत्ताक्षयिकिकिं दीर्घकाय्यैगासाक्षयाकिकिंदन्यया। तकार्यतिविसहसैवलक्रमोदिमधामप्राप्याविगाषसहसु ॥ विमकयद

कायिन्त्वव गम्यतत्व ... युपग्रथम्मे णवनीतिवम्मना म्महातिकिथम्मोस्तुरवानितिसाधयनजाजनस्युतैनवनसीयर्गनयथा॥ विनीयतस्मादकिवापुलात्मतिस्वधम्मु

भवारुसिकमसविंदुस आतिप्रथयनकृक्षलिलाक्लिकान्म नामदध्युक्त्वाण्वानिकिसानिकामाधा॥ गयावनतत्वहजवायेनष्क्रिकयुनलायत्वामकर्ते

तमथेयुंनाह्निकुभान्माथितदाय्यगाह्निर्गस्वयुमेहीना चकथंव्यवयास्तिन॥ स्त्रियातियातायदितमम्मधमेयदकृयाहक४पूनलाहिरि४स

रुनचातिकृहम्मकप्रवनारावक्वियानृणायदेवगामित्रास विक्रियां॥ श्रुथाप्युर्यंस्यादयनाधजवमरुमावृ॰समहगतथायितेनयः रूमारि

णकाय्यपनाविरुपणीगुणभतनकलानियनत्वसूवना॥७॥ कपालतालालध्यनिनीतकुडुलतमोतनत्वाप्रुत्यय४पृथग्विधा॥८॥ नयात्यतंकक्षमतीनृयान्यथा

कैप्रतावाङ्कनेताके जन्मप्रतिलर्हं ॥ नद्य ग्नन्मरुद्यधिष्मनविङोया ॥ यातं व्रार्ह्मं सर्वं यूदेजन्मसकान्तं तथापि विपयातेवय विदितं कुनलयाद
यानतिनृत्सुकेमतेष्वकान ॥ विपयंस्तवनापियना ६ प्रमादववकाव्यगोव्रजगितोलोकः ४ धैमन्तहृस्वनापेउम गोनातिनक्षियंतपनादिता
क्वा ॥ पृथकदाविन्मसन्माकरणाछियरुगविवि प्रेङ्क ४ स्वयसतगनापण स्कुउत्कस्काव्यायादविदि साक्रामसधारकामप्रायुष्य ६
फ्रा ० वलाकयनदन्दगाविदरुनाजमंगद्दिनतनामकुमिक संपकेपाप्राद्दसन्मतस्कुनयानियया द्व मिथ्यप्रध्वि गरुत्तयानियमक्तनाक्रिय
नलाकः ४ कृण ४ भुराभुनानाकर्मन भरुत्तकियाकद्दः सर्वसतिन्द्वयमप्रपय्यप्रणाकवेर्मकिपीतृक्र पुदानगीतादिरकृतायुतियपक्षिव

मूल ४ संनूदयनिरुदवाछिळोम्मे केसु भाछानू जेमतिम्मे गास्कुयन्तेतासविळश्चयनतोककथास् ग्राथिलविनयायवानलोमवदवदुमानध छुमणाञ्चाकुने ६
षुकामसूखपनायणा वरुद ॥ घुराघुरं कमसरवास्ह ६ | स्वादयछे वमयनरागिद्वितू रनिश्चयश ॥ अपासयपायकर्ण जु रान्ग यस्थल्लमणाद्धम ६
गाुगम्यत ॥ अथसमरान्मार्दवांषि तस्यनाष्ठस्कनद ६ | खिवसतापतिया ततायाँयि केनतोकानथकसरतनसमावडि गानूकन्यसकयना ६
ह्नाविश्रयसरवकतितमर्ग ४ गामतियुवितिकेविमान६ | दभ्ोः वांगिस्थमास्यारिजलनुव्र ङ्क तोकात्पनकोसमवगगान ॥ अथसनाजा६
ततग्रिस्कन्धामिव जलनविध्रुतम्मूरसमिववावतास्यमातीदित्कनकिनलासंघागामिवय, यनयादीयप्राविनाचमानमारि वाऋमेमकुजसाफिर६

तमात्मानि गृह्णीतादुपालभइत्युक्तोद्धार्यमाणाः॥४॥ अथतु विकृतपमत्युपयिवांसोकृदोमिवदोह्यनिर्गमोकेविकाः॥ अथउलमनतूरवक्तितप्र
इ॥४॥ रखंवक्रिमिणनकोकृतिनिगास्थिरि॥ गावीष्टु॥ कालत॥ पविगणाकोलद्धौनाभ्यनमयपेनूरुवक्तिदाहइ॥४॥ खवंनकोलतयनिगता॥
यणप्रकाशः॥४॥ स्वकणधृगातवरम्मसाहवृक्ति॥ या धकक्रकवृगलद्विनयपकाक्षुत्तिगानि॥४॥ हवे॥ कविमृजनवेगाविष्टाणा
नस॥४॥ कूजकिल्मकाद्युना॥ यथ्यनकंपथृष्टतातित्व वपूष॥४॥ कविढिधूमेनलन यास्थकगतिताप्निवर्ण्मयपनेलोहंनमकोनसं॥ १२१
ना॥ अथपनेष्वरिरणावलं॥४॥ णवक्तेनरियप्यतीकूदणनेदेणानेग॥ यपनिवृफमीसतनवस्तेनवश्ष्युयपकनिदोतविइताविरंभताः॥४॥ नवीपुके

नमस्कृत्वैतिनयपक्षानंप्राप्कारविष्यसियदात्वकतप्रणस्व्कमकं तुर्न ऽम विमादयं गीतविकंथ्या वृद्दलीक ०० वनामंदारवकं ॥ लोहीवृश्वे

नकाऽवनसंकुलासकुम्हीष्वरिकालिगवक्रिहना ६ सदासू वृक्षथवगगंविवगऽमर्क्यावद्दलीक ०० वनामतदारवकं ॥ यह

क्षयसंकालितकीलनिवृद्धहउतिक्षमवक्रिकपि लवम् धीगलेवा ॥ तिर्द्दक्षमणनकपूर्षकनूलेनदनंक्या वृद्दलीक ०० नाम ६

गतारवकं ॥ थाफयनारवकं ६४ खानिमहाक्रि कमहानूरवक ॥ याबृधनरवकप्रतिबरुतमपिदाहुमंघरवकं ॥ वि ६

नायमानं हिमामानूतनवातिकूजिनध्यायिवियन्नविक्रमं ॥ विदीयेमा महिगकाकितादिनं पनगकस्वादित्ययाचिठुं धर्तं ॥ विहिस्यमा

गपाघ्रयमनोजस्कन्नष्टदर्पोद्धवड्वृ॥ कवलाकिंवसः॥ मदपूर्यगन्दनामिव॥ गह्यस्यापि तावदन्तामितिममदासख॥ करण्यासमाक
ष्यमानायग॥ सजननिधिधोधावदवनंगैयुससान। विस्मृ स्तनयाविनायक्षविषादनेन्द्रासिनसीनकमाक्रान्दितामूयफ्लेष्वन्कारस्थयपर्यूतस्
कमनाथ समहात्माद्गननं ततोस्थगच्छते॥ निगि स्यवतस्माद्वनगहनतान्निर्दत्तरूपवाल्सपदंगस्यद्रनग व्रवाव लोकयं
नदर्दुसयकमात्रालियूनयलगाति क्रूरूर्मैयनिक्षम मत निगच्छनमरिमूखानिप्रार्थ्यमानानि। तेपिचपूर्वार्समहासखेदद
कुंजेगमामिवहिमगिनिगिरवनंनिहानपुंजमिवसंनद्धतारकमिवपवनवलवर्जितमरिमूखमायान्तं दृष्ट्वा विषादश्चैन्ययनितादृक्केदा १२८

नीनस्त्रावयमितिरप्यगस्कमनासापिरूरूर्षपनिधमविरुगात्ताहानायपयानप्रयत्नपनावरुव ॥ गोविषादपनीगलारुक्रुरूर्षघमाविकत्ताथानायया ६
नसमूधागंरुयपिवितियदिन ॥ ।श्रयवाधिस्वा। रीगानवथ्यीगानमारोष्ठमारोष्टनवारयमस्किमरूतिसमूद्विगानास्त्रि
रितासपयूयूक्नसमाष्कसयन्नरिगम्यकरूला ॥ यमानथ्यप्यछकूररवकथकनवमादनामनूछापफासूथा ॥ नजथस्य्यागुसे
पकाविवकृनयछ्कगा ॥थ॥ गा ॥कक्कमाफाथकयू ६ यमिरुवारितताकूगथा ॥ श्रयनयनथासरूस्यतेनमानूवनारियाहानन्मा
रयपछदानारिव्यकत्तवारयपपालिसोमखनयछ्यागतद्दयाथममरियवनव्येनमूछथा ॥ कयात्यागानिरततरुकिफाल्लितियगवेयं ।यप्य ६

न्यडचू४॥ दवमामारवत्नुसाहसँकाशी॥ काक्तिवादीरुगवानय॥मिति॥प्रइश्चरावत्राकुसनाजा॥समावजिकरानूतमतनेमाकृमितिसूक्ष्मूरेनँकायमु
पयसट्टत नैरकुत्तगैनसहयासमावगागीक्तकिल्यगवद्ध क्तितैस्कुकासीप्रणयप्राग्तद्धमवरुद्धयसनाथमव॑कुमाताहूँस्मीजनाथिकृताक्तिनष्ठ
कम्यादकम्यमानकुलुतमकूदविरपस्कुथ्याक्षिगारि॥ वीकुमालडवाव॥ वदत्थर्वकुमाभेषतखेंनीयतिपद्यगे॥ नेथाद्त्याव्रितसय २८
केतृक्षृतकाकर्वनयँगावागन्यथाइत्यीवसनीनवक्षा इक्ष्णार्यमानसमनव्यथ्येव॥ नयावनेकाय॥ नसँस्यगात्मादनकुवनाकृमनवीनमा
रूना॥ कृचगादव्यस्मस्मिन्नाजातिसँनमृककेगाहदयँ॥ यआदरुकुवणयाष्ठप्रजानानाध्वगस्यनाकृश्वलुगीरूवनतेयताक्षवेमनस्यदेवाक्राक

मतमष॥ श्रीजनाधिकृतो राधावेशादथाकुलिंगे देशसंख्यातिनयसाथ्यम॥ नाडीजीवनमवदनाम्नं षिवशृंसमनू॥ नव्यनगोपवक्रम॥ ४॥ अस्मान्निमिलमय
नाधावेवद्धि मायिदानवयाश्चितिगुणप्रथितयमस्मिन॥ कावत्कि कामुप्रिविवर्त्ताविकालतलीलीकनायास्यातिय थादिलियस्यमाष४॥ लिता
गवलिम्युनितद्धकीर्ति वनमूतनस्थनायमनूव। अमृ८ न्यनागोसित्वनामतासि उस्यानिदन्यादपितामनाजा॥ इतिनामदेवावत्नु॥ नवि
नविनिश्वसितमातृपनायण॥ स्वपयानाम॥ सनोजानम विवनीसनङेयतनाथवे॥ निश्चूथरव स्वपमव उदुमूपवकम॥ नाविकानधी८
नमनसंग्रानकस्यस्थवाञ्छितकरतम्महासस्वमोसाग्रमानमव्यवस्कसिनमृतनमतमवाव॥ दान्धाडिनिकगाननत्यकर्मगामिनायथास्डदस्नकपदा॥ य

८१

विकयदयिमद्धि ४॥ चिरंजी वद्धसीनाजामावर्त्तयाय मगम ज्ञामवणयाधिद्द ४ खाळे नार क्षयवणाकर्ण । दच्छद्भवनिगे ४॥ आद्य क ४ कायमं
हिति॥ स्यात्त्वयन्नूयस्तुयादि क्रुमायंम [illegible] थ्य वृयथ्यत गेस्ययायं । द ४ खान्वल्लआद्विसखाविकानरिवथदीवाय्यविध्नगीक्रू ४॥ जामुंत
धक्कसकमूया [illegible] यदं वंविनि दकन्नात्मद्विंस नाजा । उत्तस्त्र गामात्मगनामधाक्कि नाक्षकनिष्ठामिकिमित्यस्त्यी॥ स्तगयिनाक्ष्मस
नलादिद्द ४ खंजाफेत्तस वेलातिषदितयं । जन्मवत नागतमक्षनीयगन्नास्कि वाकिक्क कृगच्छ द ४ खं॥ वनेवसत्त्वबजित्युतिक्ष ४ कमा
रिक्षयीनविनास्मनिष्यात्त॥ किमक्रमायाविणर्यकानिष्ठकक्क ष्टमास्वस्कि ववास्क्र्यात॥ [illegible] सिसमृतिवृनानूजिध्यागानसमयतीयवसा

भूतिष्वतां । अविचलितधृति ४ क्रमाश्रयात्समधित्रूमारुदिदं क्रमाश्रया ७॥ गर्दवं सान्मी रतान्दमार्गा प्रियसरखानमरुतीताविषक्रनामाकी
ति क्रान्तिगुणसंवर्ज्जनमूतिमृयतीयवाच्यं । चापला क्रान्तिशाबानिदर्शननाजातमृयतीयकामादीनवकथयामपिवाच्यं । जर्वके
मरुणादृश्यात्रितमा सच्चविनियात्रणामिनारुवन्ती तिसंदर्शनाय्यति॥ दृष्टांत॥ क्रान्तिजातकमसष्टाविंशतितमः ४॥ दृष्टांत॥ १ ध्रुमक
वतुष्ठ्यसादितोऽप्यकानीणायकृणंजाणं । क्रान्तिवक्ष्य विंशतितयनं द्विकयूकानाउसंदरु॥ ० ॥ मिथ्यादृष्टियनमाप्रबघातीति
विलाप्रदमनुकाम्यां॥ ४ सम्यग्दृष्टिव्यसनगणा ४॥ गद्यथानुक्रयग॥ वाधिसत्वकितार्यरत्नवान्ध्यतारव्यासा यविगास्यकुशलस्यकम्मऽ्आविया ६

आतवाक्रमायान्यपुरस्यता यूष॥४॥ ऑगरूतक्रागंस्वायपंषीग॥ त्रानिर्वेडाविनियस्यर्याम्या॥४॥ तिर्स्कुयन्थवालितापगक्र॥४॥ सार्डेष ६
दानूखिवलखुरूषो॥४॥ समलरूफसवखवद्वावदनाल विमांसीकनार॥४॥ कविदयाम्हि॥णाबा॥४॥ नवयाक्तिनाधवनाइक्षुर्वे॥४॥ खकथावा
यस्खणुजम्भि अमालतरु॥४॥ छलिनय यूखलितय लूवक्ता॥४॥ ष्ठिनदहनासमलीषयामयीषु॥ क्षलनकपिलयाक्रुगत्रवः १८०
न्याघ्विनमयनंझ लगानथीन्वहन्कि॥ सेधानवे ६ तसमागमेयिष्ठदहो॥४॥ कवितदाक्रमणशृलिनमृकेयापिनइ॥४॥ खमरुय
विकलपिवनाम्रियकेयावत्यनिक्षयमूयैनितकम्मेचार्य॥ जाणाषुकविक्षलनाक्षलासलीहम्मेरुड्रिम्येसलैवलोड्रि॥४॥ समानियक्षो ६

पिसमागगतानि संचूर्ण्यमानानि सूज्ञिनां सूनु ॥ तिक्कांयसठालिगकल्गुककके [illegible] कषुविज्मतिरुखयनंडमर्भ याद्यक्तड्ढमक्षनव ६
वकृष्यमाण॥४ कृतैन वैनंपत्रखे४ पूनूखे येमस्य ६ ॥ कालितमूनकनप्रतीयत्ति रक्ष्व गिनिनागि षुमरुक्षयनंडयरज्जगस्वनू ६
लितस्यनरूलंविस्यन्दतानासितमात्रवत्ता४॥ कवि कीकृ४णक्रुगगैनाननज्जिकान्तामानाद्विफतनाय्यावक्षुधनायी॥ नीनंद्व ६
नकीवृनृजाविष्णुगनीना४ पर्यायकणवुनदातीः पननीकं॥ श्रावेष्यनलारुय्य ६ कोलड्डिनिष्कयत्कसारदकूमीष्वधान्यम॥ कवि
कीकू४ णस्वनखे० कृणागिनिस्वाद्मास्वाद्याऽसंधेशकियनके॥ कविलुकावङ्गिसंस्यणीकी कूकानं नायं विगनव्यंवंविशाक्ति॥ संभाययनकय ६

दपुण्ययारावतीश्चैवमप्युपनंयं ॥ उवमास्मदनामयिसनकाकोछिणायदलानयातिनुदकिदं मायविवयान्नयर्त्रिध्यलातिसत्युसंसाम्यांद्गमा
वत्भूपिवाचसंवगमदवमाणुक्वायारिमखुणार १ वेमीतिसवेगकथयामेपिवाद्युमिति ॥ ६ ॥ उक्रजागकमकानछिण १
णिगमुन् ॥ ७ ॥ यक्षविगभर्णवृक्ष्कवेल्मनो १ यक्षविंशतिः ॥ ८ गिपुसरमावाच्येनजंसंख्याप्यमूश्वके ॥ ९ ॥ यनासि १९
णादकें २१ खमायिसाक्षवालारामिववकृमन्यनकें १ ॥ णघ्रप्मनूस्यणवाधिसख ८ किताव्यनमस्मिन्नागवतंपूष्यरत्तयत्सवा।
तन्त्रिगगिरवनेनतकेिगरुवेगगगनवनगरत्लोविविध्वीनूरुलायिदिगरुमिराणवननामलीयकनेबद्धहृदयेनतूलविगमध्येस्यमान

यस्तत्र

च्छवपर्वतगस्थेनाप्ययुद्गवनवनाणांगम्भीनविपुलसलिलाशयमनोथमरुणानिवद्धद्रुपसलिलनकाकानतसमन्ततक्किनसहगजनाके
महाकायतकवनारसोवद्धव॥ नग्रनयत्न वि ज्ञानसविलतनव। श्रियमनयस्त्रीवसंकोषलगमत्तव॥ ॥अथ
यकदाचित्समहासत्वस्यवतस्ययर्य्येकोविवन। नयनस्यकाकानेनाजतगक्मयग्नीव॥ तस्यविकायइनदृत। कि
नरवाविदितगावदनेतयदेगानक ह्लमकन। गेसमीमाग्नमहि॥ एवंमहाकानोनक्ष्यनीयमगयापयृच्छते त्रागव
महासमानकयानिखदमस्मस्तयूथरहणं॥ व्यकोवगयनितुष्टमागनाकामूदददेजाकाश्रीनिवासिगावाकूजननाहासगानयतवा॥ १

क्ष्यानवानतस्य पुत्र   यथम पुनयशाव

नी

त्रिसक्कार्यं लभस्यानुथ्यमूपगान्कुमित्थयपगान्वन्थूयसत्त ॰ स्वकाकानूहलिपवलाक्कदयात्माष्टः नयनाजगदायमानकष्ठनदंक्षका

थ्यानकनमवंक्षमातांधीनतनमनसङृवृनन्य ॥ नरवस्वंवमस्मारिनयीछिनदवनं ४ संपूजितं ४ सत्क्रणावास्यादहिडायसंया १ २००१

दनत्तवयमस्मारियृक्रा ४ पूजायिउमितिय थ्यम था॥ भूस्मिनिस्कानणापक्रीसक्केसंस्कुणवान्धवं ४ । णनानंयकवानवमिछ

मिक्कगनाकिधिश॥ शरूवायसतस्तस्ययूकसमनू वलितीअच्यथाहिरवंद्यायानतनूनस्यायमद्यम ४॥ स्वङाइयमा॥ थंस

वंसंणनरवात्विक। अपुत्रिपदणाद्यं थंक्र्याकामस्यसाक्षियां॥ एडुभाविवयणस्केस्यवचस ४ संपाणिगहात। नाक्षियाकउमसमम ४ १

गुरुयावचनेव्थे

२०१

ऊनमान्मनवेववना निर्क्षीयेवदेवासर्नीसमव्योहयुरयेकालवायूतनस्यपूजा१कुनिष्यगेनागवनस्यसर्वेवद्धौननीतस्यश्ध्यैववकर्यं

ना ।अथतपृनुमा१कान्कोननिस्कानलीवऊयाद गस्याद्विनदयगेनारिर्वायुमनुस्मनुकस्फ्छवनमंभ्रातिक्रियगस्यमसासत्व

स्यमीसान्याडायेघागरितिववतदव्लुश्रसतितगः त्युदातिनयादिजास्यस्कितसमौकोन्कोनाद्विनिस्यपृनिति॥गदवैंपवहिणो

दक्कैः१श्रखमायिसाधवातारामिवङ्मन्यैगङ्गौः साधृजनयुसँसार्यीवार्यी।तयागगवल्लूसत्लव्यधम्मभ्रवणवराद्धपुक

मिनिष्यादनवल्लीपिवार्थी।उर्वरडायेकतिनयस्फाजन्मानेनेधिनवलैगङ्गति।ष्यागपानिवयसुनतिदभोनपिवायमर्वरुध्यष्या

सूत्रनिक्लानवान्

नेत्यडपगुंछ्याव न अकस्मात्संकटान्मूको हनाल्लिक्रमानगोत नयङ्कं कनिष्यामीति ॥ सार्यं तस्मात्संकटान्मुक्ता॥ एवमुक्त्वा एवमुक्त्वा नेनना

क्रमानापहन्नणीकार्त॥ सार्यद वमप्युत्यत्तमा याग ४ उच्छ्वादवं ४ युमेगामिमि ति ॥ ।अथवाधिसख ४ पूर्वमेव विदित गोत २००८

दाषविक्रम ४ सौदासस्य कोरुग्थाकाङ्क्षिकिन्नाव ६ स्तिमति नागात्समातछ्व समातिगृह्णीलाविकगयप्रगमनसामर्थ्य ङियास्थान ६

कुत्रवसौदासारिप्यानानिवदनप्रीतिप्रति संवेद ६ यन्तियुक्तमित्य वोवत ॥ नाञ्जाछ्युताहम्मिन्न नमीसलाराद्रुत्मादव कायंः

याख्यातकेन एकस्वधर्मेहहापूर्व्यकी फि ज्वास्याद णामिसूत्ववकेमानेन॥ कोविक्रमस्यातमभावकाण नवंगताधोरायसत्तमस्या अयन्त्व

दानसत्व २ २०१

सींनमृयनाक्रमेदपाय्मामरैमस्यपसरीं निदम्नि ॥ गव्वापियानामम यातूकम्ल्यामआवनेसस्वयमरथूयाताश्वायूक्कीममातिथमगास्यकउ
मेवहिसकाधनिथिभ्रूयवृम्लाषा ।गध्यथाविकानम गावाहिगारवनुंवकम्हतिा॥ सपानतकंपूनावववनातनरधिष्याविषादवियूद
लगनयानिघ्रवाऊमागर्गोदवितूलितकल्लमागेवद नलसाधममान्भसतयूध्वकीविनिविस्थियूवतिजतीयतास्कर्कीतीदतकग:द
धुसमान ॥ दृष्टवववयायगावद्धमलितवसनयनि कनव स्कनपदवितियुगनणूयरखपुतस्ववयाकूतलगिनानूरहनापवूर
दभद्रेऊलावनछान्धकानवदनेनाषसीनम्लयावरुवोडनयनमृधगासिवम्मालसोदासीविडवदनयनकेनाऊवलीविगगरीयसाध्वसद

कुड्ड्क्षामस्कसत्यपुनिह्रुनां धर्मिकना ॥ गावाकुवाबनस्यादौ द्विजसाय दरीयो नौ । भाद्युमायाहियावकावि गौ सज्जीक वाम्यहं ॥ ४

क्ष्यवाधिसत्वस्कं च यस्मै प्रतिज्ञ्यधराबनमारि | मनः४ प्रतिनन्धमाने४ खनङ नतं गमाहृय ब्राह्मणेन स्मा ज्ञायावङ ४

ष्ठयं गुह्यवे ॥ नछु लासरु राभ्रितारिपुसादिनम | ना४ समहासत्व४ सेनाधेयाञ्चियवबतसत्कानपूत ४ सर्न सारुस्त्रिकीं २००९

गसयश्कलासमारात्नाभ्रितेनोर्थेनतीवाक्रणपू न ४ | यामासम ॥ । अथ नकेयपिता स्कनाकियेयानि वोनरलोघ्रगेमाणि ४ प्र ४

स्कावक्रमोगर्ग सानृतयामित्युवाच ॥ नानसुरावित्रप्रानिपूज नसाधुमात्राह्ला उमर्हसि ॥ महाजन खहर गेरारौव्यध कागसन्यपदप ४ २०९

कथ९ महाजन यामथुका

दिणावइनाउधीनेण ध्ववंविवामि ॥ गे न सपूजायह इराष्टि तेपुवेयमानेंन तं न क्ष्य गङमी । अणिय हाउहि किंचिनेरावकनण्ववन्नस्याप्यिष ६
नण्वनद्यजि ॥४॥ समचेळ पवमीहि साधनेन्नाक्रिन्ना व्वत्तय ता ष्ठ व चुत्तियं । नवाविपं जीन्न हि काषसमया हाविवजिनवणावधू नि
वक्कत ॥ वाष्ठिसवड्डवाच ॥ अधवमाणीयं डिनामक उंणे क्के रवइवसराष्टि तानी । धू कोनणे वाचायपथंखडयं गन्नि
कयनाक्षमापिपुरष्ठन ॥ धर्वे वयन्नामसनष्ठ सादेळ्ळ्यानु नागष्ठक्किनणाकेयाणि । पल्ला विदद्ध्यापि गसरुगाकुपार्य
ननुस्याजावितन्खमा वी ॥४॥ दीयणे नम्माइगमष्ठ्यमाधी वीनाघसोर्यीय नमेंधतकु । से भ्माइगाकुवयधनायगमें नयायदेक्षायनमेंकुम

अथसौदासस्यचरितकल्केभग्नवमध्य बोधिसत्वतनत्रन्मेश्रीगुणाढ्यराजवादात्तस्वयोडुस्वराव॥ सुखायमानजवतत्त्वत्तम
२ द्विपुरुसन्नुवाच॥ रामतसामग्रकामयानाम समव्यथ्यवसमकोनोद्धवेरूपितेम्यमयत्मत्समीपयन्तनागगत्वनतीं
तिमाग्नेकुत्रनासितस्थाने॥ बोधिसत्वउवाच ॥ नैतदस्यसभवकुत्रतानीतिमाग्नयदनेवीपियनुभिक्षामिगच्छता २००१३
मप्रातियत्नस्य. ध्रुम्मो देवाकिकोप्यूतिभा नद्युसिद द्विसोरथस्य. नगकिंनामकौशलं॥ किंकरूय॥ यनीतिमाग्नयातियति
श्रीत्राध्यायनेगच्छायतक्यायायान्अयास्यजि क्रानितिनीतिमाग्नेत्तस्यान्नरजीयूनतागतास्मिना अतएवनीतोकश्चातस्मवव्यक्वान्द २१३

तैयालिनगामिसख्य नतस्तीर्थहि विदद्भिर्नन्नायन्नानूवर्धतियणः ४ सुखार्थं ॥ सौदास उवाच ॥ प्राणान्प्रियान्त्यज नमः ४ स्वर्गकांक्षिणा ४
नाक्षतयापालितसुखान्तिमतोऽहमालितकर्माथितिमि
बाच ॥ वदवः ४ सत्यवचनादिगुणाणुत्माणिभया ४
सत्यं नगमाहतेपृथ्व्यां मुदाखिसिद्ध्या नयान्मिनीधारागं
मनूयंथ्यं सिसत्यवाक्यं नराणुलामथेम पिमीयिइत्यागताम्हि ॥ वाविसखड ४
संक्रयगस्कृतेयणी ॥ मानाडियंदृष्यतयानि ल्गीतसर्वान्सान्वाइतयाव ४
मण्गमाण्व ॥ कीर्तेऽजगद्यापि कृत रूपयामागस्कृतोकोक्रमणायसख्यं नद्याः ४
नैपुवणायसुनालयरप्यसन्मानइःऽन्मोक्रन्नायसतु ४ ॥ अथ सौदासः ४ सध्यूयकामिल्यारिपुणः श्रौतं सविस्मम रिवीरूमाणः ४ यनरुवाच ॥

मन्द्रप्र(थ

स्थूसुहृदामस्माकं निस्तानन्वभवरूयागाविनिकटाद्दस्मान्नियामितं नूतं ॥ यश्च सोनिर्घोषाद्वदरूक्ष्मयय्युत्तिवभान्दितौ ॥ व्यक्तामस्ये वपतं ॥ सवा ॥
स्माति ॥ नितिश्च न्तश्च ॥ जगद्वपूश्चवत्तुगन्दवमप्लान्ताः ॥ भर्तृवन्द्रीशुभ्रु कृशानुजानां विन्दु विर्तुनकुम्भोयमा ॥ सितचक्रवाकुवरं भाकु ॥
नागवेंग ॥ स नवूवश्वतूम्मभ्रुनानतायै ॥ तदवचंदे ॥ मदनाजनाजितैःसूगद्धिवाक्यायतयोत मानतौ ॥ समून्नतंग्राभदनाप्येतौकू ॥ १२०
गजितनमकदनङ्कुहाङ्कुशाधेन ॥ विस्रागयुग्मं तादि ॥ दमधूवरांसदपाविक्रान्तनेणुनाश्रेणी ॥ आह्वनायन्मोगामिमकक्ष्यतनश्च सूत ॥
षदीद्यायुतियुक्तनश्चकनश्च ॥ आश्चर्यमयहूनरूपैवताखखिर्द ॥ अदृष्टपूर्वान्चयनीलगाकिमुरूतश्चरण्यनपानिष्ठुः तस्थायि ॥ सहृत्वमस्मा ॥

रान्ता ामप्रवर्ती १२४

वामानमश्रा प्रद्युम्नं

सर्वांदमाहं [illegible] ह्वत्सूवावन्थे षुवोस्यकीर्द्दशं ॥ सर्वे यननमाः स्वस्मेमहारागमय ॥ आयत्यनीतानूरुयदीन [illegible] काउ [illegible] मद्धि श्रुन्तस्थयपयध्रमा

न ॥ कार्यमम [illegible] द्विनदावुरामः ४ सोदत्तनामह दृ [illegible] तीवव कृशा क्कणिक्लि गासावतिरुडगामिमामूपुसिग ८ कोन्चमूनाप्तुरर्वेन

न नत्रयत्र [illegible] तानमगाविनाप्तुलोजे नोय्यादि स्याहतोदे [illegible] तदी क्रुपे ना [illegible] हास्वरावातिणार्यस्यसम्यदाविदाशितानतयश्मयेरुद्गा

यहिमाडि [illegible] रेननम ताविरवल्पयेक्वणात्मतुष्टिस्स [illegible] तीवदुक्षुणमना तीके [illegible] दातीमस्यस्त्रिग्नवान्धवसुहृत्युतिविशिष्टवासत्यस्य

त्ववमत्यपयफ्रि सुमरवस्य [illegible] ४ वाली नयस्मद्दर्येमयकद्वमारियवकरस्यासी समेयरार्कुणाक्ष्मणि ॥ यकान्त्वस्मारिर ४ पूजाविधि [illegible] वकम

सुरगाषिंतष्ठवन्नादनवाफागमनतुः तसद्गसेवात्यणिंगीगनवादिगखनायमाषिंकीआप्रसंगजानितउदृषीयदृकप्रमदाजनरायविषाद॥

जननींकालादृत्तमृपद्धःस्यश्लायनींकिमेतादितिसाद नमकः४पृनावयनात्समाद्दिदृक्षा॥ अथास्यदोवानिकारय्यविषादने नव॥ २००५

दना४ससंतुमेदृगतनमृपथ्यन्मवदयकः॥ वषस॥ दवयूषादे४कन्मामयादः४सीदास४साञादिवान्ककानेनगगकदनक॥

तुलापतिवयाद्राजसाषिकदृनगगनमतिमानिषो॥ वतवीर्यदध्यानजः४याकिरायेनोद्रमकिमानिवजगत्संत्रासदृवेनवना॥

तिवळेनेविडक्कनस्मलेंत्रासयस्कधैर्यमूत्राकेनथउनगडिनदय्याकृतयाप्रवर्तयगः४पातियत्नोरावरुदव४पाफकालेवासीयषा॥ २०४८

यतामिति ॥ ।अथसकसौभाजानानायिगानुवाच ॥ २१४ कल्पषसौदासानाम ॥ गंगेयाव ४॥ किंभूतद्वचष्यनाविदिर्नयथसूदासानामत्रा
जावर्ह्व ॥ समृगयानिर्जगोम्यनायहतावनेगतः नमनूप्रविष्ठःमिक्षासार्द्धयागतगंभदायन्नसखावसा सिद्धोसहक्रो ४॥ काना
कल्पणवकुमानियमृषुव ॥ सवनवमेगहीत ४ सूदसायायनीत ४॥ अयूग्राहमितिवकखासूदासनेसंवद्धिग १॥ यितानिवसूनयू
ममृयगतेस्वीनाय्यवोत्तरं ॥ समाहदाबादामिषुष्वारिंगाकु ४॥ इन्द्रमिद्वैनेसवर्नंमान्समिति समानक्षमींसमाख्याघसयोना
न्नवबसखाहलावरू यिगुमूपवक्रम ॥ ।अथपौनाकदृष्ट्यायाघार्गवेंक १ यगासौरीग ४ सौदासाननेडृविनापिगोतवातिरल्पअरू

स्मार्थद्वयन समर्थं १

रार्यं यतीत्यस्य खल्विग ४ ष्ठीमतिर्व भातिर्ष्व । किं नाम गत्वा तत्र नमस्क्रियत. त्वंमत्तमीर्ष्यपूतनव्यु यया॥ वाषिसत्वउवाच ॥ कथमेवंमह
दयिगमागमते कार्ते नमत्र रवान्नावबुध्यते ॥ ननु मयायुतिस्नागमोगु मिथ्यामीति॥ गदत्तमारवलजतसमत्र्यये वीयविर्गकिंउ ६
स्तनसामस ४ रवत्वस्द॥ तोरातमत्स्याष्वरायंतसत्थं.स यंयदक त्वणवत्यजानि । सतन्तुसत्यव्यसजीवत्यक्ऱ्कुष्पगसन्नयति. ६ ३००८
स्यजानि ॥ तजीवितंयत्सरदमीहि कंवा.सेयाद्यूतं ६ येऊतिइर्गेगीरयक्षो सत्यंविजष्कादिति कसेदर्थं. यद्याकनस्कुष्ठियगा ४ स ६
रवोनां ॥ संद्दश्यमानव्यातिवानामारम्. त्वेद्दष्ककत्यानयनाकभवा.(य)ष्ठ्ययतांतेलिङ्गरगथाव. किंम्वीम्क्रसंकींगवमयपीति ॥ त्वंमो ६ १०६.

सु.स्प... [illegible]

रुयंय द्विजनामसमारुविष्यत्सर्गः ४ सुखं शुंकेर न्माविका[illegible]मनावा। विख्यातगौडवनिर्गतनन्वीनमानी. खामूद्ध्यगायुरुत्नगभवन्ता। स्युयेषं

॥ खर्लं स्कं वरूयमरुपिप्रग ज्वमेस्या रुक्ष्म हिजाय्यस रुत्नाघगीं विष्णय॥ व्रष्यामपहृष्त्तनपिस्वयमन्किकर्के नास्माहिधाद्दिवित ध

धीगिवमूर्ध्नितिकि॥ अृयसो नासरुधाषि सवववनं विकम्पियगमिवामध्यमाना[illegible]विकामादर्द॥ सूष्टुखत्वयंसस्यवामदिनयाव ध

श्रीमिकगायाववविकथ्यनेना॥ नव्यनप्रामि गावदस्यस ्यान्नागंधर्मप्रियगाक्ष॥ किकगावन्नमाते न नर्ष्ठे नापि स्यादसिस्किदि ध

मस्वरुजवीर्य्ययुगायाहगाक्तर्गनमात्रंरुक्रियक्रमानानं नैयि अपयाप[illegible]गेरुगयरुं कविष्यामि. विचिन्त्य वाषिसर्हंडवा॥ शेनेद्दिग

हहम

स्याधियाया १ यि

८८ ॥ श्रामण्यवर्यो मम्ब तो ऽग्यवर्यमहत्तमानीत धाहूतं । सखीदार्यत्नय सादमतिमान्नष देवतं ॥ मत्यूनी ड्स्वता वीमां विनीतारयस्रीयमः ॥
ह्र्तिस्वयमूयतार्यश्रीष्विर्यसा धूमस्म ता ॥ स्क्रानख ध ख्यस्याविख्यातसूयवादीगयाध्यय ॥ स्रगित्राड्रां नखना ड्रःकसत्थार्ययापुम ध
त्यजत ॥ । अथ वाधिमतवद्द समोरागाम्रोती विस्मय ध वद्धमानावडितेमानसमूवाच ॥ यार्कसूताधितधेनेस्याते सूजितार्थीवा २०७
तिम्भनेद्धगामितराबत्तेद प्रुरावाग ॥ यांफस्कदस्य यशोभयत्थाय्पिर्गमां । यद्वायवामम ८ ड्रुवृतमाडिसदं ॥ । सौदासडवा ध
व ॥ नात्यतिकालीममरवादिर्वां धूमाकृतानावदियीवितापि नवि धूमयंकीपिजितकरूद्दड्रा । ८२ स्ममस्फदेतानिसंरताभिर्तानि ॥ वाधिसव ध २१२

उवाच ॥ कस्त्वा यें ॐ गतस्य स्मृता भाषितं वर्णन ॥ ॐ मामवस्थामुदन्यस्थ ॥ ६ ॥ याय कासिसीयका घन्यजासु । ॐ मान्वयधर्मेप्रिवद
न्ति गत्याप्त समयधर्मे त्वायतीन धर्मम्भश ॥ न क्वाविक तदरूप स्यसीय कायेयय यस्या । नो क्लिस यंकनो धर्मम ६ किंच गत्नक निय्यास्ति
॥ श्रुय सौदास क्षोम वसादनाममध्यमाण १ पृथ्वा तवा ॥ मातावे धर्म १ ॥ को सीत्वप ६ कथययान समृध गास्मु ६ कीतावन वनम गी
दायितानस्तितत्र ब्रान्निर त्रिनु जान्म्न पितृ ... ॥ नाथमिक ६ किसंगोत्वमितनमगंधा ॥ १ ॥ बोधिसत्व उवाच ॥ धर्मम स्थितो
नरवतु तापितनमन्त्रि यथारीत ङ्के स्वयिमप्य गभुण प्रासतानि नयायितिन्ध नमवन नागनस्युजास्युष्ठि कगाहिपूरपानय रास्मणीया ॥ ६ ॥

मृदालनूनू हा१ समृद्धिः गैकार्युलियल्लवानरजानू ॥ सुगन्धिरिंध्वरुनवूर्लनज्जिरतेः पसकामन्ये१ कुसुमैनवाकिवनू । अशोकवे१ का
रुनरोकिंनाञ्जितेस्मसूकनाथ नयनाविरुषल्लो१ ॥ स्मवेःयसादगाथितेस्कथयनसमृद्धतेश्वजूलियभकुश्लते१॥ नाद
रितावञ्जितवानू मौलिरिनिमद्धियारिध्वगमस्य पूजयनू ॥ सुगन्धिनापुष्यनजाविकेषेदभगनागेमालान्वनेनवायुनान त
मद्याजन्कविद्पभ्वयध्यय विनानमस्थायदश्रुघे१ तेघतेश्॥ गमोद्धिरुरकिवशनकवनतयहासयनू यास्मइश्हिस्वने१॥ अ
कानजे१ पूस्परूते१ सयन्नवबिरुषयींस्कत्रगजूनथायये ॥ दिग१ गनक्कांकिमर्यादघू१ जियेनव१ कनाथ्योघुनेनाश्वारवनू नमूदा १

रिगन्तुगमिवास्याणं वस्कृगस्हतालकम्यितवीवि विक्रमः ४। । अथ गायत्रूपा ४ क्रमेनतत्सन ४ समुपस्यतास्मिन्विनीतधर्म्मगर्षक्रमायथा ॥
कथितं गतनमहामनातदविड्नेहस्किंगनानेनविन । मृगदद्दगुरुमावृछिवरुखेत्। अहायथायंसेहगास्कस्या। किंनदयीगिहकीत्ता
तान्तस्योग्रमहाछियस्थस्याद्वान्धवावोन्यतम ४ सुगो । वातसीवरखत्वस्यांगिगाडिजौहीसंबृहितस्यापिविचितोगेत्रूपं॥ कृमद्दौनेवः
कस्ताक्षीत्साय्यडीकृतवचाकायंवखत्ततस्ययमो। दृश्णतत्सं(छि)ता॥ ।अथतग्रैशांतियूततनमत्यन्यगां(लि)नायकेहलकम्येः
यविवंमदितीः। यकोमेस्येव) वृछिनतवत्रायऋायपर्यमः ४ स नवखत्वयदिम्धनलान्द्वयुतिस्पद्धिनूयातिगायः ४ कृजङ्गवनत्रायऋतानोमवः

वनमीसगुणाभदयानीअलंकृतानामिवयौवनेन॥ विशुद्धगोत्रार्यमनाद्दनाणी. चंद्रकलाणभविवसंख्याया२१८८॥ अथैकदातेनाजालोक॥
पतियानेनसामर्थ्यादकृडरडपुकृनिबाद्धयो वनाजविरुद्धयासंयोजयामास॥ विधेनैयावासुनगीवृत्यप्रियालिधर्म्म
नितिसूलाधिनानिन श्रावकपूजातिनयेननस्कंसुरा॥ धिनेशनमूयागमेध॥४॥ ।अथकदावित्समहात्माकुसुममासप्रदाववि २००३
नविनिकिशलयलक्ष्मीमाधुर्य्याणियविकगक्तु॥ सुममनाङ्कृपुहस्तिगानिप्रविनतनवगाहलकृथस्तनणसनायेवनणीत
लानिकमलानतलासीलूनिविभतनितलसलितानिप्रमद्रुमनमधुकनागनायगीतान्यनिरागवाहिगणानिमदइसनाहिभिगिनेसुखदवमा॥

प्र॰ घम॰ १वि॰२ हाकोसहितन

त्रिमन॥ प्रसादहावनानितगगायवनान्यन्विवनन्नन्यगमद्द्यानवर्नेनातिमहत्त्वावलकायतनपनिवृत॥ क्रीडार्थमुपयनिर्जगाम॥ सगग्र
पुंस्कोकिलनादितवनमनोहराद्यानविमानरूपिणं नवधानपुष्यानतविकृयादयप्रियासहाय॥ स कृतीवतनन्दननागीतस्वनेम्म ६
भ्रमरप्रथनवानुविद्धन्ने व्यथ्वस्वहावववउवनोतिगार्गि हानेश॥ स क्रीडाम्मरसायहतयाचविलासलक्ष्मीभसग्गवनवान् गयानया
व॥ तत्रैकं वनमन्यतमं॥ सुराभिनिरवद्यायी ब्राह्मण ॥ समरिर्जगाम॥ क्रीडापकानसत्कानेश्वगड्येभैरोपहतमनास्कणाय
विश्व॥ इतिसमस्तासखीयौवनानुवर्ष्याप्रत्थसमृद्धिप्रगवापतनं क्रीडां विविमनूरावस्कदागमनाइत्यन्नवद्दमानचवनास्मिन्ब्राह्मण ६

फोविविन्कैयनाकस्यमहासत्वस्यतदीयइश्वाविनाकमनसश्कान्लथ्यपतिवयादरस्तुलियोवर्फेन्का ॥ । अथसौदासश्सानुनयनमहिवीक्क द
वाधिमर्वेसमसरिप्रहसन्नूवाच ॥ मानावरुद्य ॥ धी नञ्जयरिविस्यानस्कैस्कैश्चवद्दरिग्नुञी ॥ अथूबास्महसैवाप्यत्वमयस्तुलि द
मूकससि ॥ सुख्खल्विदंमूच्यते ॥ आपत्सुविरुर्त्वि र्यैश्मकैध्वतामयार्थकं । नाहितादिद्यनरूतमारुतीयन्तकम्पतहुति ॥ नात्सद २००१
र्थनावहति ॥ भाभाद्विद्यानयघर्तेसुखसाधतेवा यन्कैन्नवाविपृतितामथवानू भीवन्नूनयूत्तप्रियांवितनमसुसुखान्ह्रूतान्वा स्य
वैतिमासुनयनत्वमूपागनासि ॥ वाधिसत्वडवाच ॥ नयालाद्यितवानवेवतानयान्वस्कैन्नदावेन्नवनेवेञ्चयस्यसुखामिसैस्सृतावतोवाध्या २०१

जमार्यममः श्रीमवांस्कुशुवाभिर्नैवरिगात ४ ज्ञरुर्ववहतीमांद्विजानैवाः स्यनमदकृतधुरवमिमिस्मत्वाम्मिसाभुरुमा ४॥ गस्माद्विसजयितुम ६
रुसितस्ययाव दान्म॥ विघागमथिर्गद्दन्दयींद्विजस्यः ६ सम्मातत्तान्म्वृपानिधकतर्वकनातिकस्मात्तत्ताभितमधूतिवसंविरामि॥ प्राह
थेवमानत्स्यमहींद्विजस्य. गन्कास्मिरत्याननार्गावाः पिनरुन्हागमात्वीतिकृतरुणार्यानैनीब्कमाश्रीरुवदीरौणार्यी॥ मावाय ६
स्मावचनतायमस्यायवीविर्णकींकुलमानमारु ४॥ ज्यास्मिमा॥ र्नेनात्प्रमद्विक्षनामन्याद्दगास्त्वनयजनारियन ४॥ सोदासउवाव ६
॥ ॐ दैंरयाद्भ्रूदगामूत्यमातजुद्वयणींनेवक थक्विद्दितिः कानाममशर्वाद्विदताद्विमूकुश्वस्वसू ४ क्विगस्कत्पूतनयूयपयाग्र॥ इहरुनैमृत्य

अर्थ काम अर्थ वि नाम ... इहजन
धनमालिङ्कक

नेन कार्येषु ॥ अर्थकामार्थो वा विनाधि ... धर्मसंश्राय णमनय वृष्णि व्यसनमिति निव नाक्षीपुवङ्गे नीतिकुगुप्तास्कंदतम नास्मन्मन काचिना

स्वार्थेतिनय रूणनातिवेश्मन ॥ अथ अर्थाय गासमा — षिषममावि नाभि वा निप्रुतिक्षा विसंवादनमन्वा वितखान्तव्य वस्याति म मति यव

मैयार्दनाक्षिमाजेषु भयसमभ्युक्त सज्ञभवतो दूष्य — स्वनययानि कार्यसम्यन्नमनुनेकीह गास्यपु रूषमनक समन्नतीनाजेनं म २००१

हन्महोघलीमंवत्तीनादननयाविकाषु समर्पिगमें — नंवसमातयोनिकवर्णविद्याययेवमथ्यव्ययेवातिस्नानार्सयोदिनोस्याचामन २११

रूणाशाति ॥ वाधिसत्वज्ञवाच ॥ नात्मसंदवान्ययाप्रुतिक्षागमनयकर्णे नाभ्यौषुवाव्यसनयर्कीतिमाग्रक्षेनेनकारिमस्थ सुहृद हृज्जन

यनित्यकंमुश्नात्यमुवणाद्धिमप्रुदर्त्ते॥अपिवाह्कंरंपूर्नमादासावृदानक्षकयान्मायि। मद्यवश्यश्यया।आमीयरुजाद्ुभमागतीं॥ तथ
धूतकोनलाञ्छुदमयागोगस्नाभिर्तंनडयकानीविलं धनसीनूकम्यामयाय ग४॥ अतींवाप्रदेवस्यमेदस्ययागकिया। कादिगस्यध
गाकिनाक्षिमांमंवमाहिगनीविहिंहिद्धमिकन उवम। नूतीयसमहात्मापितनींविमिवानलक्षाप्रमेववितिवय्युलापिजनमनून
कीकृवतकायमकाकीविगगरायदेन्यध्सयात्वनद कीताकहितायेसादासमारिनिनेध्युक्तन्तिकेगामरुजगमेम॥ हूनाद्वावत्ता
कसीदासर्कमहासबमितिविसयादरिदृछवह्मानयसार्दध्यिवाद्यासवित्रूटकेनतामतितममिनोपियकामिति। विकामायेद॥ अहह

नकरहमवाय ॥ अस्यपर्वतस्थलस्याधस्कास्यभायतालेक्कांविमलमक्तिमसत्समनस्कादनंतनमार्गेलागस्कात ॥ ततएवव्ययनीतिघर्म्मेनगर्षेक्ष्ण
मास्कस्येवनातिदूरं घस्मोत्पर्वतस्थलोऽपितितस्य स्तकिनेष्टनवीनंडेक्षय । तस्यमुनीसानियाध्ययनामस्तायदृतिशिविवतस्या
केष्टसलिलमूयगस्कनस्थेवदिशायागव्यमवमत्वे कुर्वनकाकानमिर्दयतियास्यथतिं । तस्कुथरूयमतंतनमार्गेहातिसम १२८
हामातान्पूरस्थानसमाधक्षमनपूर्वकेंगतध्यस्क यनगाडूतेतनमव्यंतमार्गेलानाजिविशिखवनमध्विरेक्ष्णगस्यजनकायुस्थतिं
स्कानमव्रक्षयासिंगनोरंततामुम्हतानि यतमितियालिविमृपर्वतस्त्यामासत्र ॥ नार्यंयमत्सुगतिंसमाप्युतेकाणयतीमनूजेन्डलक्ष्मीसख

प्रकर्षेकनसांतवधांत्राम्मी यंनैवनमारूसौख्यं॥ यत्त्वाक्तिपूर्व्यंममकिके॥ वैकान्कानमग्रंजनमूर्छितिहीर्षोम॥ संसारकान्तानगनस्यगेनसा
कस्यानिस्थानयिगोरुवर्यं॥ तिविनिष्ठ्वसमस्तो त्माप्रमादादगलितप्रयातनिश्चक्षमनेलइ॥ खेखेगुनानि तस्माज्जिनिमदाय
ल्याहर्षगमूभाव॥ नजतन॥ सनियर्ग नदीवमे घ॥ पर्यक्तिविम्ब॥ ववास्कृगिर्नगाकि॥ गारूस्यपरूयवनीफजवापवि
हर्षगगीगिधनिववनस्यहिमोक्षनीयं॥ श्राकम्पयार न्नयधर्माधवेलीधनांश्वमानस्यव्यपरुमदाथ्यधिर्गसवत॥ निर्घोकायिलु
गनवैतियपागरूमो श्रावर्जयन्वनतलगावन॥ वगाथ्व॥ श्रसंगयंतछनसंज्यारूदामन॥ स्वविस्मनित विस्मयाः॥ स्वना॥ विविक्तिरथांम्रि

गयानियादात्मसमस्त्यनियागमध्यकृष्णकनानीति। यद्वार्कंरुगावणायुनिनिर्व्वालसमयसमूयस्थितेष्ठदिव्यकुम्भवादिग्राङ्किनरव ध
लूपन् नानन्दैगानथागगेसत्कगारएवनीतिनतेद्वि ६ वीनिद्रयेथ्यिनयमेवमारोयायसंपादनात्तेजाक्षणारवनितगन्धमोत्याद २०२
श्रारेतानगणाति॥ ॥ दृष्कीजागकविंशाकम ४॥ ॥ द्वाविंशाध्रुकसर्गंवर्न्नेष्ठ सफागेग्दक्षगं दृष्कीनयकाद्वेषणम
फिरिश्व पूर्धे र्वभ्रायपर्यंयक्का॥ ० ॥उद्वार्तं॥ ६ वाविर्हसामरुवाधिद्यानन४गानरानुरेश। कपिनद्रजान्किवादीवब्रक्ष ध
दृष्कीवनेदगा॥ छायेश्समाधक्रयथनयथ्यूपननग४सर्त्तंगः ऋमेतजानायाणयणछायाथितारावितवा॥ गद्यथनहरूयन वा ध

श्रीसद्गुरुगणेशविलायं रगवान्ययगणश्चकाशर्वजगद्गुणयनियमसंगमसान्मीरूपधजानूयागप्र तायानतद्दक्सामनकं ग्रामतिकोनव्यना
जक्तेजन्मयुनितेरं ॥ कृष्णगुणगनकिरनणमाति नश्सामप्रियदर्शनस्यसुतसाम॰ शर्वविगानामवेकं ॥ सद्गुरुक्रमपञ्चवन्दे ध
माकं॰ वप्रतिदिनमरिवर्द्धमानकान्तिसावस्थ१का तक्रमादवायसहिःगाम्भसामवेदश्चवदवशृवैवजन्यदृष्टक्रमश्सालनका
तानीतालाकंप्रमवर्द्धमानानिकं तरुणश्सम्यगायुप याक्तिसोमस्थादरिवर्द्धमानादनात्यापियावेन नियमाद्भवशृनिवगुनानाद
वर्द्धव॥ भीतज्ञात्यागदयादमोनानेजश्जमाधाशृति सन्तनीनानि अन्नवर्णज्ञीधक्रतिकान्तिकीलिदर्शित्यमभक्षवरगुरुक्रानानीयागमा

४ समाश्रुतेव ॥ श्रयमदमुनसूतसाम तत्रवारिवकेस्वकिमननतकृपणजनकदत्तकननणप्रसर्गीनति ॥ नत्रमाक्षानप्राद्याकलिदप्ये
सुसीदासष्ठसिंहरूवगणान्यवकेन्ता निनावननवु कृतनाभिकाकितद्मकसौम्यदर्शनमारिवीक्षवधाधिसत्वमस्म विरवामेवम २००५
गयामीयूक्कानीर्विजाकृ मदमासेननकृणतनम रिसूयेतंस्कचमानाय्यप्रेह्ज्ञाव ॥ वाधिसत्वापिवेतेसेनस्कंदयो ज्ञानमान
सीसंप्रमाकलितमति नाजवतावेज्ञावणइयात्रुस्य दृषावतेर्यसारिसंकमवेप्यनायमस्यानूलोष्ठिकालेरुप्यपेगीवक ॥ सो
दोसाय्यारिमगोर्प्रवासिद्धायस्मिवर्तरमधिगम्यपुमदिगामना४स्वमावासह्मैयाविवर्ण ॥ दृणीयन्नेषपाग्रवनाकनैत्रेभिनसमुष्ठिगद्रेद
त्रौ २०५

गलीयूनषमिवरथावरतम्यनूस्तूनादलरतेन निवे४ निवाज्ञ ४॥ रुद्धव्यक्तोध्यसनन्नूज्ञारुणपूर्ज्ञ४कीर्तूर लेन्ने कविनाधूमाविवर्ज्जू४ ६
पुनानकेताचिरतसमभ्यर्केद्रनाद्दर्ष्ठिनासजेले४सा थिकनेत्र४॥ समवनोय्यवनंत्रवाभिसर्वतद्रूपसम्यदाविनिवध्धेमाननयन ६
ध्यपुणानीवीक्षमा स्वभविनप्रभम॥ । अथवाभिसव ६ स्यसूलाभिनायायनारिगनंवाक्रणमकूसस्कनंनइध्योनाविनिवकेतयुनीरूणंमा
गमवर्वृद्धहृदयमनूस्मृत्याचिकावाइनरूणू॥ करुहरा॥ गसूलाभिनापायनवानागयाइनमागग४॥ सामीहृतमूपप्रस्यविप्रभकिन्नू ६
कानिष्याति। आभवविधानाभ्रियनीनवनार । वेनादेम्यतीव्रणयविनभलनविनिष्वसिध्यथनूज्ञोच्यवांमा. स्वराण्यनिन्दीप्रणिय समनवा॥ ६

नीः॥ आपन्नतस्या पांवि कानिमित्रमयीतनी॥ आकरजाध्वि कित्मा॥ व्रतंमर द्वाषवत्तावमद्दिप नंनिश्मातीयमासश्मश्रियघ्व॥ सत्तीगर्भ
यारदज्ञाकनस्यमरतास्तृवि विक्रूननजक्तस्य॥पनद्य वादेशुमितिराक्रमस्यस्य व्रांधगांकीकिमदायक्तस्य॥ यवसन्ननेगाननवरू २००१०
नाकेनसंस्कृतेनयुगितिरमेलछ्वि॥ संनायनवयकना॥ उदलोव्विरख्यायमानागयक्कमस्य॥ विस्यपक्तरवयेनिदगेनस्यांविविक्तम॥
स्कौगमय्येगजस्य॥ मायृर्थ्यीसंस्कनमनाहनखाद क्रिष्ठमात्यप्रकवायमस्य॥ विनोनादिफपतिराक्षस्यायस॥ कीक्रिय॥ २१०
निवाधनस्य॥ वाक्षीस्वरयांचावि जोषहरुयोगमत्युसन्नीयगनि॥ हन॥ जाना॥ रुताय वैनाधिकवामसांकीर्ति वर्गमार्गसमृपाणयके।

ऽऽगानुसानवृतियालिसानास्फनन्युकूर्के लर्वजन्मइ९अ॥ गुननननकांतिनिविघ्रुतातियफानार्स्यारुनवङ्कगातिनगकौकृयन्तामनपूजयमा
स्मीकथामम्वाफवर्तं घयर्यं॥ योह्यामिसीदाससमीपम स्मांदध्यानमनोघ्र्यनिगमेलो॥ तिव्रकेसकेन गुणापमेहतत्यध्ययादोषप
थानुवृत्या॥ कृष्येतं पिताह्तेनासमभूच्यातिनसंजमर्व सादनमुवाच॥ नवेवंखलुनानहिनोवाहिनामयेवमाशिहितनदलमप्र
मन्यवर्णमन्तरुविशुद्धिमनकर्केसीदासवर्णगामिष्यः१ ति॥ कृथापियुलिल्लार्तवयोतामीपायगमननमन॥४ सयोनेनवीतत्तंवाद
यिउमिच्छमि॥ गदयितनाह्रमन्तस्यांम्यंयानकौसिखघानयानिनज्ञानिमिदं गुरुजनार्थवादनमागर्वदोविदितंकुंतोरतत्यनिहानउभला

सौदासद्वैवाव ॥ व्यक्तानाङ्गं वं कृणो भयस्य स्यादहिंसकतावन ॥ अथ पनिव्यजनानाजन्मनुष्ययिष्णितानादितां ॥ बाधिसत्वड्वाव ॥ ननु पृ
कौरवनायूर्वं दास्याभ्यंतानहंवनाग ॥ प्राणानपिय नियक ततदिदंजयतन्यथा ॥ हतापि कृतामया ॥ हतापर्मं ८ कृणाकालिस्थ
कृणामित्तदर्हेकार्थं ॥ बाधिसत्वड्वाव ॥ भूतजव तद्वान्यकमहाव ... नन कदवं संदकौ ननु कौमया कस्वम्वनयुदान
स्यनि ॥ शपिवरा ४॥ मत्यवृगतव्क्ककर्थं स्यादहिंस नास्त ॥ अथ पनिव्यजनानाजन्मनुष्ययिष्णितानापिता ॥ ननु कौरवनायूर्वं
दास्याभ्यंतानहंवनान् ॥ प्राणानापियनियकृतादिदं जायतन्यथा ॥ धर्मादयात्मृस्वात्कीकृतृष्णासृस्यकृतेरवान् ॥ अनर्थयेतानेनादृक्कर्थं

२००

३१

नत्थेकुमर्हसि॥ दक्का न्वे गायिता वयमनोदास्थेरु गऊजन॥ नित्निनकासा कथन्ताम त्वामथ्य तिरुवादिति॥ गदत्लीगा पाश्चानमवानुत्रामि उमववाद्धु ६

मरुस्यान्माने॥ सोदाम ६ रव लत्र रावान॥ वेद्याजिता तिक्रुणतिन्नूयक्रान्यिता तिअम्याश्वनूपजन ऊान्य यजागीताति॥ मीसानिसाकि ६

कुरूते हृदयस्मउष्ठिनिन्दावद्दाद्विनमसाभ्रमनुष्या मीसाग॥ तथ्यरवनात्मजलगायदताद्वीनानुगामस्वनक्षेनिगिनाक्ष्यरवेव ६

गफग नवच्येनुमणाच्याविऊ नरूमनानुकूली.दिवा ६ कश्चेन्त्वेनममहगवन विविको॥ रिवरुस्यनारु तिन नन्द्वेवभ्रानयान्कुथमस्नोथया

यनूपेत्राध्यपथम्ह्जख॥ तकाचयानूशाषिविऊिथसमस्कमे न्यान. माथिरुविगुरु विर्ध्यायनिकाले नारद्व॥ लाकयनापिमनुजाक्षियनखवं ६

सिद्धिलोकस्यकादिवन्द्भममासद्नः॥ अथसमद्दोसद्धथपूल्यप्रुत्रावसद्खायननेदिव्यकत्यैनपिववियर्येनृपतोत्यमान४सद्स्वह्मानसम्
स्वनवयिग्रादि॥ब्रासनिविर्गकिं॥यमान४कदावि स्वाम्मिन्नूःदवप्रुविगननमणीयरु॥रांकालद्धभायनगांकोमृदविरूजि॥
दिदद्धः४द्वगायनृद्धः४यिग्राकाकद्नूमाणिनजा रांकिविग्रालकालसमृद्धिगनानाविधनागप्रुवतिगाङ्कृतयपांकाधेर्जहे २००२१
मरागृङ्कीयतद्धगाविनीगवउनउञगंसदऊयार क्तित्यनियृलभुविविनीनेवीनसानाघ्रिंविग्राकलवगप्रुस्नणावनणानृ
यार्ग्रनयवनमाभिरुघ्न. मताद्धद्धयस्वत४यृन४सनकृत्यूनवनमतृविवनन्कद्दगनाक्रिफद्धदयेस्यकोमृद्दलतोतवऊभे४स्मुतिसलाज २२१

नाजऋत्रियगुरुत्युणामागादिवतव्रयागसर्वायानस्यात्सवेनम्यगनवंगनवनस्ययोनज्ञानस्यसमूदयजाग्रामालाकृतव्रयुरुष्मोत्रकालाद
यिमनसिकगसंवगयादिवयत्वात्पूर्वजन्ममूस्मति त्रुतिमरः ॥ क्ष्यलौवणताकस्यवेयखविनसास्थितिश्रयादिर्यकौमूदीसत्क्षी
४समकेथैवरां विद्यातिना उवाम्निष्ठयाक्षजगत्युवं फावर्सेयथानिरेयताजनानां यच्छयूनाध्विस्थितसर्वमायेनाजि ४ संवामाद
षमन्तुगुमक्तिः ॥ अवाय्यवीयस्त्रनिसुस्थितिगषुजिर्घा सयाव्याभिजनानकक्षुनश्रवथ्थगमेयपरेलाकइनसर्वाबकालगमणसधत
स४कथा॥ स्वनानकुथवमहाल्पवानांसेनमहीडानिजतानिष्ठत्वान मेघामकृष्टिहृासवहममाला४संरत्यरुयाविलपोद्रजक्तिः॥ गेष्ठ४स

तास्यवरू॥१॥ रुद्राधिमातिवतयाद्बनासिद्धिमन्त्राद्यायोतृ नामूपशमुयवबेधवर्या॥४॥ धन्वन्कनिपुरत्नाद्यायिगर्नविनाशंधर्मोयमेन
मतितिनमातिवेतांकं॥ आविरेवनिचयूनध्य गिंधारवेनि. गद्दृक्रिद्वातितयध्यनमरीम्बि शान्किः। विघाधनाविविधमनक्ष
वतधुरागावाम्न्यृसमध्युरावनिरुनयुरावा॥४॥ ॥ छ्पानपिंप्रातिनद्न्ध्यसूनासूनन्द्याप्रु छ्फानविप्रुतिनृदन्काम्नाभसूना २००२१
ध्वनमातात्रिवूटमेगोरि॥४॥ समूदीलू सेव्यैसे॥१॥ स रुकेनपिउम्यनजस्यववना॥ ॥ मामवर्याप्रतिवार्या गोद्वेगो कृमाक
शाग्रारवनन्नमेनाति॥५॥ नमन्यनामसैत्यनिरुयणवाप्रयामिधमायप्राधिवतारवन्॥ नाआवोच ॥ अथवतनवकश्राभवा २२९
ममरुणान्क स्टस्प्रुवननिनगि ॥ गमभिरत्रा शुभहमरवु

स उवसमउ निक्कियमस्थ्रायसनिधम्मयानिग्गहवा ॥ किवोवननसमुयेष्पतिरयुगक्रुषेमंस्कि गा४ किम्मषयानवनाविनष्पम४ासवे ६
नामतियुग४क्रमउ अतय । काथ्याविनायघ रवनविनसँउयाम ॥ वाधिसल्लउव्वाव ॥ कामीस्कि गा४ रावनवनन ६
वमस्थ्रधम्मातमकम्माविगुणषवउत्यवलि४ा धम्मानमनारिवाधिनवन गा यहेउ कम्मभम्म नामवनउवेसरवेषयउँ ॥ ६
यव्युउदेव४ ॥ थ्रमादमदकन्दयालारठेमा६ स्यदंगह । गेखिरुद्दस्यधम्मस्य कावकागायानिग्गह४ा ॥ विक्कष्यमाटमम ६
वहरि४ककम्मिरि ४यनिहायाजेननरुगभकतत४ा पुत्रगाक वेगावसनादयोगमे४ कज्ज गटहसे४ गमममागेमेष्यानि ॥ वनकुलंय ६

पाणि नमव्रू स्रूा रूनमित्यूवाच ॥ ऊर्ध्वे मानंतिव लं न्यूनं सदा वावितन ॥ नरो न श्र एवमयाव स्यय कामर्षयि ईनत्र ॥ खणिकउसगा ६
कस्यरूमा कोहिवतीयसी ॥ विनयावानक्षीरं ६ मूरुतयय किवसाधूधू ॥ शके एवातीति कौ गइवलस्वातिर्गयग ४॥ वर्नीय ६ २०२२
त्रिरावस्क स्मान्नगुलभतीयनोराव ४॥ असक्रिया सीनवलाधं तामसैनि विंश काल ४ यन भागुलभ नानि ॥ ऊतप्रियस्कगाकि मत्य ६
यक्षु स्वष्टिस्थे रुदायवन्नाक्रमन ॥ निर्थे रूमर्हं साध्वनवरूमायां ४ काल ४ यनायरूनयाइनाय ग यन गगस्मिन्नपमा ६ २२
दिगिव. गत्रवकायपुलयकम ४ क ४॥ सांस्रम्मयी जामविविन्स्यथार्यं मत्यायष्ठुल्वयमिवप्रवृ रू ४॥ नयवरूमामयस्तगाग्रकूर्यीस

त्यः कृतप्रावतनकीदृशः स्यात् ॥ यक्ष उवाच ॥ गतनष्टितत्वमस्याः कदाचिन्नुवाश्रनायामात्रमस ॥ गुणत्वश्रवद्ध मानस्य इर्जीतत्स्याप्विनीतानी ।

रुमानेत्रत्यमत्य क्राकः सकोवायिर्दुपरुः ॥ बा धिसत्व उवाच ॥ पयस्यपीजावणत्यनयत्सुखं . तिवानत्स्यादसुखादय

स्यवा । सुखोथितेनक्लन्नानिभेविदुरुमं . नतद्विया कादिसुखयत्सिद्धय ॥ रुमाछायादवमसोमेयार्थेतः स्वधांधमानायादि

नोवगच्छति । तिवाचयिष्यान्कितजनमूत्यथ दामाधिष्ठितमयानयमत्यपेष्यति ॥ असक्त्रियोपायाद्यवगोद्विश्राजनानमाद

लाथ्यवमसीकरिष्यति । नतष्वक्ताबारिमूनस्क्रयावन . दत्तध्वमुक्तिमेनसारविष्यति ॥ श्रुथ यत्रसुमहासत्वप्रसादविस्म

प्रिताश्चर्य॥ ततस्तत॥ बोधिसत्व उवाच॥ नरकव्यहृ भवसूक्षन ताश्वयावादमानकुमहान्भू वसय। अकृष्ट तं डाइदयस्त तायि ष
स्मि ४ सता न नरस्सताक॥ । अथ सोद्भास स्य सोद विस्मयाख्यामावर्जितम्भमवहमाना बोधिसत्वमूवाच॥ चित्रारि
क्षनाति... ता असंद गामधु नाति गम्य। अ... तं न्दिनास्त्यागि पूजनार्थं वनान ...वउ नाददामि॥ तद्दनाश्व यत्र १००१
न्म कारिकां ऊसीति॥ अथ तं बोधिसत्व सदि स्मयवहमान उवाच॥ यस्याक्षिता नन्यापि तु परत्व मकार्य सनागय
नाजितस्य। सत्वं वनन्दा स्यापि तके य वस्मि गुरा पुत्र तन यै कराव॥ अनुक्ष दहीति नं वदयं मनं वा दित्सा भाथि तनकवस्याकृ॥ त
२१९

मयेयं कूरसंघ्णमाहिय याद्‌तावदेवात्मतैयमांनं ॥ अथ सौदासस्य किंकिंच्चीतावनतवदना वाशिसष्ठमुवाच ॥ श्रुत्वमतग्रूवप्रामामेदं
वेविनांकिंतुं ॥ यागानायियापित्यक्त्वदास्याम्यतानद ॥ वनान्नु ॥ विगत्त्वताद्घणाव्र्ववेयय्यादिष्ठ सिरतमिय ॥ वाशिसष्ठउवाच ॥ न दं
८ कादिसत्यवगारवविवज्ञयसत्वहिन्मांत्वकीकर्त दं जनमकोषामिमिमांस्वमूंकं ॥ अद्यांत वेवतनवीनमनुष्यमांसमगान्वनातन
वेनान्वितुनष्पयक्त ॥ सौदासउवाच ॥ ददामि पूर्वान्कवतीववास्कीनव्यक्त्त्वउथंकुवनंवृणीष्व ॥ अवोषिकिंवनामिदयपाद्द दं
मोलाविनंकुनमनुष्यमांसाण ॥ वाशिसष्ठउवाच ॥ अहिंसकात्वकं कृतामांसायं गेघ्रतानवान ॥ सत्यवंकनभदकारनास्पूर्वनास्कय ४४ ॥

छातवडाहूर्यं ।। अनेकाद्भुतकृत्यनपूर्णमानन्दनकानयवकरावं ।। संसकागीतडवदासनादयनख्यना॰ भूषवित्रकरहर्षेन नेत्रप्रियाख्य
नकदानप्रश्नेना ।। स्यमा नारदयं न्ययस्य ।। वि घातिनघानविमुक्तवन्धनसमस्तुक्तिनत्युक्षजोचित्रवबवनं । विस्तूर्ण्णृपृथ्यासवसि
कोटदृतलंवराननम्यायनमूत्तसवाजियं ।। महाराद स्यथप्रविकीर्यमाणे ४ दिनत्यवक्षरत्नलाभादिवर्षणे । साकेतदाख्याप्फमिवा २००२०
घणाश्रीनृत्यकर्गमातालितेरूकान ।। तीनयसम यतनस्यनाक्षेजा नाजा गाप्कमानामृयनमस्मा । सर्वीविधिप्रमानबकृतामि
तिमव्यमानस्कस्यगतनयस नेत्रार्थमालिकाक्तनजतराकि विततीमागिसर्वीयसप्रस्फितिरवन. रूतविघापानेहष्टुन. वदाविहितान २२०

वक्रमना विहितनक्षत्रप्रतीकारान्. सम्यग्विनेदुश्च कौतुकमंगलं सिंधुकं गत्वस्नापयन पविग्रहजातकर्मादिसंस्कारान्विधिं संवृद्धक्कं कारयामास ॥

नामपि च महासत्वं सर्वसत्वसम्यक्त्वं पूर्वत्थेयपदयपुरः वात्सर्वं विहितवाच्चत्त्वनकायाश्च मातृवाक्यं च माहिंन ॥ स कारक्रमादवाप्त सं

स्कारनकर्म्माणि गोत्रिजनतावानमुदे हिलालश्च विहृद्ध णां च सम्मानानेत्यच्युत्मामाविनयमक्षगुणावर्जितैर्याग्रे स्वयं च समाधिगतान सं

कविद्य च्य उपसमाप्यस्यमाणामुक्ति श्च यौवनकान्या भिसंगमसिद्धिनवविनस्यानुनागनानयनं प्रमास्यदं स्वजनस्यजनस्य च वल्लवा

॥ श्रमसंस्कारमसौ वृद्धिं इव समक्षमापि संजूर्त नजनाः नेमिसूत्रन्दी यायुगलश्रीस्कप्रकाननं॥ स्नामसत्तमननरासश्च सनादिकवनाभिमतान सम्यक् ६

खलवाचिद्ध २

ष्ठतयक्तिदर्ढुकगायनाष्यषून्नयाश्यपरु। महायनाष्वयाद्विमृयुभाश्री नदहुनीग्विवणलवक्ति॥ नयाश्वसामादिरिनष्ययायाय४कृगाय ध
नार्थवगामानयक्ति। नाडक्विनायासहृहावलयो ध मृत्ये४यूनन्नोन्नयादिसीथ४॥ काष्मानतलतिनधानाविषाग्निगेहुदष्ठक्तिनेन ध
हिंदणक्तितयाहुजु॥ दष्ठव्ययलेविधवाक्कुरा वक्तिमृत्यो. वध्यारितिध्यमयकानविक्षुनदहु॥ दष्ठस्यकायनरसेनायियन्न ध २००२
जोहवसकविषियगमयत्यागदैष्यविद्या४॥ आ ध घ्नाविषरहागिविधायमानिषहृदक्षुमकागदीरिनसाध्यवेत४कुगोनक४॥ यज्ञा ध
तितेतितिगमीतकृलंयदस्यमघोघरीमनामूर्गजलमदन्नवयय४॥ सदोनिहक्तिलितगगहणात्सयन्नमत्युपतश्यमापिउनगन्यात्सहरु॥ २२३

नमवदमता.

रीतरू गानयिजवातिणयमञ्जिवार्तसाधयंकरुजवजांलासवस्थान याखाा४।पेवालिनुधिमानिवनमगमलों. नवंपवृत्तियटवसुरदद ४

किमस्थो ।। दक्षाकनातमयिनामममगा३सेभय १ वैयाद्यमाननमचेपिपूतावैमोदनंमस्यामूरवकुयथूनागजनालिदस्तुं. फ

स्यकस्यवयूत१जिवणारिनामि यिवान्किनृणाँ १ विकतागुविगस्तु४।मूसोजसायाँमिघदगुसत्यहा४।रावान्किनुयसुनमूशाविग १

स्तोवियनदर्ध्योलकणणायानिगुरुसाश्व।। यूजानतिऊ स्तूणयूपगा।ऐलानियक्षान्किवसिद्धविग्राश।। गयावनसस्थेयनोषध्वेनव

मृत्युग्रहत्हयुतिवाययनव ।। मायाविषिक्षुध्यमरुसमाऊंजनस्यवहं षिविमासयान्कि। कायिप्रेरावस्हयमनककस्यययहासयणतेनवि १

मकूपेहेनगम विविसवस्तन ऊता यमस्य स्तृणम.

त्तैसमन्त्रकेसीयस्यस्यकथाचिच्छिन्नसेमारिन्नध्यायाणिस्यात्नयनसमावर्त्त॥ अथ्यनमेषित्रध्रसमूघदत्तुश्चसक्तेववारुयन्यमस्य

तालामनूवकार॥ वाधिसद्यापिमुहासत्व सर्वेनकस्याविनयवाष्ठितमूपवक्ता नमिवमेन्यमानानि॥ सेलारुसीनमकमत्यु

मर्षयामास।स्वराणव॥वपायानीविनयात्मा गोसैछाय॥ अथ्यार्सकृणवसमा।मूयकान॥वकमा॥ अथाकिलान्येणमा २००२८

यीऊक्रमत्ययेरिरावसमम्यमा॥जीरावम्मा जिज्ञसयमातस्कस्रमहासत्वस्य गीतहृष्टकायितावाक्रमातर्किमहिषवे

घरीमागच्छिवदमागनिमवाच॥ मागावहा॥ कियत्रिकीमासीनेनहृष्टकायिता। अथघ्रातयन्त्राजिताउताहारायसमम्याकिंचिद्दा २२८

णर्कीस ॥ ३ ॥ तो हावलमात्मगर्भेमा वोचि । य देवमनंतयाविद्युयुवाघ्र सितनू ॥ ३४ ॥ वृ गभविरुं खविपाणागयवजीवजीरित्याघजीवछान ग ६
त्व्रान्नयादाश्वमना ॥ षस्तनक्मृ कामङ्कृ यूरुप ६ कैवर्ष्ठि तयष्ठ ॥ ३५ ॥ दक्ृ जोलायमर्सीह गौस्थि नसमण कोराविलसीसदावयू ६
खरावसोजस्कनिनी ऊंगाजितं इनासर्दकेस निलमधयितारावत ॥ ३६ ॥ मथनधेखागदिदंख नणवा विषाणकोयामदमस्य ६
याद्धव ॥ किमस्तृजात्मस्यकपनगकावद्धवाष ६ नाइ४खमिदं तिथिजस ॥ ३७ ॥ असञ्ज्ञन४कृग्रयथ किं त्यग शुलानवद्धृया ६
सखभीतसोमस्या ॥ कद्धृकृनूजाधिहियग्रसिद्धयंकरुत्म केनाग ह्वयुसय्यानि ॥ ३८ ॥ अथवीमिसखर्कयकमवकमाण४कमायके ६

ऽमादितमनसः४ सूक्ष्मगनमागि वृद्धकस्तथ्रु भक्तो द्रुस्तं॥ अपिदत्तो॥ द्व भवति तच्छायायैन्रूयी धम्मेदर्यत्न॥ अपिनामागताथैर्गै द

स्यान्मे धम्मात्सकेमनः४॥ ।अथ्वेनवाधिसत्वश्याति कृतणयं धम्मे वदायवतमानसमत्व थावाव॥ गत्नाद्विश्वम्मार्थेनाताद २०७

न्रूपसमुदाचानसोष्ठवन्तधर्मेप॥ उयुकायन्यर ॥ नीवैस्कन्नासनस्कान्नाद्विवाध्याविनयुक्तिर्यि ॥ थ्यथियि कार्यावरूत्यीवाक्त

धीखादयन्तिच॥ गोनवावजिते कायपुसन्नामत ४ मानस४सत्कृत्यधर्म्मे ...रयात्‌ रिमग्वाक्रामिवाउन्‌॥ ।अथसाद

स४स्नाकृतीयन्तसमामसीयोविस्कन्नाभिलागतांगणवाधिनाय्यवाधिसत्वश्वयमनास्कनिणायोमस्य विरुयरूमो वाधिसत्वस्यपूनस्काल २१२

२४ [illegible]

दानेनाद्वीरुणाद्यपृणाति मीरुणं किमस्मात्सवेमुवाच ॥ वरुणी कानि माषिनि ॥ अथवाधिसत्त्वानवा म्हाधतिदमधुरं भयूनयान्निवनाद
नव्यायिना श्वनद्गुमवाच ॥ यदुक्ष्योपृपनीतं सद्ध । सज्जनसंगतो न रुवयथवतेमयर्क नार्यास्क्रमममी ऋषी ॥ नेदयध्रय सी
द्रासः साधुसाक्षिणिस्वज्ञानः यकम्यार्युनीतिविज्ञ ६ यैः सेवाध्य वाधिसत्त्वमुवाच नौ सुराविगान्यद्वयगासी श्वासवान्मनाद्वया
स्थानेस्वतीनियुक्ताथ स्थानेनावंदितः जमश ॥ ६ ननक्षणः वाधिसत्त्वउवाच ॥ न यतमाना मतिरुमेरुषलभवजाकिंदना
श्वजनाविनृपता सगानुधम्मन्नजनाशिवरुणं किनानन्नाग्गाहिंगृत्लोवृसाधवः ॥ सौदासउवाच ॥ अस्मत्वेषेखेखिदमक्षासक ६

नासङ्कुनसमीळ्यनराविनर्थं ॥ एवंअसंस्कृतसद्वन्सूर्वेजम स्वप्यकानयनत्वाद्धूस्वारगवाविनितिनयागत्वल्णूपिवार्थं ॥ एवंस

च्छम्मेत्रुवर्णदोषायवयायगुनसमाक्षनायवरात्वा गोनिसेच्छम्मेत्रुवल्णापिवार्थं ॥ तपुसंसायामपिवाच्यमेवमनेकानुगंसंज्ञ

गामिनिसत्यकयायामपिवार्थं ॥ एवंसज्ञनर्थंदे थ्यकीलाकनसत्यववनामिथ्यर्वस्वप्रादोसूरवेवयानिनयक्तोऽसत्यमेनत्नेक २००१२

न्किसत्यदृष्पाङ्गिसत्यपुसंसायामप्यपतेयकरे लाववेलूचियाति ॥ ६४३ ॥ लूनिसुगसामनामजातकवकापिकेमथ ॥

॥ ६४४ ॥ दृष्टोकसपकेसंयकोवत्वानिभेगतक्रर्थं ॥ वल्लूकादक्काकान्यप्यसुतसामप्यकाथ्यतां ॥ ६४५ ॥ नाजतश्रीनापित्ययामार्गनाव

२१२

णोतिसूचित्रीयमानसानामितिसंबंधिगयान्वियं ४ कार्यो ४॥ गद्य अनुष्टुभ्यतेः व्यासिसत्वरूर्तभक्तितायरणगवान्‌ ब्यासिजनाम न लाप्रियाविभ्रयागम

दिव्यसतनगायनियावंद्र ४ खिगमनाथमग्राणमय ६ विलायकंसाकमवैश्रीकानृणयासमृत्साध्यमानस्कव्यानिग्राणव्यवासितमतिनाति

साधुस्वरावसफलसंपादयमानाविमुखस्यासंरू ६ तस्यापिव साकस्यारितिस्मरवाविलोभिक्रकपाविदन्यगमास्मिनाजक्रतैप्रजान्

समीप

नाणसौम्यख्यादसौतिगारिवृव्यावसमृव्यासमान तद्धकसामन्कगयावारित्य्यक्रमानेमहारागप्रवितयभ्राध्विनिजन्मयुतिसरा

॥ सत्रायमानउवगजाजक्रतणसमानसुखइष्वंयपूनवनंयमयारघुदयछियासंयाजयामास ॥ याणिपदस्याकृतउपष्ठाविर्थमदाछ्वारये

जगमात्ननः १ स्मर

मननिकाय ×३६३

यिकिक्षियदिशक्तितम्या. मयियंतीकीसमृयण्टतम्या।तदृस्यावद्धिनमानितस्मात्यस्थामितवात्मातिकिस्क्षीदकैना। वाक्षिसकेडवाय ना।

यतिभिहसमयतीकं. नामाद्धिं वये विप्रियूणस मर्यथ स्यात्मामासाद्यितुकंकथा। पृथाकिनकारिनथयानिथुकमिद्धिसीतिया

शिशितोथसाधतयतेननाक्षासमहासवकमुवा वा।मृथुराणयालगयउद्देवथा। यामेवनाशियथमामुयीति.गा तिवोसीतन २००२३

वीनतीकथा।।।थपुरथस्वतिगपुयीयोथसयथव मृणसमीयेभेति। नीतीतृयकेपिवतस्थितापिनाथीतिकाद्विन्मननउिना।

म्या।उयपङ्कीसवामितीदमायीधम्माथमस्माद्धनमाणयेथ्रु।। वृटोव्यदीकृननवोउिनथे क्रियानिसैन्यानिद . य्यनतसाथद्धितियाउव्य २२२

जनामननीन उपद्रवकसीनकृवानि

तिन यर्तुं कगाक निय स कमायि त्वगाकाम्क स्मैम गिरवाति थे म्म मु तिर्यय तं ॥ दृ [illegible] यकजू नयदागिन [illegible] नीके ये फाविभाजमय याति ६
नयछिष स्य ४॥ साहि वतेनाति वलस्यतु म्यूग गो ६ मन्वादयायिवि व [illegible] मन्य ये गा ४॥ संवृ [illegible] दनकमग ती यृ न गमयुनालिम ६
ऊछियायृषि न थ [illegible] यन न्द्रियाग्वे । नैव्राक कैय्र गिम्रवाति गती भूदृत्ति वयाक्त नाप्र विज ये नायि गविमात्व ४॥ दृ द थ म्मी विग्रक ६
वयाव न भन यृषि दानय न्याि विदून व नोनन यृ ति कदफक गनाछिष गथ्वि नवं विनन्नेयुक गाक कात ॥ [illegible] विकलेनरव ६
त्रैन्नरव नैछियानो कहायमे गनाखिव ४ युलमे जज ४॥ रिवि वयड्रलि मनासिनव ४ यय थी मृथसम त्यरुग दय्यवता ४ खयाकि ग दासानूय ६

घ्यते. वाथि सूत्र ४ किलान्यगुणा स्मिन्नवत्थप्रदर्शार्थक सं पर्क्ता त्यनूषवयू नीतमघ्य विद्धदं० वपादवानीवनमहिंषु श्रावस्त्र ६

व ॥ सातस्यांइन्तरथम्म संज्ञायां सम्भारुव ह लायामायितिथ्यग्न तोवकेमान ४य इ विज्ञानत्वान्नधम्म व योनिधागो २००२१

मतिवेरुव ॥ विनानद्व ख्यवानिवद्धतावा नती कदाचित्कनूलाम् मात्व ॥ काप्रिवतावः ४ सउकम्म नो वान स्थिव वायस्तत ६

थवत्वव ॥ अतश्च नूर्त रगवानवा बदावि क्व ६ नाकम्मविपाकाय कः ४ क्रियान्मकः ॥ सन्नापियत्सरजातियु ग्जाति नप्र ६ २२१

वधम्म संज्ञ ॥ वितानकम्मास्किगातियुव स ४ दु रनवांतिष्ठ विपाकम्म स्कि ॥ सधम्म संज्ञापि उकम्म सगम्स्काफास्समासायतया ६

तथासीत्॥ अथान्यतमो दृष्टवानन्नक्षस्यकारान्कनारिचकाप्रतिरुद्धगोंद्ध्यानुवर्थावविगतक्रोधसंनक्तनामवर्यस्यनास्माहयम

स्तीति तेमुद्गासर्वगततन विहिंसाकमलेरुग्र ... तनमवाधेत॥ दयामस्पृष्टइजन४पदंतयावलयाद्भिवंठा यत्नाविजातिविक्रि

यां नदिरुयनको४यध्याति॥ यतास्कुरायतर्की ... यासुकृत्याचिसंस्यध्यात। वितानगृहवनीवकेध्यवनातितत्रभोकाद्धिवठा॥ सद

कदाचित्केस्यमहासत्वस्यविज्ञयमूकस्यातिड ... वगाहाद्युवलायतो४सहसैवाग्रनिनियतातिस्मा ऽद्भमामिवकदाचिदन्तमक्षिरद

ध्रुगर्गसंवातयामास। क्रोधितस्यापि कदाचिदस्यमार्गमावृत्यवातिष्ठत॥ काष्ठेनाघ्यनतिकदाप्यवनयावर्धयामास॥ सातिलाद्रमा

ध्यतनामहृद्गगमरवाकिं दन्याप्येत त्रासविरूपप्येयो॥४॥ संयच्छसत्वकृतप्येयतत्त्व मन्यनतामसुरयंतचन्द्र॥ वाक्षिसत्वडवाय॥४
महतापिप्रयत्नेन यच्छक्यं नातिवाकिउं त्युतीकाना ६ समर्थ्येतत्त्वयक्थंतनगाकिं॥ इत्युत्तियानि गाहात लोकस्थितयापिउकापूर्व
माधा॥ यापिपुसर्वदन्तु गृह्यमाना॥ पुरेषुकर्मसूक्त गच्छमाध्व नश्रोणकेमाना॥४ यत्र लोकइ४ खंमकेच्य संगासजतारवकि॥ ६ २००
गदवकडन्नसंस्मनाभिः रवयन्नामनेनाभ्रातृ गो ६ य ४॥ सात्मीकृतकर्मवचक्रमस्मात्स्वर्मस्थितकामनेनापिद्वितीयातप ६
चिनं वि विन्यावि विधि नैवया प्रमत ४ यदन्यास मचिरस्मनाभि न वित्तभाषित स्थानियच्छादमर्व मे याप्रकिमर्थरयमत्स्ययया॥ विषयद्वन्द्वेसम
२१३

हन्त्रसमाप्तिनम्रदीप्तजनं नतिमूवाचमरत्नषण्णमूनव्ययम्नप्रयावहधनीददनतायथार्दिक्तत्वयसप्यदत्तकदकानिनस्य ॥ गामतिकीलिनम

नातिनिवनिनातिसत्ताज्जिनाप्तमेयदातिसतायुया । स्वमत्यानभरत्यमात्स्कदयाकउर्ध्येत्नायतत्नसमृयकत्यथयउत्कवामी ॥ नाइ

यत्तवसीदासह्रसादात्कव्याकतयतधसमृद्धि । धमोतनामात्रयिद्रकाविस्मतयाप्यलराववामिस्मुरसवहमातमवेक्वा ।

ध्रिसत्वमृवाव ॥ मानर्कयायैंश्च्याह्निर्भसखतृतात । पुजातत्ना ॥ गीविर्भ ॥ उकृपिनकालदीयसर्वान मृक्षाप्यितास्थगतिक्षाहद ।

यत्कृपायोप्य४स्त्वद्विर्धस्यनयवगीवयायामिक्रूना तद दतिरवांस्कान्यापिभसत्ताविनानिव कुमननन्नास्तिवचनकृसमवर्षन्मारि ।

रुतस्मात्प्रियिर्यदिदिनवितर्तीति ष्ठर्थीनयतूयाऽकीयं नृपनाथिमनाङ्गमार्गे. नाद्विप्रियर्यसद्पिरंषजवङ्गजस्व ॥ श्रयमीदास ४ युसादा
पञ्चयापृतयृतरागदोयमातकपू ४ समातिष्ठये ववाधिसर्वयादया ४ संपानिम्बधवाव ॥ गुणकुसुमनेजोति ४ पृण्यगन्धे ४
समन्काङ्गगदिदमेवकीर्णुकानर्णविघ्नेणाति ४ ००नि विरनितियायमृत्युदृताप्रवृत्तो खामिवल्लिकेञ्वान्य ४ सानेकस्थाम २००१८
स्यात् ॥ गमस्कायुत्पथममदेवनभवववर्तिमूर्च्छावव न्येहममृतिगता त्रयामिने लोक्कुत वैवस्तसाममनुष्यमीसंयन्मायिथक्षव
दासीतद्गणधकानिष्ठ ॥ नृपात्मजायरूनिम्निलमाह्नतामयावर्ये वत्वेतरवदयीति ॥ ४ ॥ हंगाविप्रश्लोकयवीतमानसाम्कदहिमृक्षव
२१४

सद्देवतानयि॥ ॥ अथ वाशिष्ठसत्वकस्य यत्र मिश्रातिथ्यस्य यत्र गौन्नयसुताकृत्वा वनृह्वात्कृत्वा द्विजागमम ॥ दृष्ट्वा च गौन्नयसुता ॥ सुतसामी स्वक

मृक्कावयामितियर्वस्वमृयजागम्म॥ विप्रोजिरगा ॥ सुतसोमदृष्टोनान्नस्वडयुग्रा ॥ स्वरूहासकान्कय ॥ गत्रमूर्खचन्डकनावग ॥

द्विजवाविहृस्मसमानाक्रमूदाकनाऽनुंवन॥ ॥ अथ नानाविमुय वाशिष्ठसत्व ॥ समाधृसस्य स्त्रियवचनपूर्व ॥ सनक्रुप्रातिसमादा ॥

सौदासस्याडाहायणपूर्वकानयि हावन्धनाचिम् ॥ यसाढ्ड सौदासन गैश्चनयातियुग्रेनन् गम्यमान ॥ स्वनाधृस्यपयथ्य यथे स्वकृत

सत्कानां स्मानाडेयुग्रान्सौदासकृक्षषुख्युनाधृसृयतिस्थापयामास॥ ॥ गदेर्वळजय ॥ समाधकृयथागपाय्यूयतग ॥ सत्संगमनं तिक्रयोयोथे॥

मकाश्चितिवद्धमस्तानद्ध्वानननुलब्धजवेश्ययारिंगारवतिदृय॥४॥ सचित्त॥४॥ क्रमेणलो॥ कायगायादिवदीनस्याः॥ इद्धायिसर्गालिमसी
श्रेवाणांवत्नाणवृन्दोत्तिवगायदानांतिविपूर्थ्यवा६ द्ध्यवसोगनाम्ह४७यातिनागंपवततयराव॥४॥ दीपाद्धणाद्विविकसत्त्व २००२२
तिर्गी४संक्षिप्यकॐकमभतीवक्षि॥ क्रमेणला तोध्विवनाकता॥डियकिदयवातिरावाकि॥ क४खैयोगेनवियोग
तिष्ठः४कोसमयदायानांवियक्तनंगंजगत्प्रवृ६ कोविगिवक्तायामप्रत्यवैक्षेवजनस्यदृष॥४॥ तिसगणयन्मसान्मा
सर्वगताद्यावरुद्धमाॐनमनसानमणाय्यक्षायियनवनाति॥रत्नषोयमरिघ्रसानिंष्ठ॥तोकाविग्रक्षविषक्षमानवृद्धि४क्रमेणखरवत्तमन २२२

उयाकुमवासाणमणयच्चदाहिंदुद्धसमुद्दगाढविषयसक्खवणस्स धम्मे वकणनामिभि । तत्युतियकतिरिवितुमणि ॥ येथुश्रयकादुमरिगम्मनाइ
जाणंकुणाउइतिकयावत्तगमेनायानकुलमयावणा ॥ यवुड्डासं [illegible] याकुरेमि ढ्ढामिरिणमात्मनः ॥ कुणाकणाथनेस्सइ वयानुगद
पढणि ॥ गच्छ बोप्पियणनय ॥ सणस्सणा [illegible] जादिल्ल नहिं वदं ॥ वसमुच्चा तिविद्ध ॥ गच्छीयायुदोमनिवाणितावधूतस्स कथयित
मता ॥ समावकम्म ॥ निवाणयिम्मवन्न यतं सनाजा ॥ मत्ताश्यानिम्भक्कसवायकन्ड ॥ उवावक स्सासरु मेवगाण, संयकेमसस्सान्माणिनि
यकार्मी ॥ त्वदेप्पियणन्माविनाणसद्ध ॥ केनायमि स्याकतिण ॥ कुणाके ॥ ठाकाश्स्यर्याकृत तावनानि, तवन्नु कस्यसवजेतानननाणि ॥ अथस

कालकार्य्यविरूलश्यनिग्रहकृणाविवर्जितः सुखी ॥ सम्मेककार्य्यश्यनिउत्कमानसऽसः ऽखनूधर्म्मकस्यगांसिवाञ्छेति ॥ धर्म्मश्चन

ऊतितनूतिभतींवलेवा. धर्म्मसूखायमरुणेनावि रतिसिद्धिः॥ धर्म्मात्मनूश्वमेकमर्वकेनातिमृत्यूनेष्ठक्लिइगेकिरायंतिन २००२१

गस्यधर्म्मं ॥ क्रियाविभेमश्चेयथायवेरिता ऽङुरस्ययायसंवीरितनलङेतः॥ तथावियाकोय्यङुरस्यगेतिदिवल

स्यधर्म्मस्यसरताऽयागति॥ यनुनीय समहात्मायिगनेकृणायनक्ष्यपित्राम्णवदयास्यनाञ्चलक्षीनयाश्नाः

ऽयेवकान॥ गग्रवश्चनाव्यवुमोतानिवीत्वघनश्चवब्रतिष्ठयलोकब्रह्मलोकमधित्रोवाहाति॥ गदवेसम्यिग्मतसानाजलेक्षी २२१

श्रुतमान

त्रयिलेयामाग्नेन्नावल्ला नीतिसम्यग्यनिर्वयश्च कार्यामनन्तसंस्थायल्ल्यपेवाद्यभवमाग्गु यमनन्तसंस्थासीवेगमयत्वगीति तथामन

नूस्मृतिवल्ल्ह. श्रुतिव्यताकथायामथ्यूपन्तेयम वमानित्याश्चसर्वेसंस्कारा ॰॰ति। तथासवेताकथनातियेतिसंस्थाया॰ एवम

नाश्चभास्विकसंस्कृतामिति॥ एवमप्राणोयमसस यश्चवत॰के॰॰थवमोपिवाद्यं॥ एवंवनेषम्भिसूर्वपतियकुनेगस॰॰थव

मयायन्तेयं॥ ॰॰॰॥ स्थागस्जानाकैदा त्रिभाक्रमश॥ ॰॰॰॥ श्रीकुद्वादशकायतभागविलक्षद्भयत॥ रयायाय

कटस्मावाद्यो सिद्धयशागस्त्रानाकैं॥ १ ॥ सतिरूलकथंक्रमास्यान्तोसता यपकापिनमापिसाधवालारामिवदहमनक्ता॥ ताध्यमान

कीर्त्तकृत्तकदृष्ण॥ कोश्मातिरसंयुक्तेन समयकालीरूत्तयागकालंकृतकृतगध्यविहलेवपृथ्वी॥ अथवाभिसबद्भूतमर्यमानिप्रत्यरिजानी॥ ६
रूतितिविगर्कतन॥ समतिगमिनेम पिवेख्या ६ प्रयुक्तमृकाशीर्द॥ संविरागमयावत॥ पथ्यमस्मकुण्डायाविक्रमाजितवृक ६
यन अधिसम्मानामिक्षामिवध्यण॥ यून्यमाधृतं॥ ह्ययाणाभिवादमधूनमप्यूथ्यमानाथसिंह॥ कोप्यमासर्थयनिवयादनविकाय्य २००३३
वृक्ष॥ कायाग्निदीपकयातिविगलयादिधेकन्ति ६ वाविवक्तिनयाद्रख्यावाभिसंवमीरूमाणेडवाव॥ मागाव ह्यश्रदयाकेर्थनया ६
वदखादविसृजनगामगमन॥ प्रविश्यगस्यमवक्रीयक्षीवमितगद्वद॥ मायिन॥ यानिलयेवेमासादयसियाङ्क्या॥ जीवितेननखिन्नोसिपर्न ६ ३३३

लार्कादिद्दृशः ॥ ।अथ बोधिसत्त्वस्तत्र स्थत्र कारुनक्रमः । प्रथास्थान वव सास्मपजात्रीतस्कन्ग व वतनः ॥ सम्भूयया गयारि लभवयामि
त्ययेतः ॥ यरुपिवि हृन्नलगाद्दृनेनमूतार्थ प्रिवकाम ॥ ४ अथ च्यगमावनदेवगातसागमस कौनमसक्कौनमसेद्दमाताव्येयप्रयामाङ ४
ह्ययावासमृत्यय्यर्गमसासत्त्वमवाव ॥ यङिवन कस्मादिदमसत्कानमस्यद्दनात्मनः ॥ कृतायकानः ॥ समनसैविमानायागकवयिमः
प्येयासकायेः ॥ कृतेघ्नताम्भनेवमूयप्रिगान ॥ गा कत्वमस्यतयनेवदनाहिधाद्विसृनजैनर्युमथिरुवेल भातिनाचि। दस्थानकन ४
स्तमे पिवामेघमस्यहृङकनम्य्यगाकिमयमसयवलावलयः ॥ ।अथ बोधिसत्त्वस्य थययसकानाविप्रकृतः ॥ धात्साध्कमाताप्यिनयावनद्दव ४

यसूनरिभूमेदानगर्भं ॥ पुण्यानिप्राणिवसूनात्रितामिनं ४ सेडंत्वरीमृक्षार्का नस्थकस्युपअसीम्हि गामिवप्रासन्ननशोकमोमीनीन्दुसप्त
मवाप्यवलोनिहयलत्वयायिर्णइन्द्ररं दीर्घं ६ पर्यदिसाकिवीननजसेवृक्षानेमात्यरं ॥ दिव्यकीमनकुम्हघातजघनासं
ज्ञातितायांसृसे ४ स्वन्नेर्याकनकोडेकणना नजा ४ सोनस्यवर्त्यासदो ॥ नानामोकडलनय ४ स्वयययनिसप्रपलिसोभनतने ६ २००३
डीमाबीतजरोरवपेगमनावृक्षायगुखास ने ॥ स्ववनतिसृगतस्याः ६ वर्नेननन्द ॥ हरडे स्वघनभृशिनरक्षानष्टवीर्यात्रि
काद्ये ४ ानिरूपमरूतदाउ ४ सेन्त्यम्हजा ४ सुनमनजगणैः नीवाघेकारीतिनार्द ॥ नाजायवक्रवक्रीविनमानित्रिमतेषकं ६

× ती २ २३५

ह्लादग

कुमांवृषवाहे ४ कर्पूनाङ्गादवाद्भिर्गामदस्तनाहिरूषसीनान्वितायी । जाकर्थांदहसोर्यंप्रवनमनुरवं कामितीरिस्फत्यागमनकुंकुमाद ६

जितगुनतिथर्यमानाविर्ध्वं सत्ताय ना । गजाप्यया ६ … दानिरच्येनलाहृ ४ खुयान्किसाहस्रणानेमहीगम ४ रुन्द्रोतयग्रानाविविम्बया

या. पृच्छाययच्छ वमिदंददर्कि ॥ यामेत्रासहस ६ … वकेम्भन … जंनिजि व्यवृच्छासने. कृणाराीनगिरीषणभत्मविषयामनव्वु ६

नान्द्वैमान । स्कृथ्यानीनाविसप्रसच्छ स्तगणाम्य … वद्वावर्ण नेवर्धप्रदेदानिवृच्छविमयकवत्यमोरथाछर्यं ॥ छगंयस्कु वि

नायकस्याणिनासिंथ्रात्तून्नवच्छ कोते ४ पृष्ये ४ पूर्णभनानयाविकगानंदातवसोयच्छ जिन नानारहदस्गण्धदामनाविनन्यामी गवविग्रीकनी

जें ४ सुनालयं याति महर्द्धिकासो । कुत्रध्वजालीकृतगात्र जा रत्नं नैकमेरुप्रभागणैन सार्द्धं ॥ अउत्थाय ध्यासनमध्यसंस्थिता । गन्धर्वेना
गास्सैर्किन्नरादिभिः ४ संपूजितः कुत्रसदा रविरश्मिरसेन्द्रनारायण संकनादिभिः ४ ॥ यद्गमूर्देवास्समेरौ त्रिरत्नवनतनामितं दे
गाक्ष सिद्धिप्रलम्य गन्धर्वामेलुलाभूर्थादिभिः सुरगन्धतत्त्वक्षर छन्दकम्पा ४ । कैलासं सिद्धिविद्याधरनयवदन्तामान्त्या ॥ २००२८
यक्षवर्गाः नामसांगानरसीकुमरितमनसा वीतनागादिदाम्या ४ ॥ ६०८ ॥ ॐ ति श्री बोधिसत्त्वावदानेजातकमालायाः
हगवन्तप्रजाबल्लनयविंवेक्तौनामसमाप्तः ॥ ॐ नमो ॥ यधर्मासहतुप्रभवाहेतुन्तेषां तथागतोह्यवदत्तेषांच योनिरोध एवं

दन्तोपात्यानन्तरं सम्यग्विवन्ध्ययत्रविन्ध्यवासयगतमनीत कियरगवात्तिगम स्थिगमस्थिगाकलविंदनाव्यणआरिहयैकस्मिन्युद्दग्गसमुत्थादिगो ६
गोथेत्यामि गतस्मिनुयादिगंपुयकोविवकर्षेना॥ तिगनेनवतकेस्यवदनविक्कमणकार्ष्टुनियातयाप्तासे॥ सव्वत्थुकमोनिपृणो
पुवगत्यद्ध नगत्युयनादविपगत्यसम्बूनयइ ऊहनानतरियागसि द्धयामम थेयोजन्मभंगोतानुवद्धयो॥ उद्धयगत्यनसे ६ २००३२
रुवगस्यइ भखवक्खणतमेजानितागंभुवेवद्दसंपीणा सगत्याद्धनणाध्यमीव्वाण४ सगत्याद्धनणाकथासीगृना॥ धम्मेमनाधूमासको
नस्य॥ एसाथ्यमीरवींग्रसतीतिदृत्यवासहाप्पिइभद्धतयनस्यसञ्जन॥ उयोतितीग्रीगिविणाग्रेसम्यर्दं नयाखिलोखेषसुरसागतस्वपि॥ ६ ३३२

॰ इति समहासत्वकस्य तद्दृ ध्यवसनपगमयच्छ्री । हृदयस्कमामकृति सिंहप्रभितनन्दिम स्कनयप्रधर्ष्टजगमम ॥ ।अयस्सकदाचित्प्रविगतान्
विवाचिग्रयव्रणभगयव्र ४ यावित्रमान्किक्षि कद्वि धर्मतानजीतमनासाध्य कृदग्निप्रयानिगातगर स्कभवसिंहमविनहृतास्थदृविल
तनृलाघसीसमृयरजउरतीनड ष्ठियानृवाजिहृता वदत्ततरवनकणनार्थसन्ध्यभ्रवतासमातर्ष्वहृत्नेभघाविद्धदमिवददर्शना कृ
नायकानाथवि उतप्रसदृ.वकुंस्याक्षाविनसा रुनंतीः।विभ्रमनदस्याप्विहितस्यलङ्का.तकोतमीतखतमादिदृण॥ कार्य्या
नृत्ताघाकुतथाविगस्य. वकुस्थत्पजीविष्वनकेस्वान ।सयानृपघ्यवयिर्गइनानमानिमनकेणमयय्कतान्वतस्य॥ ।जिताततवारुमिवव्र

यामनाक्क्ष्यति ॥ एवं प्राप्तिसंख्यानबहुलाः सांगुल्यो नामतः तत्क्रियुलित्तिकाः तिसंख्याबर्ल्लवार्यः । तथागतमास्ताक्षवरडयकः
थत्यसवर्ल्लवा । नर्वराडापुकोपिनयस्कोति ॥ यमनगतानाम[illegible]तनिवलेतक्ष्यति ॥ -- ॥ इतिपातयत्रजागकवितुते ॥ २००२९
गोकमथी -- ॥ ० ॥ अथवावक्कगता यरागवर्णकहिकाध्ययथारागवान्बाधिसत्वाः ऐसीकृतगन्कारावियति ॥ गुत्त
वि श्रीउमिध्यामिवृदमैवादिपयगवनसंसान ॥ पंकमम्भाना सत्वावानावृषवृद्ध्य ॥ एवमेकेजगद्गुरुश्चा । रागवान्पुनरको
पान् । बाधिसत्वसमृतसर्वं जगत्कोध्ययपर्णकेन ॥ द्वाविंशतत्वहुनाथतारभीयान्यजंनाचितश्चा । स्तद्गणाप्तिताकस्मिन्नववेद्दुषि २२५

ग.

गमेमतु ॥ तस्मिन्युद्धे ... गन्धे ॥ कृतवतनयुने ॥ पालिजा गेन्द्रादि येते उऊज्ञा घादयसद्धे ॥ कुमुदित हृदयस्तुथवादित्रनादे ॥ घण्टुक कउय ६

णामे ॥ प्रवनमलियतद्धृ उवस्काटिरिस्के ॥ गी मानघा धाक्षिस्वाविविधेनुनानिभि ॥ पूजितो ॥ सोम हान्मा ॥ काग्यपावाव ॥

जुक्कि वक्षेव पूजाया ॥ हृगतस्यकथं रुलं ॥ बुद्धि गा ॥ क्षेमहावाङ्के सं... कापिमहामून ॥ रुगवानुवाच ॥ ॐ स्तुभिकाप्रव ६

न सोत्या विभ्रमतला गम ॥ यश्चन्द्रकुन्दकुमुदाल मकीर्तिराजः ॥ ॐ दुविजि यसगतं नलसारवालि ... ज्ञायय सुकरसे ॥ प्र ६

दिसिक्तिपूजा ॥ वैदूर्यवज्रमणिकृतुलवारेव क्राविरव्यातकीर्ति नातितायतनन्दनत्रा ॥ यद्भात्यलप्रवयउत्ये सुगम उगन्धा. दास्यक्ति ॥

ऊँ ॥ स्वनालयं याति महर्द्धिकासो । ... जातं कनगमञ्जकोरं स्वनेकमे ... गणानन सार्द्ध ॥ ... सनमध्यसंस्थिता, गन्धर्वना
गास्तैः किन्नरादिति ॥ संपूजित मञ्जुस दाराविं ... यो किसरेन्द्र नानायं सकनादि ति ॥ यसमुदेवास म ... रवनतनामिगं ६
ग्रामक सिद्धपुलाम्य, गन्धर्वामलुलागन्धर्व दिति ६ ... स्तगरुत वज्र ... क ॥ कैलासं सिद्धविद्याधरनृत्य वदनामानुष्या ६ २००३८
यक्षवर्गैः, नाग ... तरश्मीपुस्पैः ... मनसा ... वीत नागादि दाया ॥ ... ॥ इति श्री बोधिसत्वावदाने जातक मालायां ॥
... पूजा ... नयनिवे ... नाम समाप्त ॥ इति ॥ यथामीरसउपुरात्रावारस्तु ... गणा ... वदन्ति ... यानि ... सर्वं
श्री ८

नयाद्नाय्यानुज्ञापयामासयनानूवर्य्यां॥ ॐ तियपिवियास्यमानर्क्षेनमहासत्वेनतस्मिन्वनप्रदेशेसत्वकायश्चसावार्य्य ॐ ववन्धूमा
तिवसवेद्य ॐ वनाञ्चानिसुखमवर्द्धत॥ क याजनस्यापिवियात्यमानावृद्धिंयथासोगुणताजगाम॥ ससत्वकायापित
ध्येवतेनसंनजमाजगुनवृद्धिमाय॥ अथ कदाचित्समहासत्वःससानुकम्पयापावनाकवालि. समनुविवनेतीव्रवृदनारि २००३
रवाद्विवक्ष्यमानंदिग्धविद्धमिवान्यतमस्मिन्वत प्रदेशेनरेसम्यकेव्याकुलमलिनकंगन्सठंसिंहंदंदशे। समारोगम्यैवेतंक
रुणयापरिपाड्यमानःप्रपच्छ॥ किमिदंमगराजवार्ध्यवल्वकृष्यगनोनेन्द्रियव्यामि॥ द्वियथदर्प्याहितसोनदृब्धजवपुसंगदयवाम्भ २३७
२५२

सिद्धलेखनमथे

गमु । कर्णं ब्रयासास्यामिदं ध्यमल, ध्यात्वथषुणावानृजयाकयाचित् ॥ तद्बृहिवाद्यमयिवदिदं गयदं वाक्यामि शाव्यताकनामर्म्मास्क्रियामित्रगमा
वणाकिं कृतुसथसोरच्येयरत्वान्मूखीव ॥ सिंह ६ उवाच ॥ सोऽक्षयपठवनतमगुमजातमिंद्रमखोस्त्री । नृजयाख्या षेषुणावा । ६
दं दवांकिं कृतगतान्तानासविलगप्रगत्यामिव मीरटगइनामि ॥ तषकृनगक्रान्यरयवरुठेमूजानिरुम्या । तदषकालमूरुना यद
द्यदानीं जनातिगथमासखिनैकरक्षामि ॥ ६ । अथ वाधिसत्व रुपादविज्ञानवाधिविकोभत्याद्धनडमयार्यगढनाविल्कम्रु ६
नयमार्णकाष्ठमादाय गसिंहमूवाच ॥ यागणकिं क्रयासख्यकावत्समूखतिथादहीन । मगथाचकान ॥ । अथवाधिसत्वमकदस्यकाष्ठ ६

याः

गयाद्यांयुक्तिराङ्गाविदर्गयन्वाव॥ अतमतमननक्रमलनेघमाणोमाद्विश्रनाँ॥ आक्लेउद्रक्लि४ साधूनां. कपयानु॥इतिमयान ता१

मवैरुयंनोमावाग्र कायम्यकाविधि४॥ वक्र१ नासावगरुवि. यत्नवाक्लिकताँ यन४॥ कालिपथ्यपकानायीं स्यरुय४कानि१ २००३६

ध्यति॥ उयकणाउ४म्मेलि. यनगकृद्धलेत१ व्रयोगमायानितियमो. दिहावियघस४ प्रिया॥ कनँकद्धम्मे श्वव.क१

कृत्रानुगयश्यूनश॥ भुयपग्रकानायें. नरणाम्र शोदाननगद्धनं॥ उयकणँकितवंक्तितमपनस्कदयकानामिक्तियकनाति१

यथानन्नविजोश्वगुलो४सयेद्धा४ ...नानृज्जिनदवक्लिमरियातियघवं॥ नवक्लियइयकतमाउरे४येयानयाकूगगजुणकाकया १ २३९

४थार

ज्याः सर्वतमः ४ पुनन्त्यकारं वल्कम ४ समुद्धि यमपिरु मान्मनीयम ४॥ ॐ दृढव्रतमयकृत्यं प्रतिरातिः॥ यस्मिन्साधुपूर्वीर्णचिमित्रद
धर्मानतरयतः॥ श्रीनिष्कूनमसंलक्ष्मपद्याछ्वेदि स्फणः ४॥ । अथसादेवतानतस्तावितडसादितमता ६ साध्वितियतनकमति
युणस्यनृलस्त्रियमूवाच॥ सूतेजटीवल्कधो ६ नलभुसाहुवानृषिर्द्दं विदितायेगिर्ध्यानि ४॥ नवषमार्गहिमूतिवासिद्धयमु लो
नृपतास्विहरीवतामूर्ति ४॥ ॐ यरितक्षप्रति ६ पृथक्त्वेननगेवाकद्दक्षे॥ । गृह्दवंयात्साधुमानायिसाधुनो तं मायेयुवालिरु
मनः स्यासोदितिभृङ्गनप्रसंसायां वाद्यमवक्तालिकयायामयृयन्नयमवक्रमायुविवयान्नवेनवद्दरोरवतिः॥ तावप्रेवद्दसावद्दजनाग्नि

सामन्कारुितियाद्धिगेमनूत्नंप्राप्नातिरोमप्यर्न ॥ नीतालूनार्यं गहनित्तिनाद्यांवर्लू ५ रदनविनाळमवस्कुमाली ताकाळमायस्नन ६
यंपुदद्कियनंसैंद्यापूर्वाद्यारिमनखवनोम्बना ६ लि ॥ ॥ गेनाम्बकम्यसधनोधनाधनो ... वंतीयगीय्खुससानसागे ६
नाशसंगकामन्डागयसोम्यनिखता, दिवोकसी ध्नूरायष्प्रुमस्वन्४॥ अासप्रसन्नाष्ककृतामनोनमा ़ उवाभक्तुद्या ६ २००३१
शवदाविलान्मान्। यनितुमस्वन्दनन्रूलू,ष्मारि गंपयानाविरुंकिह्मंविलायस४॥ समायस्थिस्मयरूत्वेतावता, वन्दा
नकास्कुप्रसहायाप्रेगगणाभ४। पयोमनोस्नातमगुल४ प्ररंजनामेन४प्रमार्दवगगोायदोम्हो ॥ गनाहगवान्काध्यपंप्तेनाह ना ॥ ६ २३१

साधु साधु महाभाग ॥ अनन्तपूज्यं लजनास्वक्तु जनानुज्ञाम युत्यंनमस्काः ॥ धनाः ॥ सदागस्थगणेनयुक्त. स्पिात्यिनछस्कनिता ॥ ५ ॥ ययाः
दाः ॥ उगाक्रुधर्म्ममहीमहीन्द्रा. लाकांस्कुनतेः उयपूजितेहानु. वेह्यमूकामानि लूषितागिः नकः ॥ युर्वय अदनायगा॰ ॥ ६ ॥
संछअवयत्या ०यनीद्धर्म्म ०रुणाभिय ॥ युत्यपः महार्णूवम्या ॥ जनानुज्ञाम युत्यंनवास्य. छियाछियेथे फविया गरावं ॥ ७ ॥
ष्णानयाधर्म्मनसुतरफ ०यन्गत ॥ ०ाचित नाउदगीणन यभाविनवस्कू जैधर्म्म नाउ ॥ सुंयुडूसं मानननसोभवंत ॥ मा ८
गच्छसीम्य उयर्नममेदंअवीविहाहाग्यनादियुक्तं रवुजवगानाद्विनदवलार्क वुध्वं न्डरडादिगणाक्रमांकिना ॥ गनाहियानिर्वननतावि ९

यवर्द्धमानावर्जितमतिः साधुसाध्विसंगितिः प्रकम्प्यागुलितावित्रस्यमपि संवाध्यन्तकन्द्रियमूवाच ॥ कुतस्किनर्ध्वमीदृगस्थितिर्गुल्म ६
ष्वसोवानयविकंनः कुतः ॥ कुर्यापिवृद्धाविः ६ दमास्थितावयुक्तापावनं कायिरवांकपस्यति ॥ ६ यन्नमत्रित्रुलस्यत ६
क्वस्वइष्ठवानन्यच्छद वधूयसमादिश्यवा स्यनक्ताविभानं नग्रीवान्कर्द्दव्य ॥ तदवैसानिरुकथ्यरुसास्यान्नसतीय ६ २००३०
यकाविलमपिसाधवाताराम्रिववर्द्धमन्यन्त इति ॥ कालिकथयाविवाद्यमर्वैतिर्यग्नतानांवाक्षसत्वानाय्यतिसंख्यो ६
नसोष्टवं दृष्ट्वा । कोनाममर्त्येषुवर्द्धन प्रव्रजितव्रतिश्लाघावानाद्विकलः ॥ आहितनश्चतिजवमापिवाची ॥ तथागतवर्ल्गुसलकय २३०

धर्म्मश्च वर्ण्णयति ॥ २०१ ॥ इति महिषजानकं तयाचि ङाकर्मी ॥ २०२ ॥ महिष ४ सम्प्रजानि नष्ट्याति वैं मन्त्रसिद्धिं ४ पञ्चाङ्गवविधि
हृष्टकोः द्वावन्याविति निश्चितं ॥ ० ॥ प्रास्ता क्षमानाविसाधुन्नालयापप्रवालिडमनख्यासाहं ॥ तयथानुपूर्व्यतः वाधि
सर्व्वकिलान्यगमस्मिन्वनप्रदक्षे नानाविविध नागरुविनवित्रेपग्र ४ गागपशावद्धवना ॥ केश्लाभयाविवयाह्वतदवस्त्रोपि
नेप्राणिहिंसाकर्त्तुर्भागतपत्रवृक्षिमनूवर्के हे ॥ बालेश्चवालेसमसीनरक्षाणायप्ख्याभिवासेम्मारिश्च्वहदे ४ रुलेघ
नानानसमगन्धवर्ण्णे ४ सन्काषवृक्षैर्विरनाक्केकान ॥ धर्म्मेयनरायश्चप्रवदन्यथा हं. माक्षोन्यथा शाकिसमूढ्व श्चर्य निवानयश्चाविधि

नवनम्२ नवदम्२ ×५२